AAINAE QIYAAMAT (HINDI)

सरदारे नौ जवानाने जन्नत इमामे हुसैन की शहादत से मुतअ़ल्लिक़ मो'तबर रिवायात पर मुश्तमिल तह़रीर

आईनए क़ियामत

मुसन्निफ़ : ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عليه رحمة الرحمن (बरादरे आ'ला ह़ज़रत عليه الرحمة)

फ़ज़ाइले इमामे ह़सन व हुसैन

दस मुहर्रमुल ह़राम और ख़ानदाने रिसालत

अल्लाह के ह़क़ीक़ी दोस्त

शहादत के बा'द के वाक़िआत

मैदाने करबला में आमद

आ़शूरा के फ़ज़ाइल

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)
SC1286
المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی) شعبۂ تخریج

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इल्म** पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह किताब "आईनए क़ियामत" उर्दू ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह **ग़लती़** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं। . . .

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इल्म में तरक़्क़ी

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

مقام اشاعت رضوی کتب خانہ بہاری پور بریلی

ولا تقولوا لمن یقتل فی سبیل اللہ اموات بل احیاء

کشتگان خنجر تسلیم را
ہر زماں از غیب جان دیگرست

الحمد للہ کہ کتاب مستطاب سال نایاب شرح حالات شہادت

مسمّٰی بہ

آئینۂ قیامت

تالیف

حضرت عالی جناب صاحب شان حضرت مولانا مولوی حاجی محمد حسن رضا خاں صاحب
قادری برکاتی ابو الحسینی رحمۃ اللہ علیہ

رضوی کتب خانہ بریلی شریف

الرسول پریس بریلی میں طبع ہوئی

بار سوم

۵۰۰ جلد

قیمت فی جلد ۴

www.dawateislami.net

सरदारे नौ जवानाने जन्नत इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की
शहादत से मुतअ़ल्लिक़ मुस्तनद रिवायात पर मुश्तमिल तह़क़ीक़

आईनए क़ियामत

-: मोअल्लिफ़ :-
उस्ताज़े ज़मन, शहनशाहे सुख़न
ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن)

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या, शो'बए तख़रीज
(दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना, देहली-6

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब : आईनए क़ियामत

मुसन्निफ़ : हज़रते अ़ल्लामा मौलाना हसन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن

पेशकश : शो'बए तख़रीज (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

सिने त़बाअ़त : जमादिल आख़िर, सि. 1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6

–: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :–

- अजमेर : मक्तबतुल मदीना, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- बरेली : मक्तबतुल मदीना, दरगाह आ'ला ह़ज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994
- गुलबर्गा : मक्तबतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503
- बनारस : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101
- कानपुर : मक्तबतुल मदीना, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द ग़ुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045
- कलकत्ता : मक्तबतुल मदीना, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- नागपुर : मक्तबतुल मदीना, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महारास्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- अनंतनाग : मक्तबतुल मदीना, मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438
- सुरत : मक्तबतुल मदीना, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861
- इन्दोर : मक्तबतुल मदीना, शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692
- बेंग्लोर : मक्तबतुल मदीना, शॉप नं. 13, जामिआ़ ह़ज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : 08088264783
- हुबली : मक्तबतुल मदीना, ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब (तख़रीज शुदा) छापने की इजाज़त नहीं है

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

"सुल्ताने करबला को हमारा सलाम हो" के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "23 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

"अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"

(الجامع الصغير،الحديث ٩٣٢٦،ص ٥٥٧، دارالكتب العلمية بيروت)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल इमकान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा ﴾14﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यतें हुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़ कम चार सफ़ह़ात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा। ﴾15﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा

www.dawateislami.net

﴾16﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी । (مؤطا امام مالك ، ج٢،ص٤٠٧، رقم: ١٧٣١،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताबें ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾17﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मसलन 8) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾18﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा ﴾19﴿ इस रिवायत "عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ" (या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है) (حلية الاولياء،حديث: ١٠٧٥٠،ج٧،ص٣٣٥،دارالكتب العلمية بيروت) पर अ़मल करते हुवे इस किताब में दिये गए बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की बरकतें लूटूंगा । ﴾20﴿ शुहदाए करबला की याद में इन के ईसाले सवाब के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा । ﴾21﴿ मुसीबत के वक़्त इन के मसाइब याद कर के सब्र करने की कोशिश करूंगा । ﴾22﴿ हर साल माहे मुह़र्रमुल ह़राम से क़ब्ल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾23﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्त़लअ़ करूंगा । *(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)*

अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه *का सुन्नतों भरा बयान* ***"निय्यत का फल"*** *और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा कार्ड और पेम्फ़लेट* ***मक्तबतुल मदीना*** *की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाएं ।*

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा

मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते **इल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के **मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और **इस्लामी बहनें** इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

इस मादरे गेती पर बिला शुबा करोड़हा इन्सानों ने जनम लिया और बिल आख़िर मौत ने उन्हें अपनी आग़ोश में ले कर उन का नामो निशान तक मिटा दिया लेकिन जिन्हों ने दीने इस्लाम की बक़ा व सर बुलन्दी के लिये अपनी जान, माल और औलाद की क़ुरबानियां दीं और जिन के दिली जज़्बात इस्लाम के नाम पर मर मिटने के लिये हमा वक़्त पुख़्ता थे, तारीख़ के औराक़ पर उन के तज़किरे सुन्हरी हुरूफ़ से कन्दा हैं। इन अकाबिरीन के कारनामों का जब जब ज़िक्र किया जाता है, दिलों पर रिक़्क़त की कैफ़िय्यत तारी हो जाती है। इन के पुरसोज़ वाक़िआ़त आज भी हमारे लिये मशअ़ले राह हैं, बिल ख़ुसूस वाक़िअ़ए करबला निहायत रिक़्क़त व सोज़ के साथ जज़्बए ईसार व क़ुरबानी को उभारता है। ह़ज़रते इमामे **हुसैन** और इन के रुफ़क़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने जिस शान के साथ अपनी जानों के नज़राने पेश किये, तारीख़ इस की मिसाल बयान करने से क़ासिर है। इन नुफ़ूसे क़ुदसिया ने अपना सब कुछ लुटा दिया लेकिन बात़िल के आगे सर न झुकाया। जान देना गवारा फ़रमा लिया, लेकिन शौकते इस्लाम पर ह़र्फ़ न आने दिया।

घर लुटाना जान देना कोई तुझ से सीख जाए
जाने आ़लम हो फ़िदा ऐ ख़ानदाने अह्ले बैत

माहे मुह़र्रमुल ह़राम जब भी तशरीफ़ लाता है करबला वालों की याद ताज़ा हो जाती है, शुहदाए करबला बिल ख़ुसूस नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, इमामे आ़ली मक़ाम, ह़ज़रते इमामे **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में ईसाले सवाब के लिये जगह ब जगह मह़ाफ़िल मुनअ़क़िद की जाती हैं जिन में मुक़र्ररीन व वाइ़ज़ीन अपने अपने अन्दाज़ में करबला के पुरसोज़ वाक़िआ़त बयान कर के न सिर्फ़ इन से अ़क़ीदत व मह़ब्बत का इज़हार करते बल्कि इन के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये हर क़िस्म की क़ुरबानी पेश करने का जज़्बा बेदार करते हैं। गो कि इस वाक़िए़ से मुतअ़ल्लिक़ मुह़र्ररीन व उ़लमाए किराम ने मुतअ़द्दिद किताबें लिखीं, जिन में से बा'ज़ ने बहुत पज़ीराई ह़ासिल की लेकिन "**आईनए क़ियामत**" की बात ही अलग है। येह

www.dawateislami.net

शहनशाहे सुख़न, उस्ताज़े ज़मन, बरादरे आ'ला ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان की तस्नीफ़ है और इस के बारे में शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अह्ले सुन्नत, इमामुल फ़ुक़हा, ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द अबुल बरकात मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "अल फ़तावल मुस्त़फ़विय्या" में तह़रीर फ़रमाते हैं : "**आईनए क़ियामत**" तस्नीफ़ ह़ज़रते उम्मी जनाब उस्ताज़े ज़मन मौलाना ह़सन रज़ा ख़ां साह़िब **ह़सन** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه , येह किताब आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّهٗ की देखी और मजालिस में कितनी ही बार सुनी हुई है।

(अल फ़तावल मुस्त़फ़विय्या, स. 463)

ख़ुद आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, मौलाना इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان से जब ज़िक्रे शहादत से मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो आप ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साह़िब की किताब[1] जो अ़रबी में है वोह या ह़सन मियां मर्ह़ूम मेरे भाई की किताब "**आईनए क़ियामत**" में सह़ीह़ रिवायात हैं इन्हें सुनना चाहिये, बाक़ी ग़लत़ रिवायात के पढ़ने से न पढ़ना और न सुनना बहुत बेहतर है।"

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए दुवुम, स. 293)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने अकाबिरीन व बुज़ुर्गाने अह्ले सुन्नत की मायए नाज़ कुतुब को ह़त्तल मक़्दूर जदीद अन्दाज़ में शाएअ़ करने का अ़ज़्म किया है लिहाज़ा वाक़िअ़ए करबला से मुतअ़ल्लिक़ बरादरे आ'ला ह़ज़रत, उस्ताज़े ज़मन, शहनशाहे सुख़न ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان की तस्नीफ़ "**आईनए क़ियामत**" दौरे जदीद के तक़ाज़ों को मद्दे नज़र रखते हुवे पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है। इस किताब पर "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" के काम की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

❀ "**आईनए क़ियामत**" के मुतअ़द्दिद नुस्ख़े पेशे नज़र रखे गए जिन में रज़वी कुतुब ख़ाना बरेली शरीफ़ से तब्अ़ शुदा एक क़दीम नुस्ख़ा भी शामिल है।

❀ इसी से कॉम्पयूटर कम्पोज़िंग का तक़ाबुल किया गया, नीज़ दीगर नुस्ख़ों से

---

1 .....سِرُّالشَّهادَتين.علمية

www.dawateislami.net

भी इस्तिफ़ादा किया गया है। ❁ मुसन्निफ़ के क़ाइम कर्दा उ़नवानात के इ़लावा मज़्मून की मुनासिबत से मज़ीद उ़नवानात (Headings) भी इल्मिय्या की त़रफ़ से क़ाइम किये गए हैं और इन्हें बैनल क़ौसैन (इस अन्दाज़ में ﴿मैदाने करबला में आमद﴾) लिखा गया है ❁ अह़ादीस व रिवायात वग़ैरहा की ह़त्तल मक़्दूर तख़्रीज की गई है ❁ **कन्ज़ुल ईमान** का ज़ौक़ रखने वालों के लिये ह़वाशी में आयात के तराजुम कन्ज़ुल ईमान से दिये गए हैं ❁ मुसन्निफ़ और इल्मिय्या के ह़वाशी में तफ़रीक़ के लिये इल्मिय्या के ह़वाशी के आगे "इल्मिय्या" लिखा गया है ❁ तख़्रीज के दौरान जिन मक़ामात में इख़्तिलाफ़ था किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे उन की तस्ह़ीह़ कर दी गई है, तफ़्सील इस त़रह़ है मतन में सुलैमान बिन मर्वजुज़ ख़ुज़ाई था, इस के बजाए सुलैमान बिन सरद ख़ुज़ाई लिखा है इसी त़रह़ मन्जुज़ के बजाए बलन्जर, कोहे ज़ौह़शम के बजाए कोहे ज़ौह़सम, त़राह़ बिन अ़दी के बजाए त़रमाह़ बिन अ़दी, अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल मह़ली बिन ख़िराम के बजाए अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल मह़ल बिन ह़िज़ाम, ज़ियादा का ग़ुलाम यसार के बजाए ज़ियाद का ग़ुलाम यसार, मशरूक़ बिन वाइल के बजाए मसरूक़ बिन वाइल और मुज़ाह़िम बिन ह़रस के बजाए मुज़ाह़िम बिन ह़रीस लिखा है। ❁ इस के इ़लावा आख़िरी सफ़ह़ात में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायाए नाज़ तालीफ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल से फ़ज़ाइले आ़शूरा भी शामिल किये गए हैं और ❁ किताब के आख़िर में माख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त भी दी गई है।

इन तमाम उमूर को मुमकिन बनाने के लिये "मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या" के मदनी उ़लमा دامت فیوضهم ने बड़ी मेह़नत व लगन से काम किया और ह़त्तल मक़्दूर इस किताब को अह़सन अन्दाज़ में पेश करने की सअ़्य की। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें जज़ाए जज़ील अ़त़ा फ़रमाए और इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلَّم

शो'बए तख़्रीज, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

नम्बर	उ़नवानात	सफ़ह़ा
1	ह़बीबे ख़ुदा ﷺ की बारगाह में फ़ज़्ले शहादत की ह़ाज़िरी	12
2	फ़ज़ाइले इमामे ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)	12
3	मह़बूबाने बारगाहे इलाही और क़ानूने क़ुदरत	14
4	सरकार ﷺ और ख़ानदाने सरकार का फ़क़्रे इख़्तियारी	15
5	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ीक़ी दोस्त	19
6	यज़ीदे पलीद की तख़्त नशीनी और क़ियामत के सामान	20
7	इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत और भाई को नसीह़त	20
8	इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मदीना छूटता है	24
9	कूफ़ियों की शरारत और इमामे मुस्लिम की शहादत	30
10	इमामे जन्नत मक़ाम मक्के से जाते हैं	33
11	इब्ने ज़ियाद की जानिब से नाकाबन्दी	38
12	ज़ुहैर बिन क़ैन बजली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मइ़य्यत	39
13	इमामे मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत की ख़बर	40
14	ह़ज़रते हुर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आमद	41
15	कूफ़ियों की बे वफ़ाई और क़ैस बिन मसहर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत की ख़बर	43
16	इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़्वाब देखना	45
17	इब्ने ज़ियाद की त़रफ़ से इमामे अ़र्श मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर सख़्ती का हुक्म	45

www.dawateislami.net

18	नवासए रसूल की शब में रवानगी	46
19	मैदाने करबला में आमद	47
20	इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर पानी बन्द होना	48
21	इब्ने सा'द का इब्ने ज़ियाद को ख़त और शिमर का इमाम के ख़िलाफ़ वरग़लाना	48
22	शिमर की इब्ने सा'द के पास आमद	50
23	ख़्वाब में जद्दे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी	50
24	लश्करे इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ से मुक़ाबले की तय्यारी	51
25	अब क़ियामत क़ाइम होती है	53
26	दस मुह़र्रमुल ह़राम और ख़ानदाने रिसालत पर ज़ुल्मो सितम का आग़ाज़	57
27	ह़ज़रते ह़ुर की इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मा'ज़िरत	60
28	मुक़ाबले का बा क़ाइदा आग़ाज़	62
29	चमने रिसालत ﷺ के महकते फूलों की शहादत की इब्तिदा	71
30	इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद होते हैं	73
31	तारीख़ का पिछला ह़िस्सा और इमामे तिश्नाकाम की शहादत	78
32	जिगर गोशए रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पुरसोज़ शहादत	79
33	शहादत के बा'द के वाक़िआ़त	85
34	सरे अन्वर की करामात	87
35	क़त्ले हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ में शरीक बदबख़्तों का इ़ब्रत नाक अन्जाम	90
36	फ़ज़ाइले आ़शूरा	93
37	माख़ज़ो मराजेअ़	99

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الحمد للّٰہ رب العالمین و الصلوۃ و السلام علی سیدنا

و مولانا محمد و الہ و اصحابہ اجمعین .

हबीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में फ़ज़्ले शहादत की हाज़िरी

हमारे हुज़ूरे पुरनूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने तमाम कमालात व सिफ़ात का मजमए ख़ल्क़ फ़रमाया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के से औसाफ़े हमीदा व ख़साइले पसन्दीदा किसी मलक, किसी बशर, किसी रसूल, किसी पैग़म्बर में मुमकिन नहीं। ब नज़रे ज़ाहिर, सिर्फ़ फ़ज़्ले शहादत, इस बारगाहे अ़र्श इश्तिबाह की हाज़िरी से महरूम रहा। इस की निस्बत उ़लमाए किराम का ख़याल है और कितना नफ़ीस ख़याल है कि जंगे उहुद शरीफ़ में इस रूहे मुसव्वर, जाने मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दन्दाने मुबारक शहीद होना सब शहीदों की शहादत से अफ़्ज़ल है। और जिस वक़्त हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़े ख़ातिर शहज़ादों के साथ ख़याल में आता है तो इस अम्र के इज़हार में कुछ भी तअम्मुल नहीं रहता कि इन ह़ज़रात की शहादत हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही की शहादत है और इन्हों ने नियाबतन इस शरफ़ को सर सब्ज़ी व सुर्ख़रूई अ़ता फ़रमाई।

फ़ज़ाइले इमामे ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

एक बार ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो कर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के शानए मुबारक पर

www.dawateislami.net

सुवार हो गए, एक साहिब ने अ़र्ज़ की : साहिबज़ादे ! आप की सुवारी कैसी अच्छी सुवारी है ! हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "और सुवार कैसा अच्छा सुवार है ! ! !"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمدالحسن...الخ، الحدیث ۳۸۰۹، ج۵، ص۴۳۲)

हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सजदे में थे कि इमामे ह़सन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पुश्त मुबारक से लिपट गए, हुज़ूर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सजदे को तूल दिया कि सर उठाने से कहीं गिर न जाएं।

(مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالك، الحدیث ۳۴۱۵، ج۳، ص۲۱)

इमामे **ह़सन** और इमामे **हुसैन** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) की निस्बत इरशाद होता है : "हमारे येह दोनों बेटे जवानाने जन्नत के सरदार हैं।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن...الخ، الحدیث ۳۷۹۳، ج۵، ص۴۲۶)

और फ़रमाया जाता है : "इन का दोस्त हमारा दोस्त, इन का दुश्मन हमारा दुश्मन है।"

(سنن ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل الحسن والحسین، الحدیث ۱۴۳، ج۱، ص۹۶)

और फ़रमाते हैं : "येह दोनों अ़र्श की तल्वारें हैं।" और फ़रमाते हैं : "**हुसैन** मुझ से है और मैं **हुसैन** से हूं, **अल्लाह** दोस्त रखे उसे जो **हुसैन** को दोस्त रखे, **हुसैन** सिब्त़ है इस्बात़ से।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن...الخ، الحدیث ۳۸۰۰، ج۵، ص۴۲۹)

www.dawateislami.net

एक रोज़ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दहने ज़ानू पर इमामे **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और बाएं पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साहिब ज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बैठे थे, ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि "इन दोनों को ख़ुदा हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के पास न रखेगा, एक को इख़्तियार फ़रमा लीजिये। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इमामे **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जुदाई गवारा न फ़रमाई, तीन दिन के बा'द ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इन्तिक़ाल हो गया। इस वाक़िए़ के बा'द जब ह़ाज़िर होते, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बोसे लेते और फ़रमाते : مَرْحَبًا بِمَنْ فَدَیْتُہٗ بِابْنِیْ ऐसे को मरह़बा जिस पर मैं ने अपना बेटा क़ुरबान किया। (تاریخ بغداد، ج۲، ص۲۰۰، بلفظ "فدیت من")

और फ़रमाते हैं : येह दोनों मेरे बेटे और मेरी बेटी के बेटे हैं, इलाही मैं इन को दोस्त रखता हूं, तू भी इन्हें दोस्त रख और उसे दोस्त रख जो इन्हें दोस्त रखे।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن...الخ، الحدیث ۳۷۹۴، ج۵، ص۴۲۷)

बतूल ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाते : "मेरे दोनों बेटों को लाओ, फिर दोनों को सूंघते और सीनए अन्वर से लगा लेते।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن...الخ، الحدیث ۳۷۹۷، ج۵، ص۴۲۸)

﴿महबूबाने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ और क़ानूने क़ुदरत﴾

जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के येह इरशाद और शहज़ादों की ऐसी पासदारियां, नाज़ बरदारियां याद आती हैं और वाक़िआ़ते शहादत पर नज़र जाती है तो ह़सरत की आंखों से आंसू नहीं, लहू की बूंदें टपकती हैं और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी का आ़लम आंखों के सामने छा जाता है, येह मुक़द्दस सूरतें ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

की दोस्त हैं और **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُهٗ की आ़दते करीमा है कि दुन्यावी ज़िन्दगी में अपने दोस्तों को बलाओं में घिरा रखता है।

एक साहिब ने अ़र्ज़ की, कि "मैं हुज़ूर से मह़ब्बत रखता हूं।" फ़रमाया : "फ़क़्र के लिये मुस्तइ़द हो जा।" अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** तआ़ला को दोस्त रखता हूं।" इरशाद हुवा : "बला के लिये आमादा हो।" और फ़रमाते हैं : "सख़्त तरीन बला अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर है, फिर जो बेहतर हैं फिर जो बेहतर हैं।"

(المسند للامام أحمد،الحديث:٢٧١٤٧،ج١٠،ص٣٠٦)

ع نزدیکاں رابیش بود حیرانی [1]

जिन के रुतबे हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है

सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और ख़ानदाने सरकार का फ़क़्रे इख़्तियारी

हमारे हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने अशरफ़ तरीन मख़्लूक़ बनाया और मह़बूबिय्यते ख़ास का ख़लअ़ते फ़ाख़िरा अ़त़ा फ़रमाया। इसी वज्ह से दुन्या की जो बलाएं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उठाईं और जो मुसीबतें आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरदाश्त कीं किसी से इन का तह़म्मुल मुमकिन नहीं। **अल्लाह अल्लाह** ! मह़बूबिय्यत की तो वोह अदाएं कि फ़रमाया जाता है : "لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الدُّنْيَا" ऐ मह़बूब[2] मैं अगर तुम को न पैदा करता तो दुन्या ही को न बनाता। (فردوس الأخبار،الحديث:٨٠٩٥،ج٢،ص٤٥٨"بلفظ ماخلقت")

---

1 .... मुक़र्रबीन को ह़ैरानी ज़ियादा होती हैं।

2 .... दीगर अह़ादीसे क़ुदसी में अपने ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में यूं फ़रमाया जा रहा है :

(الف) لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاك या'नी मेरे नबी ! अगर तुझे पैदा करना मक़्सूद न होता तो मैं आस्मानों को भी पैदा न करता।

(ب) لَوْلَاكَ لَمَا اَظْهَرْتُ الرُّبُوْبِيَّة प्यारे ! अगर तू न होता तो मैं अपने रब होने को ज़ाहिर न करता।

www.dawateislami.net

उ़लुवे मर्तबत की वोह कैफ़िय्यतें कि अपने ख़ज़ाने की कुन्जियां दे कर मुख़्तारे कुल बना दिया कि जो चाहो करो, सियाह व सपेद का तुम्हें इख़्तियार है।

ऐसे बादशाह जिन के मुक़द्दस सर पर दोनों आ़लम की हुकूमत का चमकता ताज रखा गया, ऐसे रिफ़्अ़त पनाह, जिन के मुबारक पाउं के नीचे तख़्ते इलाही बिछाया गया, शाही लंगर के फ़क़ीर, सलातीने आ़लम, सुल्तानी बाड़े के मोह़ताज, शाहाने मुअ़ज़्ज़म, दुन्या की ने'मतें बांटने वाले, ज़माने की दौलतें देने वाले, भिकारियों की झोलियां भरें, मुंह मांगी मुरादें पूरी करें। अब काशानए अक़्दस और दौलत सराए मुक़द्दस की त़रफ़ निगाह जाती है **अल्लाह** तआ़ला की शान नज़र आती है। ऐसे जलीलुल क़द्र बादशाह जिन की क़ाहिर हुकूमत मशरिक़ मग़रिब को घेर चुकी और जिन का डंका हफ़्त आस्मान व तमाम रूए ज़मीन में बज रहा है, इन के बर्गुज़ीदा घर में आसाइश की कोई चीज़ नहीं, आराम के अस्बाब तो दर कनार, ख़ुश्क खजूरें और जव के बे छने आटे की रोटी भी तमाम उ़म्र पेट भर कर न खाई।

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम (ह़दाइक़े बख़्शिश)

शाही लिबास देखिये तो सतरह सतरह पैवन्द लगे हैं वोह भी एक कपड़े के नहीं। दो दो महीने सुल्तानी बावर्ची ख़ाने से धुवां बुलन्द नहीं होता। दुन्यवी ऐ़शो इ़शरत की तो येह कैफ़िय्यत है, दीनी वजाहत देखिये तो इस कमली वाले ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शौकत और इस सादगी पसन्द की वजाहत से दोनों आ़लम गूंज रहे है :

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

www.dawateislami.net

यहां येह अम्र भी बयान कर देने के क़ाबिल है कि येह तक्लीफ़ें, येह मुसीबतें महज़ अपनी ख़ुशी से उठाई गईं, इस में मजबूरी को हरगिज़ दख़्ल न था।

एक बार आप के बिही ख़्वाह और रिज़ाजू दोस्त جَلَّ جَلَالُهٗ ने पयाम भेजा कि "तुम कहो तो मक्का के दो पहाड़ों को (जिन्हें अख़्शबैन कहते हैं) सोने का बना दूं कि वोह तुम्हारे साथ रहें। अ़र्ज़ की : "येह चाहता हूं कि एक दिन दे कि शुक्र बजा लाऊं, एक दिन भूका रख कि सब्र करूं।"

(سنن الترمذی، کتاب الزهد، باب ماجاء فی الکفاف...الخ، ج٤، ص١٥٥، الحدیث: ٢٣٥٤)

मुसलमानो ! अल्लाह तआ़ला ने हमारे हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को नफ़्से मुत़मइन्ना अ़त़ा फ़रमाया है। अगर आप ऐ़शो इ़शरत में बसर फ़रमाते और आसाइश व राह़त महबूब रखते, तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का परवर दगार आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी पर ख़ुश होने वाला दुन्या में जन्नतों को उतार कर रख देता, और येह सामाने ऐ़श आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बर्गुज़ीदा और पाक नफ़्स में हरगिज़ तग़य्युर पैदा न कर सकता, ऐसी ह़ालत में येह बला पसन्दी और मुसीबत दोस्ती इसी बुन्याद पर हो सकती है कि आप रह़मतुल्लिल आ़लमीन ठहरे, दुन्या की हर चीज़ के ह़क़ में रह़मत हो कर आए, अगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ऐ़शो इ़शरत में मश्ग़ूल रहते तो "तक्लीफ़ व मुसीबत" जिन से आ़क़िबत में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ग़ुलामों को भी सरोकार न होगा, बरकात से महरूम रह जातीं।

एक बार हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुसलमानों को कनीज़ें और ग़ुलाम तक़्सीम फ़रमा रहे थे, मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ह़ज़रते बतूल ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से कहा : "जाओ तुम भी अपने

www.dawateislami.net

लिये कोई कनीज़ ले आओ।" हाज़िर हुई और हाथ दिखा कर अ़र्ज़ करने लगीं कि "चक्कियां पीसते पीसते हाथों में छाले पड़ गए हैं एक कनीज़ मुझे भी इनायत हो।" इरशाद हुवा : "ऐ फ़ातिमा ! मैं तुझे ऐसी चीज़ बताता हूं जो कनीज़ व गुलाम से ज़ियादा काम दे, तू रात को सोते वक़्त سُبْحٰنَ اللّٰه 33 बार, اَلْحَمْدُ لِلّٰه 33 बार, اَللّٰهُ اَكْبَرُ 34 बार पढ़ कर सो रहा कर।"

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما جاء فی التسبیح ...الخ، الحدیث ۳۴۱۹، ج۵، ص۲۶۰)

एक बार हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के काशाने में तशरीफ़ ले गए, दरवाज़े तक रौनक़ अफ़रोज़ हुवे थे कि फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हाथों में चांदी की एक चूड़ी मुलाहज़ा फ़रमाई, वापस तशरीफ़ ले आए, हज़रते बतूल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने वोह चूड़ियां हाज़िर कर दीं कि इन्हें तसद्दुक़ कर दीजिये। मसाकीन को अ़ता फ़रमा दी गईं और दो चूड़ियां आज की मर्हमत हुईं और इरशाद हुवा : "फ़ातिमा ! दुन्या, मुहम्मद और आले मुहम्मद के लाइक़ नहीं।" صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हाज़िर आए, देखा कि खजूर की चटाई पर आराम फ़रमा रहे हैं, और इस नाज़ुक जिस्म और नाज़नीन बदन पर बोरे के निशान बन गए हैं, येह हालत देख कर बे इख़्तियार रोने लगे और अ़र्ज़ की, कि "या रसूलल्लाह ! क़ैसरो किसरा, ख़ुदा के दुश्मन, नाज़ो ने'मत में बसर करें और ख़ुदा का महबूब तक्लीफ़ व मुसीबत में ? इरशाद हुवा : "क्या तू इस अम्र पर राज़ी नहीं कि उन्हें दुन्या के ऐ़श मिलें और तू उ़क़्बा की ख़ूबियों से बहरावर हो ?

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب تبتغی مرضاة...الخ، الحدیث ۴۹۱۳، ج۳، ص۳۶۰)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़क़ीक़ी दोस्त

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ से ब ज़रीअ़ए इल्हाम फ़रमाया गया : "ऐ सरी ! मैं ने मख़्लूक़ पैदा फ़रमा कर इस से पूछा : "क्या तुम मुझ को दोस्त रखते हो ?" सब ने बिल इत्तिफ़ाक़ अ़र्ज़ की, कि "तेरे सिवा और कौन है जिसे हम दोस्त रखेंगे ?" फिर मैं ने दुन्या बनाई, नौ ह़िस्से इस की त़रफ़ हो गए, एक ह़िस्से ने कहा : "हम इस की ख़ात़िर तुझ से जुदाई न करेंगे।" फिर आख़िरत ख़ल्क़ फ़रमाई, इस एक ह़िस्से से नौ ह़िस्से इस के ख़रीदार हो गए, बाक़ियों ने अ़र्ज़ की : "हम दुन्या के साइल न आख़िरत पर माइल, हम तो तेरे चाहने वाले हैं।" फिर बलाएं पेश कीं। इन से भी नौ ह़िस्से घबरा कर परेशान हो गए, एक ह़िस्से ने अ़र्ज़ की : "तू ज़मीन और आस्मान के चौदह त़बक़ को बला का एक त़ौक़ बना कर हमारे गले में डाल दे, मगर हम तेरी त़रफ़ से मुंह फेरने वाले नहीं।" इन की निस्बत इरशाद हुवा "اُولٰٓئِكَ اَوْلِيَائِى حَقًّا" येह मेरे सच्चे दोस्त हैं।"

अब अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْھُم की बला पसन्दी ह़ैरत की आंखों से देखने के क़ाबिल है। ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से बला व ने'मत के बारे में सुवाल हुवा, फ़रमाया : हमारे नज़्दीक दोनों बराबर हैं।

ع   انچہ از دوست می رسد نیکوست(1)

इमामे ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) को ख़बर हुई, इरशाद हुवा : "अल्लाह अबू ज़र (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ) पर रह़्म करे मगर हम अहले बैत के नज़्दीक बला, ने'मत से अफ़्ज़ल है कि ने'मत में नफ़्स का भी ह़ज़ (حظ) है और बला मह़ज़ रिज़ाए दोस्त है।"

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

(1)....दोस्त से जो कुछ पहुंचे अच्छा होता है।

www.dawateislami.net

यज़ीद पलीद की तख़्त नशीनी और क़ियामत के सामान

हिजरत का साठवां साल और रजब का महीना कुछ ऐसा दिल दुखाने वाला सामान अपने साथ लाया, जिस का नज़ारा इस्लामी दुन्या की आंखों को नाचार उस त़रफ़ खींचता है, जहां कलेजा नोचने वाली आफ़तों, बेचैन कर देने वाली तक्लीफ़ों ने दीनदार दिलों के बे क़रार करने और ख़ुदा परस्त त़बीअ़तों को बेताब बनाने के लिये ह़सरत व बे कसी का सामान जम्अ़ किया है। यज़ीद पलीद का तख़्ते सल्त़नत को अपने नापाक क़दम से गन्दा करना उन ना क़ाबिले बरदाश्त मुसीबतों की तम्हीद है जिन को बयान करते कलेजा मुंह को आता और दिल एक ग़ैर मा'मूली बे क़रारी के साथ पहलू में फड़क जाता है। इस मरदूद ने अपनी हुकूमत की मज़बूत़ी, अपनी ज़लील इ़ज़्ज़त की तरक़्क़ी इस अम्र में मुन्ह़सिर समझी कि अह्ले बैते किराम के मुक़द्दस व बे गुनाह ख़ून से अपनी नापाक तल्वार रंगे । इस जहन्नमी की निय्यत बदलते ही ज़माने की हवा ने पलटे खाए और ज़ह्रीले झोंके आए कि जाविदां बहारों के पाक गिरेबां, बे ख़ज़ां फूलों, नौ शगुफ़्ता गुलों के ग़म में चाक हुवे, मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हरीभरी लहलहाती फुलवाड़ी के सुहाने नाज़ुक फूल मुरझा मुरझा कर त़राज़े दामने ख़ाक हुवे।

इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की शहादत और भाई को नसीह़त

इस ख़बीस का पहला ह़म्ला सय्यिदुना इमामे ह़सन पर चला। जा'दा (ज़ौजए इमामे आ़ली मक़ाम) को बहकाया कि अगर तू ज़ह्र दे कर इमाम का काम तमाम कर देगी तो मैं तुझ से निकाह़ कर लूंगा।

www.dawateislami.net

वोह शक़िया बादशाह-बेगम बनने के लालच में शाहाने जन्नत का साथ छोड़ कर, सल्तनते उ़क़्बा से मुंह मोड़ कर जहन्नम की राह पर हो ली। कई बार ज़हर दिया कुछ असर न हुवा, फिर तो जी खोल कर अपने पेट में जहन्नम के अंगारे भरे और इमामे जन्नत मक़ाम को सख़्त तेज़ ज़हर दिया यहां तक कि मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जिगर पारे के आ'ज़ाए बात़िनी पारा पारा हो कर निकलने लगे।

येह बेचैन करने वाली ख़बर सुन कर ह़ज़रते इमामे **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने प्यारे भाई के पास ह़ाज़िर हुवे। सिरहाने बैठ कर गुज़ारिश की : "ह़ज़रत को किस ने ज़हर दिया ?" फ़रमाया : "अगर वोह है जो मेरे ख़याल में है तो **अल्लाह** बड़ा बदला लेने वाला है, और अगर नहीं, तो मैं बे गुनाह से इ़वज़ नहीं चाहता।"

(حلیۃ الاولیاء،الحسن بن علی،الحدیث۱۴۳۸،ج۲،ص۴۷ ملخصاً)

एक रिवायत में है, फ़रमाया : "भाई ! लोग हम से येह उम्मीद रखते हैं कि रोज़े क़ियामत हम इन की शफ़ाअ़त फ़रमा कर काम आएं न येह कि इन के साथ ग़ज़ब और इन्तिक़ाम को काम में लाएं।"

वाह रे ह़िल्म कि अपना तो जिगर टुकड़े हो
फिर भी ईज़ाए सितमगर के रवादार नहीं

फिर जाने वाले इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आने वाले इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को यूं वसिय्यत फ़रमाई : "**हुसैन** ! देखो सफ़ीहाने कूफ़ा से डरते रहना, मबादा वोह तुम्हें बातों में ले कर बुलाएं और वक़्त पर छोड़ दें, फिर पछताओगे और बचाव का वक़्त गुज़र जाएगा।"

बेशक इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह वसिय्यत मोतियों में तोलने के क़ाबिल और दिल पर लिख लेने के लाइक़ थी, मगर उस होने वाले वाक़िए़ को कौन रोक सकता ? जिसे क़ुदरत ने मुद्दतों पहले से मश्हूर कर रखा था।

www.dawateislami.net

﴾इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत की ख़बर वाक़िअए करबला से पहले ही मश्हूर थी﴿

हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत शरीफ़ा से तीन सो बरस पेशतर येह शे'र एक पथ्थर पर लिखा मिला :

اَ تَرْجُوْ اُمَّۃٌ قَتَلَتْ حُسَیْنًا

شَفَاعَۃَ جَدِّہٖ یَوْمَ الْحِسَابِ

क्या **हुसैन** के क़ातिल येह भी उम्मीद रखते हैं कि रोज़े क़ियामत उस के नाना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाएं ?

येही शे'र अर्ज़े रूम के एक गिर्जा में लिखा पाया गया और लिखने वाला मा'लूम न हुवा । कई ह़दीसों में है : हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के काशाने में तशरीफ़ फ़रमा थे, एक फ़िरिश्ता कि पहले कभी ह़ाज़िर न हुवा था **अल्लाह** तबारक व तआ़ला से ह़ाज़िरी की इजाज़त ले कर आस्तान बोस हुवा, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इरशाद फ़रमाया : दरवाज़े की निगहबानी रखो, कोई आने न पाए, इतने में सय्यिदुना इमामे **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दरवाज़ा खोल कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे और कूद कर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद में जा बैठे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم प्यार फ़रमाने लगे, फ़िरिश्ते ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर इन्हें चाहते हैं ? फ़रमाया : हां । अ़र्ज़ की : "वोह वक़्त क़रीब आता है कि हुज़ूर की उम्मत इन्हें शहीद करेगी और हुज़ूर चाहे तो वोह ज़मीन हुज़ूर को दिखा दूं जहां येह शहीद किये जाएंगे ।

www.dawateislami.net

फिर सुर्ख़ मिट्टी और एक रिवायत में है रैत, एक में है कंकरियां, हाज़िर कीं। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सूंघ कर फ़रमाया : "رِيْحُ كَرْبٍ وَّبَلَاء" बे चैनी और बला की बू आती है, फिर उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को वोह मिट्टी अ़ता हुई और इरशाद हुवा : "जब येह ख़ून हो जाए तो जानना कि **हुसैन** शहीद हुवा।" उन्हों ने वोह मिट्टी एक शीशी में रख छोड़ी। उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं कहा करती जिस दिन येह मिट्टी ख़ून हो जाएगी कैसी सख़्ती का दिन होगा !"

(المعجم الکبیر،الحدیث ۲۸۱۷،۲۸۱۸،۲۸۱۹،ج۳،ص۱۰۸)

अमीरुल मोमिनीन मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم सिफ़्फ़ीन को जाते हुवे ज़मीने करबला पर गुज़रे, नाम पूछा। लोगों ने कहा : "करबला !" यहां तक रोए कि ज़मीन आंसूओं से तर हो गई फिर फ़रमाया : मैं ख़िदमते अक़्दस हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में हाज़िर हुवा। हुज़ूर को रोता पाया, सबब पूछा। फ़रमाया : "अभी जिब्रील कह गए हैं कि मेरा बेटा **हुसैन** फ़ुरात के किनारे करबला में क़त्ल किया जाएगा, फिर जिब्रील ने वहां की मिट्टी मुझे सूंघाई मुझ से ज़ब्त न हो सका और आंखें बह निकली।"

एक रिवायत में है : मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم उस मक़ाम से गुज़रे जहां अब इमामे मज़्लूम की क़ब्र मुबारक है, फ़रमाया : यहां उन की सुवारियां बिठाई जाएंगी, यहां उन के कजावे रखे जाएंगे, और यहां उन के ख़ून गिरेंगे। आले मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कुछ नौ जवान इस मैदान में क़त्ल होंगे जिन पर ज़मीनो आस्मां रोएंगे।

(دلائل النبوۃ لابی نعیم الاصبھانی،ج۲،ص۱۴۷)

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

www.dawateislami.net

इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मदीना छूट रहा है

इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का काम तमाम कर के जब यज़ीद पलीद ने अपने नाशाद दिल को ख़ुश कर लिया, अब इस शक़ी को इमामे **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ याद आए, मदीने के सूबादार वलीद को ख़त़ लिखा कि

हुसैन और अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर और अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) से बैअ़त के लिये कहे और मोहलत न दे। इब्ने उ़मर एक मस्जिद में बैठने वाले आदमी हैं और इब्ने ज़ुबैर जब तक मौक़अ़ न पाएंगे ख़ामोश रहेंगे, हां **हुसैन** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से बैअ़त लेनी सब से ज़ियादा ज़रूरी है कि येह शेर और शेर का बेटा मौक़अ़ का इन्तिज़ार न करेगा।

सूबादार ने ख़त़ पढ़ कर पयामी भेजा, इमाम ने फ़रमाया : "चलो आते हैं।" फिर अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर से फ़रमाया : "दरबार का वक़्त नहीं, बे वक़्त बुलाने से मा'लूम होता है कि सरदार ने वफ़ात पाई, हमें इस लिये बुलाया जाता है कि मौत की ख़बर मश्हूर होने से पहले यज़ीद की बैअ़त हम से ली जाए।" इब्ने ज़ुबैर ने अ़र्ज़ की : "मेरा भी येही ख़याल है ऐसी ह़ालत में आप की क्या राए है?" फ़रमाया : "मैं अपने जवान जम्अ़ कर के जाता हूं, साथियों को दरवाज़े पर बिठा कर उस के पास जाऊंगा।" इब्ने ज़ुबैर ने कहा : "मुझे उस की जानिब से अन्देशा है।" फ़रमाया : "वोह मेरा कुछ नहीं कर सकता।" फिर अपने अस्ह़ाब के साथ तशरीफ़ ले गए, हमराहियों को हिदायत की : "जब मैं बुलाऊं या मेरी आवाज़ बुलन्द होते सुनो, अन्दर चले आना और जब तक मैं वापस न आऊं कहीं हिल कर न जाना।" येह फ़रमा कर अन्दर तशरीफ़ ले गए, वलीद के पास मरवान को बैठा पाया, سلام علیك कर के तशरीफ़ रखी, वलीद ने

www.dawateislami.net

ख़त पढ़ कर सुनाया वोही मज़मून पाया जो हुज़ूर के ख़याल शरीफ़ में आया था। बैअ़त का ह़ाल सुन कर इरशाद हुवा : "मुझ जैसे छुप कर बैअ़त नहीं करते, सब को जम्अ़ करो, बैअ़त लो, फिर हम से कहो" वलीद ने ब नज़रे आ़फ़िय्यत पसन्दी अ़र्ज़ की : "बेहतर ! तशरीफ़ ले जाइये।" मरवान बोला : "अगर इस वक़्त इन्हें छोड़ देगा और बैअ़त न लेगा तो जब तक बहुत सी जानों का ख़ून न हो जाए ऐसा वक़्त हाथ न आएगा, अभी रोक ले बैअ़त कर लें तो ख़ैर वरना गर्दन मार दे।" येह सुन कर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "इब्नुज़्ज़ुरक़ा ! तू या वोह, क्या मुझे क़त्ल कर सकता है ? ख़ुदा की क़सम ! तू ने झूट कहा और पाजीपन की बात की।" येह फ़रमा कर वापस तशरीफ़ लाए।

मरवान ने वलीद से कहा : "ख़ुदा की क़सम ! अब ऐसा मौक़अ़ न मिलेगा।" वलीद बोला : "मुझे पसन्द नहीं की बैअ़त न करने पर **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़त्ल करूं, मुझे तमाम जहां के मिल्क व माल के बदले में भी **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़त्ल मन्ज़ूर नहीं, मेरे नज़दीक **हुसैन** के ख़ून का जिस शख़्स से मुत़ालबा होगा वोह क़ियामत के दिन ख़ुदाए क़ह्हार के सामने हल्की तोल वाला है।" मरवान ने मुनाफ़िक़ाना त़ौर पर कह दिया : "तू ने ठीक कहा।" (الکامل فی التاریخ،ذکر بیعت یزید،ج۳،ص۳۷۷ملخصاً)

दोबारा आदमी आया, फ़रमाया : "सुब्ह़ होने दो।" और क़स्द फ़रमा लिया की रात में मक्के के इरादे से मअ़ अह्लो इ़याल सफ़र फ़रमाया जाएगा।

येह रात इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने जद्दे करीम (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के रौज़ए मुनव्वरा में गुज़ारी कि आख़िर तो फ़िराक़ की ठहरती है, चलते वक़्त तो अपने जद्दे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

की मुक़द्दस गोद से लिपट लें फिर ख़ुदा जाने ज़िन्दगी में ऐसा वक़्त मिले या न मिले। इमाम आराम में थे कि ख़्वाब देखा, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं और इमाम को कलेजे से लगा कर फ़रमाते हैं : "**हुसैन** ! वोह वक़्त क़रीब आता है कि तुम प्यासे शहीद किये जाओ और जन्नत में शहीदों के बड़े दरजे हैं।" येह देख कर आंख खुल गई, उठे और रौज़ए मुक़द्दस के सामने रुख़्सत होने को हाज़िर हुवे।

मुसलमानो ! ह़याते दुन्यावी में इमाम की येह हाज़िरी पिछली हाज़िरी है, सलातो सलाम अ़र्ज़ करने के बा'द सर झुका कर खड़े हो गए हैं, ग़मे फ़िराक़ कलेजे में चुटकियां ले रहा है, आंखों से लगातार आंसू जारी हैं, रिक़्क़त के जोश ने जिस्मे मुबारक में रअ़शा पैदा कर दिया है, बे क़रारियों ने महशर बरपा कर रखा है, दिल कहता है सर जाए, मगर यहां से क़दम न उठाइये, सुब्ह़ के खटके का तक़ाज़ा है जल्द तशरीफ़ ले जाइये, दो क़दम जाते हैं और फिर पलट आते हैं। हुब्बे वत़न क़दमों पर लौटती है कि कहां जाते हो ? ग़ुर्बत दामन खींचती है क्यूं देर लगाते हो ? शौक़ की तमन्ना है कि उ़म्र भर न जाएं, मजबूरियों का तक़ाज़ा है दम भर न ठहरने पाएं।

शा'बान की चौथी रात के तीन पहर गुज़र चुके हैं और पिछले के नर्म नर्म झोंके सोने वालों को थपक थपक कर सुला रहे हैं, सितारों के सुन्हरे रंग में कुछ कुछ सपेदी ज़ाहिर हो चली है, अंधेरी रात की तारीकी अपना दामन समेटना चाहती है। तमाम शहर में सन्नाटा है, न किसी बोलने वाले की आवाज़ कान तक पहुंचती है, न किसी चलने वाले की पहचल सुनाई देती है, शहर भर के दरवाज़े बन्द हैं, हां ख़ानदाने नबुव्वत के मकानों में इस वक़्त जाग हो रही है और सामाने सफ़र दुरुस्त किया जा रहा है, ज़रूरत की चीज़ें बाहर निकाली गई हैं, सुवारियां दरवाज़ों पर तय्यार खड़ी हैं, महमिल (कजावे) कस गए हैं,

www.dawateislami.net

पर्दे का इन्तिज़ाम हो चुका है, उधर इमाम के बेटे, भाई, भतीजे, घरवाले सुवार हो रहे हैं इधर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिदे नबवी से बाहर तशरीफ़ लाए हैं। मेहराबों ने सर झुका कर तस्लीम की, मीनारों ने खड़े हो कर ता'ज़ीम दी क़ाफ़िला सालार के तशरीफ़ लाते ही नबीज़ादों का क़ाफ़िला रवाना हो गया है।

मदीने में अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से हज़रते सुग़रा (इमामे मज़्लूम की साहिबज़ादी) और जनाब मुहम्मद बिन हनफ़िय्या (मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बेटे) बाक़ी रह गए।

اَللّٰہُ اَکْبَر ! एक वोह दिन था कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने काफ़िरों की ईज़ादेही और तक्लीफ़ रसानी की वज्ह से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत फ़रमाई। मदीने वालों ने जब येह ख़बर सुनी, दिलों में मसर्रत आमेज़ उमंगों ने जोश मारा और आंखों में शादिये ईद का नक़्शा खिंच गया, आमद-आमद का इन्तिज़ार लोगों को आबादी से निकाल कर पहाड़ों पर ले जाता, मुन्तज़िर आंखें मक्के की राह को जहां तक उन की नज़र पहुंचती, टिकटिकी बांध कर तकतीं, और मुश्ताक़े दिल हर आने वाले को दूर से देख कर चौंक पड़ते, जब आफ़ताब गर्म हो जाता, घरों पर वापस आते। इसी कैफ़िय्यत में कई दिन गुज़र गए, एक दिन और रोज़ की त़रह़ वक़्त बे वक़्त हो गया था और इन्तिज़ार करने वाले ह़सरतों को समझाते, तमन्नाओं को तस्कीन देते पलट चुके थे, कि एक यहूदी ने बुलन्दी से आवाज़ दी : "ऐ राह देखने वालो ! पलटो ! तुम्हारा मक़्सूद बर आया और तुम्हारा मत़लब पूरा हुवा।" इस सदा के सुनते ही वोह आंखें जिन पर अभी ह़सरत आमेज़ ह़ैरत छा गई थी, अश्के शादी बरसा चलीं, वोह दिल जो मायूसी से मुरझा गए थे, ताज़गी के साथ

www.dawateislami.net

जोश मारने लगे, बे क़ाराना पेशवाई को बढ़े, परवाना वार क़ुरबान होते आबादी तक लाए, अब क्या था ख़ुशी की घड़ी आई, मुंह मांगी मुराद पाई, घर घर से नग़माते शादी की आवाज़ें बुलन्द हुईं, पर्दा नशीन लड़कियां दफ़ बजाती, ख़ुशी के लहजों में मुबारक बाद के गीत गाती निकल आईं :

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا[1] مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ

وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعِ

बनी नज्जार की लड़कियां गली कूचों में इस शे'र से इज़हारे मसर्रत करती हुई ज़ाहिर हुईं :

نَحْنُ جَوَارٍ مِنْ بَنِي النَّجَّارِ[2]

يَا حَبَّذَا مُحَمَّدٌ مِنْ جَارٍ

ग़रज़ मसर्रत का जोश था, दरो दीवार से ख़ुशी टपकी पड़ती थी, एक आज का दिन है कि इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मदीना छूटता है, मदीना ही नहीं बल्कि दुन्या की सब राहतें, तमाम आसाइशें, एक एक कर के रुख़्सत होती और ख़ैरबाद कहती हैं। येह सब दर कनार, नाज़ उठाने वाली मां का पड़ोस, मां जाए भाई का हमसाया और सब से बढ़ कर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर अपना बेटा क़ुरबान कर देने वाले जद्दे करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ والتسلیم का क़ुर्ब, क्या येह ऐसी चीज़ें हैं जिन की तरफ़ से आसानी के साथ आंखें फेर ली जाएं? आसानी से

---

1 ..... वदाअ़ के टीलों से हम पर एक चांद तुलूअ़ हुवा जब तक कोई बुलाने वाला अल्लाह तआ़ला की तरफ़ बुलाता रहेगा हम पर इस (चांद) का शुक्र वाजिब है।

2 ..... हम क़बीलए बनी नज्जार की बच्चियां हैं हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कैसे अच्छे पड़ोसी हैं!

कि हम हैं बच्चियां नज्जार के आ़ली घराने की ख़ुशी है आमेना के लाल के तशरीफ़ लाने की

www.dawateislami.net

आंखें फेरनी कैसी ! अगर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मदीना न छोड़ने पर क़त्ल कर दिया जाता तो क़त्ल हो जाना मन्ज़ूर फ़रमाते और मदीने से बाहर पाउं न निकालते, मगर इस मजबूरी का क्या इलाज कि इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नाक़ा को क़ज़ा, महार पकड़े उस मैदान की जानिब लिये जाती है, जहां क़िस्मत ने परदेसियों के क़त्ल होने, प्यासों के शहीद किये जाने का सामान जम्अ़ किया है। मदीने की ज़मीन जिस पर आप घुटनों चले, जिस ने आप की बचपन की बहारें देखीं, जिस पर आप की जवानी की करामतें ज़ाहिर हुईं, अपने सर पर ख़ाके ह़सरत डालती और परदेस जाने वाले के प्यारे प्यारे नाज़ुक पाउं से लिपट लिपट कर ज़बाने ह़ाल से अ़र्ज़ कर रही है कि "ऐ फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की गोद के सिंघार ! कलेजे की टेक ! ज़िन्दगी की बहार ! कहां का इरादा फ़रमा दिया ? वोह कौन सी सर ज़मीन है जिसे येह इ़ज़्ज़त वाले पाउं जो मेरी आंखों के तारे हैं, शरफ़ बख़्शने का क़स्द फ़रमाते हैं ?"

اے تماشا گاہ عالم روئے تو[1]
تو کجا بہر تماشا مے روی

जिस क़दर येह बरकत वाला क़ाफ़िला निगाह से दूर होता जाता है इसी क़दर पीछे रह जाने वाली पहाड़ियां और मस्जिदे नबवी के मीनारे सर उठा उठा कर देखने की ख़्वाहिश ज़ियादा ज़ाहिर करते हैं, यहां तक कि जाने वाले निगाहों से ग़ाइब हो गए और मदीने की आबादी पर ह़सरत भरा सन्नाटा छा गया।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

---

1 ..... या'नी आप नज़ारे के लिये कहां जा रहे हैं जब कि दुन्या की निगाहें आप के रूए अन्वर पर मुर्तकिज़ हैं।

www.dawateislami.net

रास्ते में अ़ब्दुल्लाह बिन मुती़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मिले, अ़र्ज़ की : "कहां का क़स्द फ़रमा दिया ?" फ़रमाया : "फ़िलहाल मक्का का।" अ़र्ज़ की : "कूफ़े का अ़ज़्म न फ़रमाया जाए, वोह बड़ा बे ढंगा शहर है, वहां आप के वालिदे माजिद शहीद हुवे, आप के भाई से दग़ा की गई, आप मक्के के सिवा कहीं का इरादा न फ़रमाएं, अगर आप शहीद हो जाएंगे तो ख़ुदा की क़सम ! हमारा ठिकाना न लगा रहेगा, हम सब ग़ुलाम बना लिये जाएंगे।" बिल आख़िर हुज़ूर मक्का पहुंच कर सातवीं ज़िल हिज्जा तक अम्नो अमान के साथ क़ियाम फ़रमा रहे। (الکامل فی التاریخ ، ذکر الخبر عن مراسلة الکوفیین...الخ،ج۳،ص۳۸۱)

कूफ़ियों की शरारत और इमामे मुस्लिम की शहादत

जब अह्ले कूफ़ा को यज़ीद ख़बीस की तख़्त नशीनी और इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बैअ़त त़लब किये जाने और इमाम के मदीना छोड़ कर मक्के तशरीफ़ ले आने की ख़बर पहुंची, फ़रेब देही व अ़य्यारी की पुरानी रविश याद आई। सुलैमान बिन सरद ख़ुज़ाई के मकान पर जम्अ़ हुवे, हम मश्वरा हो कर अ़र्ज़ी लिखी कि तशरीफ़ लाइये और हम को यज़ीद के ज़ुल्म से बचाइये। डेढ़ सो अ़र्ज़ियां जम्अ़ हो जाने पर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तह़रीर फ़रमाया कि "अपने मो'तमद चचाज़ाद भाई मुस्लिम बिन अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भेजता हूं, अगर येह तुम्हारा मुआ़मला ठीक देख कर इत्तिलाअ़ देंगे तो हम जल्द तशरीफ़ लाएंगे।"

ह़ज़रते मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कूफ़ा पहुंचे, इधर कूफ़ियों ने इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के हाथ पर बैअ़त करने और इमाम को मदद देने का वा'दा किया, बल्कि अठ्ठारह हज़ार दाख़िले बैअ़त भी हो गए और ह़ज़रते मुस्लिम को यहां तक बातों में ले कर इत़मीनान दिलाया कि उन्हों ने इमाम को तशरीफ़ लाने की निस्बत लिखा।

www.dawateislami.net

उधर यज़ीदे पलीद को कूफ़ियों ने ख़बर दी कि "**हुसैन** ने मुस्लिम को भेजा है । कूफ़ा के ह़ाकिम नो'मान बिन बशीर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) इन के साथ नर्मी का बरताव करते हैं, कूफ़ा का भला मन्ज़ूर है तो अपनी त़रह़ कोई ज़बरदस्त ज़ालिम भेज ।"

उस ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद को ह़ाकिम बना कर रवाना किया और कहा कि "मुस्लिम को शहीद करे या कूफ़ा से निकाल दे ।" जब येह मरदक कूफ़ा पहुंचा इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हमराह अठ्ठारह हज़ार की जमाअ़त पाई, अमीरों को धमकाने पर मुक़र्रर किया, किसी को धमकी दी, किसी को लालच से तोड़ा । यहां तक कि थोड़ी देर में इमाम मुस्लिम के पास सिर्फ़ तीस आदमी रह गए । मुस्लिम येह देख कर मस्जिद से बाहर निकले कि कहीं पनाह लें । जब दरवाज़े से बाहर आए, एक भी साथ न था । اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ । आख़िर एक घर में पनाह ली । इब्ने ज़ियाद ने येह ख़बर पा कर फ़ौज भेजी, जब इमाम मुस्लिम को आवाज़े पहुंचीं, तल्वार ले कर उठे और इन रूबाह मन्शों को मकान से बाहर निकाल दिया, कुछ देर बा'द फिर जम्अ़ हो कर आए, शेरे ख़ुदा का भतीजा फिर तेग़ बकफ़ उठा और आन की आन में इन शग़ालों को परेशान कर दिया, कई बार ऐसा ही हुवा जब इन ना मर्दों का इस अकेले मर्दे ख़ुदा पर कुछ बस न चला, मजबूर हो कर छतों पर चढ़ गए । पथ्थर और आग के लोके फैंकने शुरूअ़ किये, शेरे मज़्लूम का तन इन ज़ालिमों के पथ्थरों से ख़ूना ख़ून था, मगर वोह तेग़े बरकफ़ व कफ़ बरलब ह़म्ला फ़रमाता बाहर निकला, और राह में जो गुरौह खड़े थे उन पर इ़क़ाबे अ़ज़ाब की त़रह़ टूटा । जब येह ह़ालत देखी, इब्ने अशअ़स ने कहा कि "आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के लिये अमान है न आप क़त्ल किये जाएं न कोई गुस्ताख़ी हो ।" मुस्लिम मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थक कर दीवार से पीठ लगा कर बैठ

www.dawateislami.net

गए, ख़च्चर सुवारी के लिये हाज़िर हुवा। उस पर सुवार किये गए। एक ने तल्वार हुज़ूर के हाथ से ले ली, फ़रमाया : "येह पहला मक्र है।" इब्ने अशअ़स ने कहा : "कुछ ख़ौफ़ न कीजिये।" फ़रमाया : वोह अमान किधर गई। फिर रोने लगे। एक शख़्स बोला : तुम जैसा बहादुर और रोए। फ़रमाया : अपने लिये नहीं रोता हूं, रोना **हुसैन** और आले **हुसैन** का है कि वोह तुम्हारे इत़मीनान पर आते होंगे और उन्हें इस मक्र व बद अ़हदी की ख़बर नहीं।" फिर इब्ने अशअ़स से फ़रमाया : "मैं देखता हूं कि तुम मुझे पनाह देने से आ़जिज़ रहोगे और तुम्हारी अमान काम न देगी, अगर हो सके तो इतना करो कि अपने पास से कोई आदमी इमामे **हुसैन** के पास भेज कर मेरे हाल की इत्तिलाअ़ दे दो कि वोह वापस जाएं और कूफ़ियों के फ़रेब में न आएं।"

जब मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इब्ने ज़ियादे बद निहाद के पास लाए गए, इब्ने अशअ़स ने कहा : मैं इन्हें अमान दे चुका हूं। वोह ख़बीस बोला : "तुझे अमान देने से क्या तअ़ल्लुक़? हम ने तुझे इन के लाने को भेजा था न कि अमान देने को।" इब्ने अशअ़स चुप रहे, मुस्लिम इस शिद्दते मेहनत और ज़ख़्मों की कसरत में प्यासे थे। ठन्डे पानी का एक घड़ा देखा, फ़रमाया : "मुझे इस में से पिला दो।" इब्ने अ़म्र बाहिली बोला : "देखते हो कैसा ठन्डा है, तुम इस में से एक बूंद न चखने पाओगे, यहां तक कि مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ जहन्नम में आबे गर्म पियो।"

इमामे मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ओ संगदिल ! दुरुश्त ख़ू ! आबे ह़मीम व नारे जह़ीम का तू मुस्तह़िक़ है।" फिर अ़म्मारा बिन अ़क़्बा को तरस आया, ठन्डा पानी मंगा कर पेश किया, इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पीना चाहा, पियाला ख़ून से भर गया, तीन बार ऐसा ही हुवा, फ़रमाया : "ख़ुदा को ही मन्ज़ूर नहीं।"

www.dawateislami.net

जब इब्ने ज़ियादे बद निहाद के सामने गए, उसे सलाम न किया वोह भड़का और कहा : तुम ज़रूर क़त्ल किये जाओगे । फ़रमाया : "तू मुझे वसिय्यत कर लेने दे ।" उस ने इजाज़त दी । मुस्लिम मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अम्र बिन सा'द से फ़रमाया : "मुझ में तुझ में क़राबत है और मुझे तुझ से एक पोशीदा ह़ाजत है । उस संग दिल ने कहा : मैं सुनना नहीं चाहता । इब्ने ज़ियाद बोला : "सुन ले कि येह तेरे चचा की औलाद हैं ।" वोह अलग ले गया, फ़रमाया : "कूफ़ा में, मैं ने सात सो रूपिये क़र्ज़ लिये है वोह अदा कर देना और बा'दे क़त्ल मेरा जनाज़ा इब्ने ज़ियाद से ले कर दफ़्न करा देना और इमामे **हुसैन** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के पास किसी को भेज कर मन्अ़ करा भेजना ।" इब्ने सा'द ने इब्ने ज़ियाद से येह सब बातें बयान कर दीं । वोह बोला : "कभी ख़ियानत करने वाले को भी अमानत सिपुर्द की जाती है ? (या'नी इन्हों ने पोशीदा रखने को फ़रमाया, तू ने ज़ाहिर कर दीं) अपने माल का तुझे इख़्तियार है जो चाहे कर और **हुसैन** अगर हमारा क़स्द न करेंगे, हम उन का न करेंगे, वरना हम उन से बाज़ न रहेंगे, रहा मुस्लिम का जनाज़ा, इस में हम तेरी सिफ़ारिश सुनने वाले नहीं ।" फिर हुक्म पा कर जल्लाद ज़ालिम उन्हें बालाए क़स्र ले गया, इमाम मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बराबर तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार में मश्ग़ूल थे यहां तक कि शहीद किये गए और इन का सर मुबारक यज़ीद के पास भेजा गया ।

(الکامل فی التاریخ،دعوۃ اھل الکوفۃ...الخ،ج۳،ص۳۹۵۔۳۹۷)

इमामे जन्नत मक़ाम मक्का से जाते हैं

पाई न तेग़े इ़श्क़ से हम ने कहीं पनाह
क़ुर्बे ह़रम में भी तो हैं क़ुरबानियों में हम

www.dawateislami.net

सि. 60 हि. का पिछला महीना है और ह़ज का ज़माना, दुन्या के दूर दराज़ हिस्सों से लाखों मुसलमान वत़न छोड़ कर अ़ज़ीज़ों से मुंह मोड़ कर अपने रब جَلَّ جَلَالُهٗ के मुक़द्दस और बर्गुज़ीदा घर की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने ह़ाज़िर आए हैं, दिलों में फ़रह़त ने एक जोश पैदा कर दिया है, और सीनों में सुरूर लहरें ले रहा है कि येही एक रात बीच में है। सुब्ह़ नवीं तारीख़ है और महीनों की मेह़नत वुसूल होने, मुद्दतों के अरमान निकलने का मुबारक दिन है। मुसलमान ख़ानए का'बा के गिर्द फिर फिर कर निसार हो रहे हैं, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में हर वक़्त की चहल पहल ने दिन रोज़े ईद और रात को शबे बराअत का आईना बना दिया है। का'बा का दिलकश बनाव, कुछ ऐसी दिल आवेज़ अदाओं का सामान अपने साथ लिये हुवे है कि लाखों के जमघट में जिसे देखिये शौक़ भरी निगाहों से इसी की त़रफ़ देख रहा है। मा'लूम होता है कि सियाह पर्दे की चिलमन से किसी मह़बूब दिल नवाज़ की प्यारी प्यारी **तजल्लियां** छन छन कर निकल रही हैं, जिन की होशरुबा तासीरों, दिलकश कैफ़िय्यतों ने येह मजलिस आराइयां की हैं। आ़शिक़ाने दिलदादह फ़ुरक़त की मुसीबतें, जुदाई की तकलीफ़ें झेल कर जब ख़ुश क़िस्मती से अपने प्यारे मा'शूक़ के आस्ताने पर ह़ाज़िरी का मौक़अ़ पाते हैं, अदब व शौक़ की उलझन, मसर्रत आमेज़ बे क़रारी की ख़ुश आइन्द तसवीर उन की आंखों के सामने खींच देती है और वोह अपनी चमकती हुई तक़दीर पर त़रह़ त़रह़ से नाज़ करते और बे इख़्तियार कह उठते हैं :

मक़ामे वज्द है ऐ दिल कि कूए यार में आए बड़े दरबार में पहुंचे, बड़ी सरकार में आए

ग़रज़ आज का येह धूमधामी जल्सा जो एक ग़रज़े मुश्तरक के साथ अपने मह़बूब के दरे दौलत पर ह़ाज़िर है, अपनी भरपूर कामयाबी पर इन्तिहा से ज़ियादा मसर्रत ज़ाहिर कर रहा है। मगर इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुक़द्दस चेहरे से मा'लूम होता है कि येह किसी ख़ास वज्ह से इस मज्मअ़ में शरीक नहीं रह सकते या इन

www.dawateislami.net

के सामने से किसी ने पर्दा उठा कर कुछ ऐसा आ़लम दिखा दिया है कि इन की मुक़द्दस निगाह को इस मुबारक मन्ज़र की त़रफ़ देखने और इधर मुतवज्जेह होने की फ़ुरसत ही नहीं। और अगर किसी वक़्त हा़जियों के जमाव की त़रफ़ ह़सरत से देखते और ह़ज्जे नफ़्ल के फ़ौत होने पर इज़्हारे अफ़सोस भी करते हैं तो तक़दीर ज़बाने ह़ाल से कह उठती है कि "**हुसैन** ! तुम ग़मगीन न हो अगर इस साल ह़ज न करने का अफ़सोस है तो मैं ने तुम्हारे लिये ह़ज्जे अक्बर का सामान मुहय्या किया है और कमरे शौक़ पर दामने हिम्मत का मुबारक एह़राम चुस्त बांधो, अगर ह़ाजियों की सअ्य के लिये मक्का का एक नाला मुक़र्रर किया गया है तो तुम्हारे लिये मक्के से करबला तक वसीअ़ मैदान मौजूद है। ह़ाजी अगर ज़मज़म का पानी पियें तो तुम्हें तीन दिन प्यासा रख कर शरबते दीदार पिलाया जाएगा कि पियो तो ख़ूब सैराब हो कर पियो, ह़ाजी बक़र ईद की दसवीं को मक्का में जानवरों की क़ुरबानियां करेंगे, तो तुम मुह़र्रम की दसवीं को करबला के मैदान में अपनी गोद के पालों को ख़ाको ख़ून में तड़पता देखोगे, ह़ाजियों ने मक्का की राह में माल सर्फ़ किया है, तुम करबला के मैदान में अपनी जान और उम्र भर की कमाई लुटा दोगे, ह़ाजियों के लिये मक्का में ताजिरों ने बाज़ार खोला है, तुम फ़ुरात के किनारे दोस्त की ख़ातिर अपनी दुकानें खोलोगे। यहां ताजिर माल फ़रोख़्त करते हैं, वहां तुम जानें बेचोगे, यहां ह़ाजी ख़रीदो फ़रोख़्त को आते हैं, तुम्हारी दुकानों पर तुम्हारा दोस्त जलवा फ़रमाएगा, जो पहले ही इरशाद कर चुका है :

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰی مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَؕ (1)

*बेशक **अल्लाह** ने मुसलमानों की जानें और माल जन्नत के बदले में मौल ले लिये हैं।* (2)

---

1 ...... القرآن الحكيم ، سورة التوبة : ١١١

2 .... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक **अल्लाह** ने मुसलमानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है।* **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

ग़रज़ इन कैफ़ियतों ने कुछ ऐसा अज़ ख़ुद रफ़्ता बना दिया है कि इमामे आ़ली मक़ाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने बक़र ईद की आठवीं तारीख़ कूफ़े का क़स्द फ़रमा लिया, जब येह ख़बर मश्हूर हुई तो उ़मर बिन अ़ब्दुर्रह़मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने इस इरादे का ख़िलाफ़ किया और जाने से मानेअ़ आए, फ़रमाया : "जो होनी है, हो कर रहेगी।" अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने निहायत आ़जिज़ी से रोकना चाहा और अ़र्ज़ की : "कुछ दिनों तअम्मुल फ़रमाइये और इन्तिज़ार कीजिये, अगर कूफ़ी इब्ने ज़ियाद को क़त्ल कर दें और दुश्मनों को निकाल बाहर करें तो जानिये कि नेक निय्यती से बुलाते हैं और अगर वोह इन पर क़ाबिज़ और दुश्मन मौजूद हैं हरगिज़ वोह हुज़ूर को भलाई की त़रफ़ नहीं बुलाते हैं, मैं अन्देशा करता हूं कि येह बुलाने वाले ही मुक़ाबिल आएंगे।" फ़रमाया : "मैं इस्तिख़ारा करूंगा।" अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फिर आए और कहा : "भाई सब्र करना चाहता हूं मगर सब्र नहीं आता, मुझे इस रवानगी में आप के शहीद होने का अन्देशा है, इराक़ी बद अ़ह्द हैं, उन्हों ने आप के बाप को शहीद किया, आप के भाई का साथ न दिया, आप अह्ले अ़रब के सरदार हैं। अ़रब ही में क़ियाम रखिये या इराक़ियों को लिखिये के वोह इब्ने ज़ियाद को निकाल दें अगर ऐसा हो जाए तशरीफ़ ले जाइये और अगर तशरीफ़ ही ले जाना है तो यमन का क़स्द फ़रमाइये कि वहां क़ल्ए़ हैं घाटियां है, वोह मुल्क वसीअ़ ज़मीन रखता है। फ़रमाया : "भाई ! ख़ुदा की क़सम, मैं आप को नासेह़े मुशफ़िक़ जानता हूं, मगर मैं तो इरादए मुसम्मम कर चुका।" अ़र्ज़ की : "तो बीबियों और बच्चों को तो साथ न ले जाइये।" येह भी मन्ज़ूर न हुवा।

अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हाए प्यारे ! हाए प्यारे ! कह कर रोने लगे। इसी त़रह़ अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर ने मन्अ़ किया, न माना, इन्हों ने पेशानी मुबारक पर बोसा दे कर कहा : "ऐ शहीद होने वाले ! मैं तुम्हें ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को सोंपता हूं।"

www.dawateislami.net

यूहीं अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने रोका। फ़रमाया : "मैं ने अपने वालिदे माजिद से सुना है कि एक मेंढे के सबब से मक्के की बे हुरमती की जाएगी, मैं पसन्द नहीं करता कि वोह मेंढा मैं बनूं।" जब रवाना हो लिये राह में आप के चचाज़ाद भाई ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने जा'फ़र त़य्यार (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का ख़त़ मिला। लिखा था, ज़रा ठहरिये मैं भी आता हूं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़म्र बिन सईद ह़ाकिमे मक्का से इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये एक ख़त़ "अमान और वापस बुलाने का" मांगा, उन्हों ने लिख दिया और अपने भाई यह़या बिन सईद को वापस लाने के लिये साथ कर दिया। दोनों ह़ाज़िर आए और सर से पाउं तक गए कि वापस तशरीफ़ ले चलें, मक़बूल न हुवा। फ़रमाया : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा है और मुझे एक हुक्म दिया गया है, इस की ता'मील करूंगा, सर जाए ख़्वाह रहे।" पूछा : "वोह ख़्वाब क्या है ?" फ़रमाया : "जब तक ज़िन्दा हूं किसी से न कहूंगा।" येह फ़रमा कर रवाना हो गए।

(الکامل فی التاریخ،ذکرمسیرالحسین الی الکوفة...الخ،ج۳،ص۳۹۹ ملخصا)

नज़्म

सब ने अ़र्ज़ की, कि शहज़ादए ह़ैदर मत जा — ऐ हुसैन इब्ने अ़ली, सिब्ते पयम्बर मत जा
सदमे वां पहुंचे अ़ली और ह़सन को क्या किया — जाना कूफ़ा का तो हरगिज़ नहीं बेहतर मत जा
ह़क़नुमा आईना है रुख़ तेरा, अन्धे है वोही — ले के अन्धों में येह आईनए सिकन्दर मत जा

www.dawateislami.net

संगे बारां से बचा जामे बिलूरीं अपना ऐसे लोगों में जो पथ्थर से हैं बदतर मत जा
गुले शादाबे नबी अपने चमन से न निकल नाज़नीं फूल है तू कांटों के अन्दर मत जा
चलते हैं सर सरे आफ़ात के मुज़लिम झोंके शम्अ़ रू क़ल्अ़ए फ़ानूस से बाहर मत जा
बू सईद, इब्ने उ़मर, जाबिर व इब्ने अ़ब्बास था येही कलिमा सब अस्हाब के लब पर मत जा
बेदल इस शाह को मक़तल में क़ज़ा ले ही गई कहते सब रह गए ऐ दीन के सरवर मत जा

जब इमाम के भाई इमाम मुहम्मद बिन हनफ़िय्या को रवानगिये इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़बर पहुंची, तश्त में वुज़ू फ़रमा रहे थे, इस क़दर रोए कि तश्त आंसूओं से भर दिया, इमाम थोड़ी दूर पहुंचे हैं कि फ़रज़दक़ शाइर कूफ़े से आते मिले, कूफ़ियों का हाल पूछा। अ़र्ज़ किया : "ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जिगर पारे ! उन के दिल हुज़ूर के साथ हैं और उन की तल्वारें बनी उमय्या के साथ, क़ज़ा आस्मान से उतरती है और ख़ुदा जो चाहता है करता है।"

इब्ने ज़ियाद की जानिब से नाकाबन्दी

ग़रज़ इधर तो इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) रवाना हुवे, उधर इब्ने ज़ियादे बद निहाद बानिये फ़साद को येह ख़बर पहुंची, क़ादिसिय्या से ख़फ़ान व कोहे लअ़लअ़ और क़त्क़ताना तक फ़ौज से नाका बन्दियां करा दीं और क़ियामत तक मुसलमानों के दिलों को घाइल करने और कलेजों में घाव डालने की बुन्याद डाल दी। इमामे मज़्लूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने क़ैस बिन मसहर को अपनी तशरीफ़ आवरी की इत्तिलाअ़ देने कूफ़े भेजा, जब येह मरहूम क़ादिसिय्या पहुंचे, इब्ने ज़ियाद के सिपाही गिरिफ़्तार कर के उस ख़बीस के पास ले गए। उस मरदूद ने कहा : "अगर जान की ख़ैर चाहते हो तो इस छत पर चढ़ कर **हुसैन** को गालियां दो।" येह सुन कर वोह ख़ानदाने नबुव्वत का

www.dawateislami.net

फ़िदाई अह्ले बैते रिसालत का शैदाई छत पर गया और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला की ह़म्दो सना के बा'द बुलन्द आवाज़ से कहने लगा : "**हुसैन** ! आज तमाम जहान से अफ़्ज़ल हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की साहिबज़ादी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के कलेजे के टुकड़े हैं, मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आंखों के नूर, दिल के सुरूर हैं, उन का क़ासिद हूं, उन का हुक्म मानो और उन की इत़ाअ़त करो" फिर कहा : इब्ने ज़ियाद और उस के बाप पर ला'नत। आख़िरे कार उस मरदक ने जल कर हुक्म दिया कि छत से गिरा कर शहीद किये जाएं। (الکامل فی التاریخ،ذکر مسیر الحسین الی الکوفۃ،ج۳،ص۴۰۲)

उस वक़्त इस बादए उल्फ़त के मतवाले का बे क़रार दिल, इमामे अ़र्श मक़ाम की त़रफ़ मुंह किये इल्तिजा के लहजे में अ़र्ज़ कर रहा है :

بجرم عشق توام مے کشند غوغائیست[1]
تو نیز بر سر بام آ کہ خوش تماشائیست

﴿ज़हीर बिन क़ैन बजली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मइय्यत﴾

इमामे मज़्लूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) आगे बढ़े तो राह में ज़हीर बिन क़ैन बजली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मिले, वोह ह़ज से वापस आते थे और मौला अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से कुछ कदूरत रखते थे। दिन भर इमाम के साथ रहते, रात को अ़लाहिदा ठहरते। एक रोज़ इमाम ने बुला भेजा, ब कराहत आए, ख़ुदा जाने क्या फ़रमा दिया और किस अदा से दिल छीन लिया कि अब जो वापस आए तो अपना अस्बाब इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के अस्बाब में रख दिया और साथियों से कहा : जो मेरे साथ रहना चाहे रहे वरना येह मुलाक़ात पिछली

---

1 ..... या'नी तेरे इश्क़ के जुर्म में मुझे क़त्ल कर रहे हैं इस लिये शोरो ग़ोग़ा है तू भी छत पर आ के देख कि बहुत ख़ूबसूरत नज़ारा है।

www.dawateislami.net

मुलाक़ात है, फिर अपना सामान ले आने और इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के साथ हो जाने का सबब बयान किया कि शहरे बलन्जर पर हम ने जिहाद किया, वोह फ़त्ह हुवा, कसीर ग़नीमतों के मिलने पर हम बहुत ख़ुश हुवे। ह़ज़रते सलमान फ़ारसी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) ने फ़रमाया : "जब तुम जवानाने आले मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के सरदार को पाओ तो इन के साथ दुश्मन से लड़ने पर इस से ज़ियादा ख़ुश होना। अब वोह वक़्त आ गया, मैं तुम सब को सिपुर्द ब ख़ुदा करता हूं, फिर अपनी बीबी को त़लाक़ दे कर कहा : घर जाओ, मैं नहीं चाहता कि मेरे सबब से तुम को कुछ नुक़्सान पहुंचे।"

(الکامل فی التاریخ،ذکر مسیر الحسین الی الکوفۃ،ج۳،ص۴۰۳)

ख़ुदा जाने इन अच्छी सूरत वालों की अदाओं में किस क़ियामत की कशिश रखी गई है, येह जिसे एक नज़र देख लेते हैं, वोह हर त़रफ़ से टूट कर इन्हीं का हो रहता है। फिर यारों से यारी रहती है न ज़न व फ़रज़न्द की पासदारी। आख़िर येह वोही ज़हीर तो हैं जो मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) से कदूरत रखते और रात को इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से अ़लाह़िदा ठहरते थे, येह इन्हें क्या हो गया? और किस की अदा ने बाज़ रखा जो अ़ज़ीज़ों का साथ छोड़, औ़रत को त़लाक़ देने पर मजबूर हो कर बे कसी से जान देने और मुसीबतें झेल कर शहीद होने को आमादा हो गए!

﴾इमामे मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की शहादत की ख़बर﴿

अब येह क़ाफ़िला और बढ़ा तो इब्ने अशअ़स का भेजा हुवा आदमी मिला, जो ह़ज़रते मुस्लिम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की वसिय्यत पर अ़मल करने की ग़रज़ से भेजा गया था, उस से ह़ज़रते मुस्लिम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की शहादत की ख़बर मा'लूम होने पर बा'ज़ साथियों ने इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को क़सम दी कि यहीं से पलट चलिये।

www.dawateislami.net

मुस्लिम शहीद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) के अ़ज़ीज़ों ने कहा : "हम किसी त़रह़ नहीं पलट सकते, या ख़ूने ना ह़क़ का बदला लेंगे या मुस्लिम मर्हूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) से जा मिलेंगे।" इमाम ने फ़रमाया : "तुम्हारे बा'द ज़िन्दगी बेकार है।" फिर जो लोग राह में साथ हो लिये थे उन से इरशाद किया : "कूफ़ियों ने हमें छोड़ दिया, अब जिस के जी में आए पलट जाए हमें कुछ ना गवार न होगा।" येह इस ग़रज़ से फ़रमा दिया कि लोग येह समझ कर हमराह हुवे थे कि इमाम ऐसी जगह तशरीफ़ लिये जाते हैं जहां के लोग दाख़िले बैअ़त हो चुके हैं, येह सुन कर सिवा उन चन्द बुज़ुर्गाने ख़ुदा के जो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हमराहे रिकाब सआ़दत मआब थे, सब अपनी अपनी राह गए। फिर एक और अ़रबी मिले, अ़र्ज़ की, कि "अब तेग़ो सिनां पर जाना है आप को क़सम है वापस जाइये।" फ़रमाया : "जो ख़ुदा चाहता है हो कर रहता है।" (الکامل فی التاریخ،ذکر مسیر الحسین الی الکوفۃ،ج۳،ص۴۰۳ ملخصاً)

﴿ह़ज़रते ह़ुर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की आमद﴾

अब इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मौज़ए़ शराफ़ से आगे बढ़े हैं। येह दोपहर का वक़्त है, यकायक एक साह़िब ने बुलन्द आवाज़ से اَللّٰہُ اَکۡبَر कहा। फ़रमाया : "क्या है ?" कहा : "खजूर के दरख़्त नज़र आते हैं।" क़बीलए बनी असद के दो शख़्सों ने कहा "इस ज़मीन में खजूर कभी न थे।" फ़रमाया : "फिर क्या है ?" अ़र्ज़ की : "सुवार मा'लूम होते हैं।" फ़रमाया : "मेरा भी येही ख़याल है, अच्छा तो यहां कोई पनाह की जगह है कि इसे हम अपनी पुश्त पर ले कर इत्मीनान के साथ दुश्मन से मुक़ाबला कर सकें।" कहा : "हां ! कोहे ज़ौ़हसम, अगर हुज़ूर इन से पहले उस तक पहुंच गए।"

www.dawateislami.net

येह बातें हो रही थीं कि सुवार नज़र आए और इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ सबक़त फ़रमा कर पहाड़ के पास हो लिये, जब वोह और क़रीब आए तो मा'लूम हुवा कि हुर हैं जो एक हज़ार सुवारों पर अफ़्सर बना कर इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को इब्ने ज़ियादे बद निहाद के पास ले जाने के लिये भेजे गए हैं, उस ठीक दोपहर में अस्हाबे इमाम के सामने उतरे। मालिके कौसर के बेटे ने हुक्म दिया कि "इन्हें और इन के घोड़ों को पानी पिलाओ।" हमराहियाने इमाम ने पानी पिलाया। जब ज़ोहर का वक़्त हुवा, इमाम ने मुअज़्ज़िन को अज़ान का हुक्म दिया, फिर उन लोगों से फ़रमाया : "तुम्हारी त़रफ़ मेरा आना अपनी मर्ज़ी से न हुवा, तुम ने ख़त़ और क़ासिद भेज भेज कर बुलाया, अब अगर इत़मीनान का इक़रार करो, तो मैं तुम्हारे शहर को चलूं वरना वापस जाऊं।" किसी ने जवाब न दिया और मुअज़्ज़िन से कहा : तक्बीर कहो। इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने हुर से फ़रमाया : "अपने साथियों को तुम नमाज़ पढ़ाओगे ?" कहा : "नहीं, आप पढ़ाएं और हम सब मुक़्तदी हों। बा'दे नमाज़ हुर, अपने मक़ाम पर गए। इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने **अल्लाह** तआ़ला की ता'रीफ़ के बा'द उन लोगों से इरशाद किया : "अगर तुम **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डरो और ह़क़ को इस के अह्ल के लिये पहचानो तो ख़ुदा तआ़ला की रिज़ामन्दी इसी में है कि हम अह्ले बैत उन ज़ालिमों के मुक़ाबले में उलुल अम्र होने के मुस्तह़िक़ हैं, बई हमा अगर तुम हमें ना पसन्द करो और हमारा ह़क़ न पहचानो और अपने ख़त़ों और क़ासिदों के ख़िलाफ़ हमारे बारे में राए रखना चाहो तो मैं वापस जाऊं।"

हुर ने अ़र्ज़ की : "वल्लाह ! हम नहीं जानते कैसे ख़त़ और कैसे क़ासिद ? इमाम ने दो ख़ूरजियां भरे हुवे ख़त़ निकाल कर सामने डाल दिये। हुर ने कहा : "मैं ख़त़ भेजने वालों में नहीं, मुझे तो येह हुक्म दिया गया है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को पाऊं तो कूफ़ा, इब्ने ज़ियाद के पास पहुंचाऊं।" फ़रमाया : "तेरी मौत नज़दीक है

www.dawateislami.net

और येह इरादा दूर।" फिर हमराहियों को हुक्म दिया कि "वापस चलें।" हुर ने रोका। फ़रमाया : "तेरी मां तुझे रोए क्या चाहता है?" कहा : "सुनिये! ख़ुदा की क़सम! आप के सिवा तमाम अ़रब में कोई और येह बात कहता तो मैं उस की मां को बराबर से कहता किसे बाशद, मगर वल्लाह! आप की मां का नामे पाक तो मैं ऐसे मौक़अ़ पर ले ही नहीं सकता।" फ़रमाया : "आख़िर मत़लब क्या है?" अ़र्ज़ की : "इब्ने ज़ियाद के पास हुज़ूर का ले चलना।" फ़रमाया : "तो ख़ुदा की क़सम! मैं तेरे साथ न चलूंगा।" कहा : "तो ख़ुदा की क़सम "आप को न छोड़ूंगा।"

जब बात बढ़ी और हुर ने देखा इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) यूं राज़ी न होंगे और किसी गुस्ताख़ी की निस्बत इन के ईमान ने इजाज़त न दी तो येह अ़र्ज़ की, कि "मैं दिन भर तो हुज़ूर से अ़लाहिदा हो नहीं सकता, हां जब शाम हो तो आप मुझ से औ़रतों की हमराही का उ़ज़्र फ़रमा कर अ़लाहिदा ठहरिये और रात में किसी वक़्त मौक़अ़ पा कर तशरीफ़ ले जाइये, मैं इब्ने ज़ियाद को कुछ लिख भेजूंगा, शायद **अल्लाह** तआ़ला वोह सूरत करे कि मैं किसी बेजा मुआ़मले में मुब्तला होने की जुरअत न कर सकूं।"

(الکامل فی التاریخ،ثم دخلت سنة احدی وستین...الخ،ج۳،ص۴۰۷ملخصاً)

कूफ़ियों की बे वफ़ाई और क़ैस बिन मसहर की शहादत की ख़बर

जब अ़ज़ीबुल हजानात पहुंचे, कूफ़े से चार शख़्स आते मिले, ह़ाल पूछा। मुज्मअ़ बिन उ़बैदुल्लाह आ़मिरी ने अ़र्ज़ की : "शहर के रईसों को भारी रिश्वतों से तोड़ लिया गया और उन की थेलियों को रूपियों अशरफ़ियों से भर दिया गया है। वोह तो एक ज़बान हुज़ूर के मुख़ालिफ़ हो गए। रहे अ़वाम इन के दिल हुज़ूर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जानिब झुकते हैं और कल इन्हीं की तल्वारें हुज़ूर पर

www.dawateislami.net

खिंचेंगी ।" फ़रमाया : "मेरे क़ासिद क़ैस का क्या ह़ाल है ? कहा : "क़त्ल किये गए ।" इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) बे इख़्तियार रो पड़े और फ़रमाया : "कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका और कोई इन्तिज़ार में है, इलाही ! हमें और इन्हें जन्नत में जम्अ़ फ़रमा ।"

त़रमाह़ बिन अ़दी ने अ़र्ज़ की : "आप के साथ गिनती के आदमी हैं अगर हुर की जमाअ़त ही आप से लड़े तो किफ़ायत कर सकती है, न कि वोह जमाअ़त जो चलने से एक दिन पहले मैं ने कूफ़े में देखी थी, जो आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) की त़रफ़ रवानगी के लिये तय्यार है। मैं ने अपनी उ़म्र में इतनी बड़ी फ़ौज कभी न देखी, मैं हुज़ूर को क़सम देता हूं कि अगर इन से एक बालिश्त भर जुदाई की क़ुदरत हो तो इसी क़दर कीजिये और अगर वोह जगह मन्ज़ूर हो जहां بِاِذۡنِ اللّٰہِ تَعَالٰی आराम व इत़्मीनान से क़ियाम फ़रमा कर तदबीर फ़रमाइये तो मेरे साथ कोहे आजा की त़रफ़ चलिये, वल्लाह ! इस पहाड़ के सबब से हम बादशाहाने ग़स्सान व ह़िमयर और नो'मान बिन अल मुन्ज़िर बल्कि अ़रबो अ़जम के सब ह़म्लों से मह़फ़ूज़ रहे ।" हुज़ूर ! वहां ठहर कर आजा और सुलमी के रहने वालों को फ़रमाइये, ख़ुदा की क़सम ! दस दिन न गुज़रेंगे कि क़ौमे त़य के सुवार व पियादे ह़ाज़िरे ख़िदमत होंगे, फिर जब तक मर्ज़ी मुबारक हो हम में ठहरिये और अगर पेश क़दमी का क़स्द हो तो बनी त़य से बीस हज़ार जवान हुज़ूर के हमराह कर देने का मेरा ज़िम्मा है, जो हुज़ूर के सामने तल्वार चलाएंगे और जब तक इन में कोई आंख पलक मारती बाक़ी रहेगी हुज़ूर तक दुश्मन न पहुंच सकेंगे । इरशाद हुवा : "अल्लाह तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे, हमारा और कूफ़ियों का कुछ क़ौल हो गया है जिस से हम फिर नहीं सकते ।" येह फ़रमा कर उन्हें रुख़्सत किया ।

(الکامل فی التاریخ،ثم دخلت سنة احدی وستین...الخ،ج۳،ص۴۰۹ ملخصاً)

www.dawateislami.net

इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का ख़्वाब देखना

इमाम ने राह में एक ख़्वाब देखा, जागे तो **انا للّٰہ وانا الیہ راجعون والحمد للّٰہ رب العالمین** फ़रमाते हुवे उठे। इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे बाप ! मैं आप पर कुरबान, क्या बात मुलाहज़ा फ़रमाई ?" फ़रमाया :"ख़्वाब में एक सुवार देखा, कह रहा है, लोग चलते हैं और उन की क़ज़ाएं उन की त़रफ़ चल रही हैं मैं समझा कि हमें हमारे क़त्ल की ख़बर दी जाती है।" ह़ज़रते आ़बिद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) ने कहा : "**अल्लाह** आप को कोई बुराई न दिखाए क्या हम ह़क़ पर नहीं ?" फ़रमाया : "ज़रूर हैं।" अ़र्ज़ की : "जब हम ह़क़ पर जान देते और कुरबान होते हैं, तो क्या परवाह है।" फ़रमाया : "**अल्लाह** तुम को उन सब जज़ाओं से बेहतर जज़ा दे जो किसी बेटे को किसी बाप की त़रफ़ से मिले।"

(الکامل فی التاریخ،ثم دخلت سنة احدی وستین...الخ،ج۳،ص۴۱۱ ملخصاً)

इब्ने ज़ियाद की त़रफ़ से इमामे अ़र्श मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर सख़्ती का हुक्म

जब नेनवा पहुंचे तो एक सुवार कूफ़े से आता मिला, उस ने हुर को इब्ने ज़ियाद का ख़त़ दिया, लिखा था : "**हुसैन** पर सख़्ती कर, जहां उतरें, मैदान में उतरें, पानी से दूर ठहरें, येह क़ासिद बराबर तेरे साथ रहेगा यहां तक कि मुझे ख़बर दे कि तू ने मेरे हुक्म की क्या ता'मील की।" हुर ने ख़त़ पढ़ कर इमाम से गुज़ारिश की, कि "मुझे येह हुक्म आया है, मैं इस के ख़िलाफ़ नहीं कर सकता कि येह क़ासिद मुझ पर जासूस बना कर भेजा गया है।"

www.dawateislami.net

ज़हीर बिन क़ैन ने अ़र्ज़ की : "ख़ुदा की क़सम ! इस के बा'द जो कुछ आएगा वोह इस से सख़्त तर होगा इस गुरौह का क़िताल हमें आइन्दा आने वालों के क़िताल से आसान है।" इरशाद हुवा : हम इब्तिदा न फ़रमाएंगे। येही बातें हो रही थीं कि आफ़ताब गुरूब हो गया और मुहर्रम की दूसरी रात का चांद अपनी हल्की हल्की रौशनी दिखाने लगा, दोनों लश्कर अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा ठहरे।

(الکامل فی التاریخ،ثم دخلت سنة احدی وستین...الخ،ج۳،ص۴۱۱ ملخصاً)

नवासए रसूल की शब में रवानगी

अब मशरिक़ी किनारों से अंधेरा बढ़ता आता है और बज़्मे फ़लक की शमएं रौशन होती जाती हैं, फ़ज़ाएं आ़लम के सय्याह़ और ख़ुदा की आज़ाद मख़्लूक़ परन्द चहचहा चहचहा कर ख़ामोश हो गए हैं, ज़माने की रफ़्तार बताने वाली घड़ी और उ़म्रों का ह़िसाब समझाने वाली जनतरी इस्लामी सिन की तक़्वीम जिसे क़ुदरत के ज़बरदस्त हाथ ने अ़र्ज़ूने क़दीम की ह़द तक पहुंचा दिया है, कुछ अपनी दिलकश अदाएं दिखा कर रू पोश हो गई, तारीकियों का रंग अब और भी गहरा हो गया है। निगाहें जो तक़रीबन दो घन्टे पहले दुन्या की वसीअ़ आबादी में दूर की चीज़ों को ब इत़मीनाने तमाम देखती और परख सकती थीं, अब येह थोड़े फ़ासिले पर भी काम देने में उलझती बल्कि नाकाम रह जाती हैं और अगर कुछ नज़र भी आ जाता है तो रात की सियाह चिलमन इसे साफ़ मा'लूम होने से रोकती है। वक़्त के ज़ियादा गुज़रने और बोलचाल के मौक़ूफ़ हो जाने ने सन्नाटा पैदा कर दिया है, रात और भी भयानक हो गई है। शब बेदार सितारों की आंखें झुकी पड़ती हैं, सोने वाले लम्बियां ताने सो रहे हैं, नींद का जादू ज़माने पर चल गया है, हुर के लश्कर से नफ़ीरे ख़्वाब बुलन्द हुई है, इमामे जन्नत मक़ाम जिन्हों ने इतनी रात इसी मौक़अ़

www.dawateislami.net

के इन्तिज़ार में जाग जाग कर गुज़ारी है, कूच की तय्यारियां फ़रमा रहे हैं अस्बाब जो शाम से बन्धा रखा था बार किया गया और औ़रतों बच्चों को सुवार कराया गया है । अब येह मुक़द्दस क़ाफ़िला इस अंधेरी रात में फ़क़त् इस आसरे पर रवाना हो गया है कि रात ज़ियादा है दुश्मन सोते रहेंगे और हम इन से सुब्ह् होने तक बहुत दूर निकल जाएंगे, बाक़ी रात चलते और सुवारियों को तेज़ चलाते गुज़री ।

मैदाने करबला में आमद

अब तक़दीर की ख़ूबियां देखिये कि मज़्लूमों को सुब्ह् होती है तो कहां, करबला के मैदान में । येह मुह़र्रम सि. 61 हि. की दूसरी तारीख़् और पंज शम्बा का दिन है । अ़म्र बिन सा'द अपना लश्कर ले कर इमाम के मुक़ाबले पर आ गया है, इस बदबख़्त को इब्ने ज़ियादे बद निहाद ने कुफ़्फ़ारे दैलम के जिहाद पर मुक़र्रर किया । और फ़त्ह् के सिले में हुकूमत "रै" का फ़रमान लिख दिया था । इमामे मज़्लूम की ख़बर पाई, बद नसीब की निय्यत बदी पर आई, बुला कर कहा कि : "उधर का क़स्द मुल्तवी रख, पहले **हुसैन** से मुक़ाबिल हो । फ़ारिग़् हो कर उधर जाना । कहा : मुझे मुआ़फ़ करो । कहा : बेहतर मगर इस शर्त् पर कि हमारा नविश्ता वापस दे । उस ने एक दिन की मोहलत मांग कर अह़बाब से मश्वरा किया, सब ने मुमानअ़त की और इस के भांजे ह़म्ज़ा बिन मुग़ीरा बिन शा'बा ने कहा : "ऐ मामूं ! मैं तुझे ख़ुदा की क़सम देता हूं कि **हुसैन** से मुक़ाबला कर के गुनाहगार न होगा । **अल्लाह** की क़सम ! अगर सारी दुन्या तेरी सल्त़नत में हो तो इसे छोड़ना इस से आसान है कि तू ख़ुदा से **हुसैन** का क़ातिल हो कर मिले ।" कहा : "न जाऊंगा ।" मगर नापाक दिल में तरद्दुद रहा, रात को आवाज़ आई, कोई कहता है :

www.dawateislami.net

اَ اَتْرُكُ مُلْكَ الرَّيّ وَالرَّيّ رَغْبَة   اَم اَرْجِعُ مَذْمُوماً بِقَتْلِ حُسَيْن
وَفِي قَتْلِهِ النَّارُ الَّتِي لَيْسَ دُوْنَهَا   حِجَاب وَ مُلْكُ الرَّيّ قُرَّةُ عين

कहा : रै की हुकूमत छोड़ दूं ! और वोह बड़ी मरग़ूब चीज़ है या क़त्ले **हुसैन** رَضِيَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ की मज़म्मत गवारा करूं और उन के क़त्ल में वोह आग है जिस की रोक नहीं और रै की सल्तनत आंखों की ठन्डक है। (الكامل فی التاريخ،ثم دخلت سنة احدى وستين...الخ،ج٣،ص٤١٢ ملخصاً)

﴾इमामे मज़्लूम رَضِيَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ पर पानी बन्द होना﴿

आख़िर क़त्ले इमामे मज़्लूम ही पर राए क़रार पाई, बे दीन ने اَلدِّيْنُ مَزْرَعَةُ الدُّنْيَا (1) की ठहराई। फ़ुरात के घाटों पर पान सौ सुवार भेज कर, साक़िये कौसर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बेटे पर पानी बन्द किया। एक रात इमाम ने बुला भेजा, दोनों लश्करों के बीच में हाज़िर आया। देर तक बातें रहीं, इमाम ने समझाया कि "अहले बातिल का साथ छोड़।" कहा : "मेरा घर ढाया जाएगा।" फ़रमाया : "इस से बेहतर बनवा दूंगा।" कहा : "मेरी जाईदाद छिन जाएगी।" इरशाद हुवा : "इस से अच्छी अ़ता फ़रमाऊंगा।"

(الكامل فی التاريخ،ثم دخلت سنة احدى وستين...الخ،ج٣،ص٤١٣ ملخصاً)

﴾इब्ने सा'द का इब्ने ज़ियाद को ख़त़ और शिमर का इमाम के ख़िलाफ़ वरग़लाना﴿

तीन चार रात येही बातें रहीं, जिन का असर इस क़दर हुवा कि इब्ने सा'द ने एक सुल्ह़ आमेज़ ख़त़ इब्ने ज़ियाद को लिखा कि "**हुसैन** चाहते हैं या तो मुझे वापस जाने दो या यज़ीद के पास ले चलो या किसी इस्लामी सरह़द पर चला जाऊं, इस में तुम्हारी मुराद ह़ासिल है।" ह़ालांकि इमाम ने यज़ीदे पलीद के पास जाने को हरगिज़ न फ़रमाया था, इब्ने ज़ियाद ने ख़त़ पढ़ कर कहा : "बेहतर है।"

---

(1)...... दीन दुन्या की खेती है। सच है :

ع खुदा जब अ़क़्ल लेता है ह़माक़त आ ही जाती है।

www.dawateislami.net

शिमर ज़िलजौशन ख़बीस बोला : क्या येह बातें माने लेता है ? ख़ुदा की क़सम ! अगर **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बे तेरी इताअ़त किये चले गए तो उन के लिये इ़ज़्ज़त व कुव्वत होगी और तेरे वासिते ज़ो'फ़ व ज़िल्लत, यूं नहीं बल्कि तेरे हुक्म से जाएं, अगर तू सज़ा दे तो मालिक है और अगर मुआ़फ़ करे तो तेरा एह़सान है, मैं ने सुना है कि **हुसैन** और इब्ने सा'द में रात रात भर बातें होती हैं।" इब्ने ज़ियाद ने कहा : "तेरी राए मुनासिब है तू मेरा ख़त इब्ने सा'द के पास ले जा अगर वोह मान ले तो उस की इताअ़त करना वरना तू सरदारे लश्कर है और इब्ने सा'द का सर काट कर मेरे पास भेज देना।" फिर इब्ने सा'द को लिखा कि "मैं ने तुझे **हुसैन** की त़रफ़ इस लिये भेजा था कि तू इन से दस्तकश हो या उम्मीद दिलाए और ढील दे या उन का सिफ़ारिशी बने, देख ! **हुसैन** से मेरी फ़रमां बरदारी के लिये कह, अगर मान लें तो मुत़ीअ़ बना कर यहां भेज दे वरना उन्हें और उन के साथियों को क़त्ल कर, अगर तू हमारा हुक्म मानेगा तो तुझे फ़रमां बरदारी का इन्आ़म मिलेगा वरना हमारा लश्कर शिमर के लिये छोड़ दे।"

जब शिमर ने ख़त लिया तो अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबिल महल बिन ह़िज़ाम इस के साथ साथ उस की फूफी उम्मुल बनीन बिन्ते ह़िज़ाम मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ज़ौजा और पिसराने मौला अ़ली, ह़ज़रते अ़ब्बास व उ़स्मान व अ़ब्दुल्लाह व जा'फ़र की वालिदा थीं, उस ने इब्ने ज़ियाद से अपने उन फूफीज़ाद भाइयों के लिये अमान मांगी, उस ने लिख दी। वोह ख़त उस ने उन साह़िबों के पास भेजा, उन्हों ने फ़रमाया : "हमें तुम्हारी अमान की ह़ाजत नहीं, इब्ने सुमय्या की अमान से **अल्लाह** तआ़ला की अमान बेहतर है।"

(الکامل فی التاریخ،ثم دخلت سنة احدی وستین...الخ،ج۳،ص۴۱۴ملخصاً)

www.dawateislami.net

शिमर की इब्ने सा'द के पास आमद

जब शिमर ने इब्ने सा'द को इब्ने ज़ियादे बद निहाद का ख़त दिया, उस ने कहा : "तेरा बुरा हो, मेरा ख़याल है कि तू ने इब्ने ज़ियाद को मेरी तहरीर पर अमल करने से फेर कर काम बिगाड़ दिया, मुझे सुल्ह हो जाने की पूरी उम्मीद थी, हुसैन तो हरगिज़ इताअ़त क़बूल करेंगे ही नहीं। ख़ुदा की क़सम ! इन के बाप का दिल इन के पहलू में रखा हुवा है।" शिमर ने कहा : "अब तू क्या करना चाहता है ?" बोला : "जो इब्ने ज़ियाद ने लिखा।" शिमर ने अ़ब्बास और उन के हक़ीक़ी भाइयों को बुला कर कहा : "ऐ भांजो ! तुम्हें अमान है।" वोह बोले : "अल्लाह की ला'नत तुझ पर और तेरी अमान पर, मामूं बन कर हमें अमान देता है और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बेटे को अमान नहीं।"

(الکامل فی التاریخ،ثم دخلت سنة احدی و ستین...الخ،ج۳،ص٤١٤ ملخصاً)

ख़्वाब में जद्दे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़आवरी

येह पंज शम्बा की शाम और मोहर्रम सि. 61 हिजरी की नवीं तारीख़ है। इस वक़्त सरदारे जवानाने जन्नत के मुक़ाबले में जहन्नमी लश्कर को जुम्बिश दी गई है और वोह मैए शहादत का मतवाला, हैदरे कच्छार का शेर, ख़ैमए अतहर के सामने तेग़ बकफ़ जलवा फ़रमा है। आंख लग गई है, ख़्वाब में अपने जद्दे करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم को देखा है कि अपने लख़्ते जिगर के सीने पर दस्ते अक़दस रखे फ़रमा रहे हैं "اَللّٰھُمَّ اَعْطِ الْحُسَیْنَ صَبْرًاوَّاَجْرًا" इलाही ! हुसैन को सब्रो अज्र अ़ता कर। और इरशाद होता है कि "अब अ़न क़रीब हम से मिला चाहते हो और अपना रोज़ा हमारे पास आ कर इफ़्तार किया चाहते हो।" जोशे मसर्रत में इमाम की आंख खुल गई, मुलाहज़ा फ़रमाया कि दुश्मन हम्ला आवरी का क़स्द कर रहे हैं, जुमुआ़ के ख़याल

www.dawateislami.net

और पसमांदों को वसिय्यत करने की ग़रज़ से इमाम ने एक रात की मोहलत चाही। इब्ने सा'द ने मश्वरा लिया। अम्र बिन ह़ज्जाज ज़ुबेदी ने कहा : "अगर दैलम के काफ़िर भी तुम से एक रात की मोहलत मांगते तो देनी चाहिये थी।" ग़रज़ मोहलत दी गई।

﴿लश्करे इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ से मुक़ाबले की तय्यारी﴾

यहां येह कारवाई हुई कि सब ख़ैमे एक दूसरे के क़रीब कर दिये गए, त़नाबों से त़नाबें मिला दीं, ख़ैमों के पीछे ख़न्दक़ खोद कर नरकल वग़ैरा ख़ुश्क लकड़ियों से भर दी। अब मुसलमान इन कामों से फ़ारिग़ हो कर इमाम की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे हैं और इमाम अपने अह्ल और साथियों से फ़रमा रहे हैं : "सुब्ह़ हमें दुश्मनों से मिलना है, मैं ने ब ख़ुशी तमाम तुम सब को इजाज़त दी, अभी रात बाक़ी है जहां जगह पाओ चले जाओ और एक एक शख़्स मेरे अह्ले बैत से एक एक को साथ ले जाओ, **अल्लाह** तुम सब को जज़ाए ख़ैर दे, दीहात व बलाद में मुतफ़र्रिक़ हो जाओ यहां तक की **अल्लाह** तआ़ला बला टाले, दुश्मन जब मुझे पाएंगे, तुम्हारा पीछा न करेंगे।" येह सुन कर इमाम के भाइयों, साह़िबज़ादों, भतीजों और अ़ब्दुल्लाह इब्ने जा'फ़र के बेटों ने अ़र्ज़ की : "येह हम किस लिये करें ? इस लिये कि आप के बा'द ज़िन्दा रहें ? **अल्लाह** हमें वोह मन्हूस दिन न दिखाए कि आप न हों और हम बाक़ी हों !"

मुस्लिम शहीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के भाइयों से फ़रमाया गया : "तुम्हें मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही का क़त्ल होना काफ़ी है। मैं इजाज़त देता हूं, तुम चले जाओ।" अ़र्ज़ की : और हम लोगों से जा कर क्या कहें ? येह कहें कि "अपने सरदार, अपने आक़ा, अपने सब से बेहतर भाई को दुश्मनों के नरग़े में छोड़ आए हैं ? न उन के साथ तीर फैंका, न नेज़ा मारा, न तल्वार चलाई और हमें ख़बर नहीं कि हमारे चले

www.dawateislami.net

आने के बा'द उन पर क्या गुज़री ? ख़ुदा की क़सम ! हम हरगिज़ ऐसा न करेंगे बल्कि अपनी जानें, अपने बाल बच्चे तुम्हारे क़दमों पर फ़िदा कर देंगे, तुम पर क़ुरबान हो कर मर जाएंगे अल्लाह उस ज़िन्दगी का बुरा करे जो तुम्हारे बा'द हो।"

خوشا[1] حالے کہ گردم گردِ کویت

رخے بر خوں گریباں پارہ پارہ

मुस्लिम बिन औसजा असदी ने अ़र्ज़ की : क्या हम हुज़ूर को छोड़ कर चले जाएं और अभी हम ने हुज़ूर का कोई हक़ अदा कर के अल्लाह के सामने मा'ज़िरत की जगह न पैदा की, ख़ुदा की क़सम ! मैं तो आप का साथ न छोड़ूंगा, यहां तक कि अपना नेज़ा दुश्मनों के सीने में तोड़ दूं और जब तक तल्वार मेरे हाथ मैं रहे, वार किये जाऊं, ख़ुदा गवाह है अगर मेरे पास हथयार भी न होते तो मैं पथ्थर मारता, यहां तक कि आप के साथ मारा जाता।" इसी त़रह़ और सब साथियों ने भी गुज़ारिश की। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन सब को जज़ाए ख़ैर दे। (الکامل فی التاریخ، ثم دخلت سنة احدی وستین...الخ، ج۳، ص۴۱۴ ملخصاً) और जन्नतुल फ़िरदौस में इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का साथ और इन के जद्दे करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ والتسلیم का साया अ़त़ा फ़रमाए और दुन्या व आख़िरत, क़ब्रो ह़श्र में हमें इन के बरकात से बहरा मन्दी बख़्शे। اٰمین اٰمین یا ارحم الراحمین

इसी रात में इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने कुछ ऐसे शे'र पढ़े जिन का मज़मून ह़सरत व बे कसी की तस्वीर आंखों के सामने खींच दे, ज़माना सुब्हो शाम ख़ुदा जाने कितने दोस्तों और अ़ज़ीज़ों को

---

1 ..... वोह समां बहुत अच्छा होगा जब मैं तेरे कूचे के इर्द गिर्द फिरूंगा इस ह़ालत में कि मेरा चेहरा ख़ून आलूदा और गिरेबान टुकड़े टुकड़े होगा।

www.dawateislami.net

क़त्ल करता है और जिसे क़त्ल करना चाहता है उस के बदले में दूसरे पर राज़ी नहीं होता । होने वाले वाक़िए की ख़बर देने वाली दिल ख़राश आवाज़ हज़रते ज़ैनब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के कान में पहुंची, सब्र न हो सका, बे ताब हो कर चिल्लाती हुई दौड़ीं, "काश ! इस दिन से पहले मुझे मौत आ गई होती, आज मेरी मां फ़ातिमा का इन्तिक़ाल होता है, आज मेरे बाप अ़ली दुन्या से गुज़रते हैं, आज मेरे भाई ह़सन का जनाज़ा निकलता है, ऐ **हुसैन** ! ऐ गुज़रे हुवों की निशानी और पसमांदों की जाए पनाह !" फिर ग़श खा कर गिर पड़ीं। اَللّٰہُ اَکۡبَر ! आज मालिके कौसर के घर में इतना पानी भी नहीं कि बे होश बहन के मुंह पर छिड़का जाए । जब होश आया तो फ़रमाया : "ऐ बहन ! **अल्लाह** से डरो और सब्र करो, जान लो सब ज़मीन वालों को मरना और सब आस्मान वालों को गुज़रना है, **अल्लाह** के सिवा सब को फ़ना है । मेरे बाप, मेरी मां, मेरे भाई (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) मुझ से बेहतर थे । हर मुसलमान को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की राह चलनी चाहिये ।"

(الکامل فی التاریخ،ثم دخلت سنة احدی و ستین...الخ،ج۳،ص٤١٦ ملخصاً)

अब क़ियामत क़ाइम होती है

बहारों पर हैं आज आराइशें गुलज़ारे जन्नत की
सुवारी आने वाली है शहीदाने महब्बत की

खुले हैं गुल बहारों पर है फुलवाड़ी जराह़त की
फ़ज़ा हर ज़ख़्म के दामन से वाबस्ता है जन्नत की

गला कटवा के बेड़ी काटने आए हैं उम्मत की
कोई तक़दीर तो देखे असीराने मुसीबत की

www.dawateislami.net

शहीदे नाज़ की तफ़रीह़ ज़ख़्मों से न क्यूं कर हो
हवाएं आती हैं उन खिड़कियों से बाग़े जन्नत की
करम वालों ने दर खोला तो रह़मत का समां बांधा
कमर बांधी तो क़िस्मत खोल दी फ़ज़्ले शहादत की
अ़ली के प्यारे ख़ातूने क़ियामत के जिगर पारे
ज़मीं से आस्मां तक धूम है उन की सियादत की
ज़मीने करबला पर आज मजमअ़ है ह़सीनों का
जमी है अन्जुमन रौशन है शमएं नूरो त़लअ़त की
येह वोह शमएं नहीं जो फूंक दें अपने फ़िदाई को
येह वोह शमएं नहीं रो कर जो काटें रात आफ़त की
येह वोह शमएं हैं जिन से जान ताज़ा पाएं परवाने
येह वोह शमएं हैं जो हंस कर गुज़ारें शब मुसीबत की
येह वोह शमएं नहीं जिन से फ़क़त़ इक घर मुनव्वर हो
येह वोह शमएं हैं जिन से रूह़ हो काफ़ूर ज़ुल्मत की
दिले हूरो मलाइक रह गया ह़ैरत ज़दा हो कर
कि बज़्मे गुल-रखां में ले बलाएं किस की सूरत की
जुदा होती हैं जानें जिस्म से जानां से मिलते हैं
हुई है करबला में गर्म मजलिस वस्लो फ़ुर्क़त की
इसी मन्ज़र पे हर जानिब से लाखों की निगाहें हैं
इसी आ़लम को आंखें तक रही हैं सारी ख़ल्क़त की

www.dawateislami.net

हुवा छिड़काव पानी की जगह अश्के यतीमां से
बजाए फ़र्श आंखें बिछ गईं अह्ले बसीरत की

हवाए यार ने पंखे बनाए पर फ़िरिश्तों के
सबीलें रखी हैं दीदार ने ख़ुद अपने शरबत की

उधर अफ़लाक से लाए फ़िरिश्ते हार रह़मत के
इधर साग़र लिये हूरें चली आती हैं जन्नत की

सजे हैं ज़ख़्म के फूलों से वोह रंगीन गुलदस्ते
बहारे ख़ुशनुमाई पर है सदक़े रूह़ जन्नत की

हवाएं गुलशने फ़िरदौस से बस बस कर आती हैं
निराले इत्र में डूबी हुई है रूह़ नकहत की

दिल पर सोज़ के सुलगे अगर सोज़ ऐसी कसरत से
कि पहुंची अ़र्श व त़यबा तक लपट सोज़े मह़ब्बत की

उधर चिलमन उठी ह़सन अज़ल के पाक जलवों से
इधर चमकी तजल्ली बदरे ताबाने रिसालत की

ज़मीने करबला पर आज ऐसा ह़श्र बरपा है
कि खिंच खिंच कर मिटी जाती हैं तस्वीरें क़ियामत की

घटाएं मुस्त़फ़ा के चांद पर घिर घिर कर आती हैं
सियह काराने उम्मत तेरा बख़्ताने शक़ावत की

येह किस के ख़ून के प्यासे हैं उस के ख़ून के प्यासे
बुझेगी प्यास जिस से तिश्ना कामाने क़ियामत की

www.dawateislami.net

अकेले पर हज़ारों के हज़ारों वार चलते हैं
मिटा दी दीन के हमराह इ़ज़्ज़त शर्मो ग़ैरत की

मगर शेरे ख़ुदा का शेर जब बिफ़रा ग़ज़ब आया
परे टोटे नज़र आने लगी सूरत हज़ीमत की

कहा येह बोसा दे कर हाथ पर जोशे दिलेरी ने
बहादुर आज से खाएंगे क़समें इस शुजाअ़त की

तसद्दुक़ हो गई जाने शुजाअ़त सच्चे तेवर के
फ़िदा शेराने ह़म्लों की अदा पर रूह़ जुरअत की

न होते गर **ह़ुसैन** इब्ने अ़ली इस प्यास के भूके
निकल आती ज़मीने करबला से नह्र जन्नत की

मगर मक़सूद था प्यासा गला ही इन को कटवाना
कि ख़्वाहिश प्यास से बढ़ती रहे रूयत के शरबत की

शहीदे नाज़ रख देता है गर्दन आबे ख़न्जर पर
जो मौजें बाढ़ पर आ जाती हैं दरयाए उल्फ़त की

येह वक़्ते ज़ख़्म निकला ख़ून उछल कर जिस्मे अ़त्हर से
कि रौशन हो गई मशअ़ल शबिस्ताने महब्बत की

सरे बे तन तने आसानी को शहरे त़यबा में पहुंचा
तने बे सर को सरदारी मिली मुल्के शहादत की

ह़सन सुन्नी है फिर इफ़रात़ो तफ़रीत़ इस से क्यूं कर हो
अदब के साथ रहती है रविश अरबाबे सुन्नत की

www.dawateislami.net

दस मुहर्रमुल हराम और ख़ानदाने रिसालत पर ज़ुल्मो सितम का आग़ाज़

रोज़े आ़शूरा की सुब्हे जां गुज़ा आती और जुमए की सह़रे मेह़शर ज़ामुह़ दिखाती है । इमामे अ़र्श मक़ाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ख़ैमए अत़हर से बरआमद हो कर अपने बहत्तर साथियों, बत्तीस सुवारों, चालीस पियादों का लश्कर तरतीब दे रहे हैं। दाहिने बाज़ू पर ज़हीर बिन क़ैन, बाएं पर ह़बीब बिन मुज़हर[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) सरदार बनाए गए और निशान बरदारी पर ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मुक़र्रर फ़रमाए गए हैं और हुक्म दिया गया है कि ख़न्दक़ की लकड़ियों में आग दे दी जाए कि दुश्मन इधर से राह न पाएं। इस इन्तिज़ाम के बा'द इमामे जन्नत मक़ाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तहिय्यए शहादत के वासिते पाकी लेने तशरीफ़ ले गए। अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दे रबह, यज़ीद बिन ह़सीन हमदानी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ख़ैमे के दरवाज़े पर मुन्तज़िर हैं कि बा'द फ़रागे़ इमाम ख़ुद भी येह सुन्नत अदा करें। इब्ने ह़सीन ने अ़ब्दुर्रह़मान से कुछ हंसी की बात कही, वोह बोले : "येह हंसी का क्या मौक़अ़ है?" कहा : "ख़ुदा गवाह है मेरी क़ौम भर को मा'लूम है कि जवानी में भी कभी मेरी हंसी की आ़दत न थी, इस वक़्त मैं उस चीज़ के सबब से ख़ुश हो रहा हूं जो अभी मिला चाहती है। तुम उस लश्कर को देखते हो जो हमारे मुक़ाबले के लिये तुला खड़ा है, ख़ुदा की क़सम हम में और ह़ूरों की मुलाक़ात में इतनी ही देर बाक़ी है कि येह तल्वारें ले कर हम पर झुक पड़ें।"

इमामे जन्नत मक़ाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) बाहर तशरीफ़ लाए और नाक़ा पर सुवार हो कर इतमामे ह़ुज्जत के लिये अशक़िया की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। क़रीब पहुंच कर फ़रमाया : "लोगो ! मेरी बात सुनो और जल्दी न करो, अगर तुम इन्साफ़ करो तो सआ़दत

---

1 ....तारीख़ की किताबों में इन का नाम ह़बीब बिन मुत़ह्हर और ह़बीब बिन मुज़हर भी आया है। इल्मिय्या

www.dawateislami.net

पाओ वरना अपने साथियों को जम्अ़ करो और जो करना है कर गुज़रो, मैं मोहलत नहीं चाहता, मेरा **अल्लाह** जिस ने कुरआन उतारा और जो नेकों को दोस्त रखता है, मेरा कारसाज़ है।"

इमाम की येह आवाज़ उन की बहनों के कान तक पहुंची बे इख़्तियार हो कर रोने लगीं, इमाम ने ह़ज़रते अ़ब्बास और इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन को ख़ामोश करने के लिये भेज कर फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! इन्हें बहुत रोना है।" फिर अशक़िया की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाने लगे : "ज़रा मेरा नसब तो बयान करो और सोचो तो मैं कौन हूं?..... अपने गिरेबान में मुंह डालो, क्या मेरा क़त्ल तुम्हें रवा हो सकता है? ..... मेरी बे हुरमती तुम को ह़लाल हो सकती है?..... क्या मैं तुम्हारे नबी (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) का नवासा नहीं ?..... क्या तुम ने न सुना कि रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने मुझे और मेरे भाई को फ़रमाया : तुम दोनों जवानाने अह्ले जन्नत के सरदार हो ? ..... क्या इतनी बात तुम्हें मेरी ख़ूरेज़ी से रोकने के लिये काफ़ी नहीं ?....."

शिमर मरदक ने कहा : "हम नहीं जानते तुम क्या कह रहे हो।" ह़बीब बिन मुज़हर ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे दिल पर मोहर कर दी, तू कुछ नहीं जानता।" फिर इमामे मज़्लूम ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! मेरे सिवा रूए ज़मीन पर किसी नबी का कोई नवासा बाक़ी नहीं। बताओ तो मैं ने तुम्हारा कोई आदमी मारा?..... या माल लूटा या किसी को ज़ख़्मी किया?..... आख़िर मुझ से किस बात का बदला चाहते हो ?..... कोई जवाबदेह न हुवा, तो नाम ले कर फ़रमाया : ? ..... ऐ शीस बिन रबई ! ऐ ह़ज्जाज़ बिन अबजर[1] ! ऐ क़ैस बिन अशअ़स ! ऐ ज़ैद बिन ह़ारिस ! क्या तुम ने मुझे ख़ुतूत़ न लिखे ?" वोह ख़बीस साफ़ मुकर गए। फ़रमाया : "ज़रूर लिखे।" फिर इरशाद हुवा : "ऐ लोगो अगर तुम मुझे ना

---

1 .....तारीख़ की किताबों में ह़ज्जार बिन अबजज़ भी आया है। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

पसन्द रखते हो तो वापस जाने दो।" इस पर भी कोई राज़ी न हुवा। फिर फ़रमाया : "मैं अपने और तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं इस अम्र से कि मुझे संगसार करो और पनाह मांगता हूं उस मग़रूर से जो क़ियामत के दिन पर ईमान न लाए।" येह फ़रमा कर नाक़ा शरीफ़ से उतर आए।

ज़हीर बिन क़ैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हथयार लगाए घोड़े पर सुवार आगे बढ़े और कहने लगे : "ऐ अह्ले कूफ़ा ! अ़ज़ाबे इलाही जल्द आता है। मुसलमान का मुसलमान पर ह़क़ है कि नसीह़त करे, हम तुम अभी दीनी भाई हैं, जब तल्वार उठेगी तुम अलग गुरौह होगे हम अलग। हमें तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की औलाद के बारे में आज़माया है कि हम तुम इन के साथ क्या मुआ़मला करते हैं। मैं तुम्हें इमामे **हुसैन** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की मदद के लिये बुलाता और सरकश इब्ने सरकश इब्ने ज़ियाद की इत़ाअ़त से रोकना चाहता हूं, तुम इस से ज़ुल्मो सितम के सिवा कुछ न देखोगे।"

कूफ़ियों ने कहा : "जब तक तुम्हें और तुम्हारे सरदार को क़त्ल न कर लें या मुत़ीअ़ बना कर इब्ने ज़ियाद के पास न भेज दें हम यहां से न टलेंगे।"

ज़हीर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! फ़ात़िमा के बेटे सुमय्या के बेटे से ज़ियादा मुस्तह़िक़े मह़ब्बत व नुस्रत हैं, अगर तुम इन की मदद न करो तो इन के क़त्ल के भी दरपे न हो।" इस पर शिमर मरदूद ने एक तीर मार कर कहा : "चुप ! बहुत देर से तू ने हमारा सर खाया है।"

ज़हीर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने फ़रमाया : "ओ एड़ियों पर मूतने वाले गंवार के बच्चे ! मैं तुझ से बात नहीं करता, तू निरा जानवर है, मेरे ख़याल में तुझे क़ुरआन की दो आयतें भी नहीं आतीं, तुझे क़ियामत के दिन दर्दनाक अ़ज़ाब और रुस्वाई का मुज़्दा हो।"

www.dawateislami.net

शिमर बोला : "कोई घड़ी जाती कि तू और तेरा सरदार क़त्ल किया जाता है।"

फ़रमाया : "क्या मुझे मौत से डराता है ? ख़ुदा की क़सम ! इन के क़दमों पर मरना तुम लोगों के साथ हमेशा जीने से पसन्द है।" फिर बुलन्द आवाज़ से कहने लगे : "ऐ लोगो ! तुम को येह बे अदब उजड फ़रेब देता और दीने हक़ से बे ख़बर करना चाहता है, जो लोग अहले बैत या इन के साथियों को क़त्ल करेंगे, ख़ुदा की क़सम ! मुहम्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत उन्हें न पहुंचेगी।" इमामे आली मक़ाम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने वापस बुलाया।

(الکامل فی التاریخ،ثم دخلت سنة احدی و ستین...الخ،ج۳،ص۴۱۷ ملخصاً)

अब शक़ी इब्ने सा'द ने अपने नापाक लश्कर को इमामे मज़्लूम की त़रफ़ ह़रकत दी। हुर ने कहा : "तुझे अल्लाह की मार, क्या तू इन से लड़ेगा ?" कहा : "लडूंगा और ऐसी लड़ाई लडूंगा, जिस का अदना दर्जा सरों का उड़ना और हाथों का गिरना है।" कहा : "वोह तीन बातें जो उन्हों ने पेश की थीं तुझे मन्ज़ूर नहीं ?" कहा : "मेरा इख़्तियार होता तो मान लेता।"

(الکامل فی التاریخ،انضمام الحر...الخ،ج۳،ص۴۲۰ ملخصاً)

﴾ह़ज़रते हुर की इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मा'ज़रत﴿

हुर मजबूराना लश्कर के साथ इमाम की त़रफ़ बढ़े मगर यूं कि बदन कांप रहा है और पहलू में दिल के फड़कने की आवाज़ बग़ल वाले सुन रहे हैं। येह ह़ालत देख कर उन के एक हमक़ौम ने कहा : "तुम्हारा येह काम शुबे में डालता है, मैं ने किसी लड़ाई में तुम्हारी येह कैफ़िय्यत न देखी, मुझ से अगर कोई पूछता है कि तमाम अहले कूफ़ा में बहादुर कौन है ? तो मैं तुम्हारा ही नाम लेता हूं।" बोले : "मैं सोचता हूं कि एक त़रफ़ जन्नत के ख़ुश रंग फूल खिले हैं और एक जानिब जहन्नम के भड़कते हुवे शो'ले बुलन्द

www.dawateislami.net

हो रहे हैं और मैं अगर पुर्ज़े पुर्ज़े कर के जला दिया जाऊं तो जन्नत छोड़ना गवारा न करूंगा।" येह कह कर घोड़े को एड़ दी और इमामे आ़ली मक़ाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए। फिर अ़र्ज़ की : "अल्लाह मुझे हुज़ूर पर क़ुरबान करे, मैं हुज़ूर का वोही साथी हूं जिस ने हुज़ूर को वापस जाने से रोका, जिस ने हुज़ूर को ह़िरासत में लिया, ख़ुदा की क़सम ! मुझे येह गुमान न था कि येह बदबख़्त लोग हुज़ूर का इरशाद क़बूल न करेंगे और यहां तक नौबत पहुंचाएंगे, मैं अपने जी में कहता था ख़ैर बा'ज़ बातें उन की कही कर लूं कि वोह येह न समझें कि येह हमारी इत़ाअ़त से निकल गया और अन्जामे कार तो वोह हुज़ूर का इरशाद कुछ न कुछ मान ही लेंगे और ख़ुदा की क़सम ! मुझे येह गुमान होता कि येह कुछ न मानेंगे तो मुझ से इतना भी हरगिज़ वाक़ेअ़ न हो, अब मैं ताइब हो कर ह़ाज़िर आया हूं और अपनी जान हुज़ूर पर क़ुरबान करनी चाहता हूं, क्या मेरी तौबा हुज़ूर के नज़दीक मक़बूल हो जाएगी ?" फ़रमाया : "हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तौबा क़बूल करने वाला और गुनाह बख़्श देने वाला है।"

हुर येह मुज़दा सुन कर अपनी क़ौम की त़रफ़ पलटे और फ़रमाने लगे : "क्या वोह बातें जो इमाम ने पेश की थीं मन्ज़ूर नहीं ?" इब्ने सा'द ने कहा : "इन का मानना मेरी क़ुदरत से बाहर है।" फ़रमाया : "ऐ कूफ़ियो ! तुम्हारी माएं बे औलादी हों .... तुम्हारी माओं को तुम्हारा रोना नसीब हो ..... क्या तुम ने इमाम को दुश्मनों के हाथ में दे देने के लिये बुलाया था ?..... क्या तुम ने वा'दा न किया था कि अपनी जानें उन पर निसार करोगे ?... और अब तुम्हीं उन के क़त्ल पर आमादा हो ? येह भी मन्ज़ूर नहीं कि वोह अल्लाह के किसी शहर में चले जाएं जहां वोह, उन के बाल बच्चे अमान पाएं..... तुम ने उन्हें क़ैदिये बे दस्तो पा बना रखा है, ... फ़ुरात

www.dawateislami.net

का बहता पानी जिसे खुदा के दुश्मन पी रहे हैं और गाऊं के कुत्ते सुवर जिस में लौट रहे हैं .... **हुसैन** और उन के बच्चों पर बन्द किया गया है .... प्यास की तक्लीफ़ ने उन्हें ज़मीन से लगा दिया है ...... तुम ने क्या बुरा मुआ़मला किया ज़ुर्रिय्यते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ...... अगर तुम तौबा न करो और अपनी ह़रकतों से बाज़ न आओ तो **अल्लाह** तुम्हें क़ियामत के दिन प्यासा रखे ।"

(الکامل فی التاریخ،انضمام الحر...الخ،ج۳،ص۴۲۱ملخصاً)

मुक़ाबले का बा क़ाइ़दा आग़ाज़

इस के जवाब में उन ख़बीसों ने ह़ज़रते हुर पर पथ्थर फैंकने शुरूअ़ किये, येह वापस हो कर इमाम के आगे खड़े हो गए, लश्करे अशक़िया से ज़ियाद का ग़ुलाम यसार और इब्ने ज़ियाद का ग़ुलाम सालिम मैदान में आए और अपने मुक़ाबले के लिये मुबारिज़ त़लब करने लगे । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मैर कल्बी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) सामने आए, दोनों बोले : हम तुम्हें नहीं जानते, ज़ुहीर बिन क़ैन या ह़बीब बिन मुज़ह़र या बरीर बिन ह़ुज़ैर[1] को हमारे मुक़ाबले के लिये भेजो । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह ने यसार से फ़रमाया : "ओ बदकार औ़रत के बच्चे ! तू मुझ से न लड़ेगा ? तेरी लड़ाई के लिये बड़े बड़े चाहियें ?" येह फ़रमा कर एक हाथ मारा वोह क़त्ल हुवा, सालिम ने आप पर वार किया बाएं हाथ से रोका, उंगलियां उड़ गईं, दाहिने से वार किया, वोह भी मारा गया ।

येह अ़ब्दुल्लाह कूफ़े से इमाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे थे और इन की बीबी उम्मे वह्ब इन के साथ थीं । वोह ख़ैमे की चोब ले कर जिहाद के लिये चलीं और अपने शोहर से कहा :

1 ..... तारीख़ की किताबों में इन का नाम बरीर बिन ख़ज़ीर भी आया है । رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

"मेरे मां बाप तेरे कुरबान ! क़िताल कर इन सुथरे, पाकीज़ा नबीज़ादों के लिये।" कहा : " तुम औ़रतों में जाओ।" न माना और कहा : "तुम्हारे साथ मरूंगी।" आख़िर ह़ज़रते इमाम ने आवाज़ दी कि "ऐ बीबी ! **अल्लाह** तुझ पर रह़मत करे, पलट आ कि जिहाद औ़रतों पर फ़र्ज़ नहीं।" वापस आईं। फिर इब्ने सा'द के मैमना से अम्र बिन अल ह़ज्जाज अपने सुवार ले कर आगे बढ़ा, इमाम के साथियों ने घुटनों के बल झुक कर नेज़े सामने किये, घोड़े नेज़ों की सनानों पर न बढ़ सके, पीछे पलटे तो इधर से तीर चलाए गए। वोह कितने ही ज़ख़्मी हुवे, कितने ही मारे गए।

एक मरदक इब्ने हौ़ज़ा ने पूछा : "क्या तुम में **हुसैन** है ? किसी ने जवाब न दिया, तीन बार पूछा, लोगों ने कहा : तेरा क्या काम है ?" बोला : "ऐ **हुसैन** ! तुम्हें आग की बिशारत[1] हो।" फ़रमाया : "तू झूटा है, मैं अपने मेहरबान रब के पास जाऊंगा।" फिर उस का नाम पूछा। कहा : "इब्ने हौ़ज़ा। दुआ फ़रमाई : اَللّٰھُمَّ خُذْہُ اِلَی النَّارِ इलाही इसे आग की त़रफ़ समेट।" येह सुन कर वोह मरदूद ग़ज़ब नाक हुवा, हुज़ूर की त़रफ़ घोड़ा चमकाया, कुदरते ख़ुदा कि घोड़ा भड़का और येह फिसला, एक पाउं रिकाब में उलझ कर रह गया, अब घोड़ा उड़ा चला जाता है यहां तक कि इस मरदूद की रान और पिन्डली टूटी, सर पथ्थरों से टकरा टकरा कर पाश पाश हो गया, आख़िर इसी ह़ाल में वासिले जहन्नम हुवा। मसरूक़ बिन वाइल ह़ज़्रमी, इमामे मज़्लूम के सरे मुबारक लेने की तमन्ना में आया था। इब्ने हौ़ज़ा का येह ह़ाल देख कर कहने लगा : ख़ुदा की क़सम ! मैं तो अह्ले बैत से कभी न लड़ूंगा। फिर यज़ीद बिन मा'क़िल, ह़ज़रते बरीर से कहने लगा : "ख़ुदा ने तुम्हारे साथ क्या किया ?" फ़रमाया :

---

1 .....मुख़ालिफ़ीने हुसैन के तअ़स्सुब और जहालत की इन्तिहा है जो क़त्ले हुसैन को नेकी तसव्वुर किये हुवे थे।

www.dawateislami.net

"अच्छा किया।" कहा : "तुम ने झूट कहा और मैं तुम को आज से पहले झूटा न जानता था, मैं गवाही देता हूं कि तुम गुमराह हो।" फ़रमाया : "तो आओ हम तुम मुबाहिला कर लें कि अल्लाह झूटे पर ला'नत करे और झूटा सच्चे के हाथ से क़त्ल हो।" वोह राज़ी हो गया। मुबाहिला के बा'द इब्ने मा'क़िल ने तल्वार छोड़ी, ख़ाली गई, ह़ज़रते बरीर[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने वार किया, ख़ौद काटता हुवा भेजा चाट गया। येह देख कर रज़ी बिन मुन्क़ज़ अ़बदी दौड़ा और ह़ज़रते बरीर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से लिपट गया, कुश्ती होने लगी, ह़ज़रते बरीर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने दे मारा और उस के सीने पर चढ़ बैठे, पीछे से का'ब बिन जाबिर अज़दी ने नेज़ा मारा कि पुश्त मुबारक में ग़ाइब हो गया। नेज़ा खा कर रज़ी के सीने से उतरे और उस मरदक की नाक दांतों से काट ली। का'ब ने तल्वार मारी कि शहीद हुवे, जब का'ब पलटा, उस की औ़रत ने कहा : "मैं तुझ से कभी बात न करूंगी, तू ने फ़ातिमा के बेटे के होते दुश्मन को मदद दी और आ़लिमों के सरदार बरीर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को शहीद किया।" (الکامل فی التاریخ،المعرکۃ،ج۳،ص۴۲۱ملخصاً)

फिर इमाम की जानिब से अ़म्र बिन क़ुर्ज़ा अन्सारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) निकले और सख़्त लड़ाई के बा'द शहीद हुवे। ह़ज़रते ह़ुर ने क़िताले शदीद किया। यज़ीद बिन सुफ़यान इन के सामने आया, इन्हों ने उसे क़त्ल फ़रमाया, नाफ़ेअ़ बिन हिलाल मुरादी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मैदान में आए, मुज़ाह़िम बिन ह़रीस इन का मुज़ाह़िम हुवा। मुरादी बा मुराद ने उस ना मर्द ना मुराद को क़त्ल किया, येह ह़ालत देख कर अ़म्र बिन अल ह़ज्जाज चिल्लाया : "ऐ लोगो ! तुम जानते हो किन से लड़ रहे हो ? तुम्हारे सामने वोह बहादुर हैं जिन्हें मरने का शौक़ है, एक एक उन से मैदान न करो, वोह बहुत कम हैं ख़ुदा की क़सम ! तुम सब मिल कर पथ्थर मारोगे तो क़त्ल कर लोगे।"

---

1 ..... बरीर बिन ह़ज़ीर

www.dawateislami.net

इब्ने सा'द ने येह राए पसन्द कर के लोगों को तन्हा मैदान करने से रोक दिया, फिर अम्र बिन अल ह़ज्जाज ने फ़ुरात की त़रफ़ से ह़म्ला किया। इस ह़मले में मुस्लिम बिन औसजा असदी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने शहादत पाई। अम्र पलट गया, इन में अभी रमक़ बाक़ी थी, ह़बीब बिन मुज़्हर ने कहा : "तुम्हें जन्नत का मुज़्दा हो, तुम्हारा गिरना मुझ पर सख़्त शाक़ हुवा, मैं अभी अन क़रीब तुम से मिला चाहता हूं, मुझे कोई वसिय्यत करो कि उस पर अमल करूं।" मुस्लिम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने ह़ज़रते इमाम की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : "इन पर क़ुरबान हो जाना।" ह़बीब ने कहा ऐसा ही होगा। फिर ख़बीस इब्ने सा'द ने पान सौ तीर अन्दाज़ इब्ने नुमैर के साथ जमाअ़ते इमाम पर भेजे। अब तीन दिन के प्यासों पर तीरों का मींह बरसना शुरूअ़ हो गया, इमाम के साथी घोड़ों से उतर कर पियादा हो लिये और येह पियादा होना इस मस्लह़त से था कि इस नागहानी बला से कि एक साथ पान सो तीर चुटकियों से निकल रहा है, घबरा कर पाउं न उखड़ जाएं, मारना मरना जो कुछ होना है यहीं हो जाए। इमाम को छोड़ कर भागने और पीठ दिखाने की राह न रहे। ह़ज़रते हुर सख़्त लड़ाई लड़े, यहां तक कि दोपहर हो गया, उन पान सो ने इन के तीस साथियों पर कुछ क़ुदरत न पाई।

जब शक़ी इब्ने सा'द ने येह ह़ाल देखा कि सामने से जाने की त़ाक़त नहीं, इस मैदान के दहने बाएं कुछ मकान वाक़ेअ़ थे इन में लोग भेजे कि जमाअ़ते इमाम पर दहने बाएं से भी ह़म्ला हो सके। इमामे मज़्लूम के तीन चार साथी पहले से बैठ रहे, जो कूदा, मार लिया। इब्ने सा'द ने जल कर कहा कि "मकानात में आग लगा दी जाए।" इमाम ने फ़रमाया : "जला लेने दो, जब आग लग जाएगी तो इधर से ह़म्ले का अन्देशा न रहेगा।"

(الکامل فی التاریخ،المعرکۃ،ج۳،ص۴۲۳ملخصاً)

www.dawateislami.net

शिमर मरदूद ह़म्ला कर के ख़ैमए अत़हर के क़रीब पहुंचा और जन्नत वालों का ख़ैमा फूंकने को जहन्नमी ने आग मांगी। इस के साथी ह़मीद बिन मुस्लिम ने कहा कि "ख़ैमे को आग दे कर औ़रतों, बच्चों को क़त्ल करना हरगिज़ मुनासिब नहीं।" इस दोज़ख़ी ने न माना। शीस बिन रबई कूफ़ी ने कि इस नापाक लश्कर के सरदारों में था, इस नारी को आग लगाने से बाज़ रखा। इस अ़र्से में ह़ज़रते ज़हीर बिन क़ैन दस साह़िबों के साथ शिमर मरदूद के लश्कर पर ऐसी सख़्ती से ह़म्ला आवर हुवे कि उन बदबख़्तों को भागते और पीठ दिखाते ही बन पड़ी। इस ह़म्ले में अबू उ़ज़्ज़ा मारा गया। दुश्मनों ने जम्अ़ हो कर इन ग्यारह पर फिर हुजूम किया। उन में से जितने मारे जाते कसरत की वज्ह से मा'लूम भी न होते और इन में का एक भी शहीद होता तो सब पर ज़ाहिर हो जाता। इसी अ़र्से में नमाज़े ज़ोहर का वक़्त आ गया। ह़ज़रते अबू समामहुस्साइदी ने इमाम से अ़र्ज़ की। "मेरी जान हुज़ूर पर क़ुरबान मैं देखता हूं कि अब दुश्मन पास आ गए, ख़ुदा की क़सम ! जब तक मैं अपनी जान हुज़ूर पर निसार न कर लूं, हुज़ूर शहीद न होंगे, मगर आरज़ू येह है कि ज़ोहर पढ़ कर अल्लाह तआ़ला से मिलूं।" इमाम ने फ़रमाया : "हां ! येह अव्वल वक़्त है, इन से कहो इस क़दर मोहलत दें कि हम नमाज़ पढ़ लें।" इमाम की करामत कि येह बात उन बे दीनों ने क़बूल कर ली।

इब्ने नुमैर मरदक ने कहा "येह नमाज़ क़बूल न होगी।" ह़ज़रते ह़बीब बिन मुज़हर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने फ़रमाया : "आले रसूल की नमाज़ क़बूल न होगी और ऐ गधे ! तेरी क़बूल होगी ?" उस ने इन पर वार किया, इन्हों ने ख़ाली दे कर तल्वार मारी, घोड़े पर पड़ी, घोड़ा गिरा और इस के साथ वोह मरदूद भी ज़मीन पर आया, उस के हमराही जल्दी कर के उसे उठा ले गए। फिर उन्हों ने क़िताले शदीद किया। बनी तमीम से बदील बिन सरीम को क़त्ल फ़रमाया,

www.dawateislami.net

दूसरे तमीमी ने इन के नेज़ा मारा, उठना चाहते थे कि इब्ने नुमैर ख़बीस ने तल्वार छोड़ दी, शहीद हो गए, رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन की शहादत का इमाम को सख़्त सदमा हुवा।

अब ह़ज़रते हुर और ज़हीर बिन क़ैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) ने येह शुरूअ़ किया कि एक उन ख़बीसों पर ह़म्ला फ़रमाते, जब वोह उस हरबोंग में घिर जाते, दूसरे लड़भिड़ कर छुटा लाते, जब येह घिर कर ग़ाइब हो जाते, वोह पहले ह़म्ला करते और बचा लाते। देर तक येही ह़ालत रही फिर पियादों का लश्कर ह़ज़रते हुर पर टूट पड़ा और उन्हें शहीद किया। (الکامل فی التاریخ،المعرکۃ،ج۳،ص۴۲۵ملخصاً)

रौज़तुश्शुहदा में है जब हुर ज़ख़्मी हो कर गिरे इमाम को आवाज़ दी, ह़ज़रत बे क़रार हो कर तशरीफ़ ले गए और सख़्त जंग फ़रमा कर उठा लाए, ज़मीन पर लिटा दिया और उन का सर अपने ज़ानू पर रख कर पेशानी और रुख़सारों की गर्द दामन से पौंछने लगे। हुर ने आंख खोल दी और अपना सर इमाम के ज़ानू पर पा कर मुस्कुराए और अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! अब तो मुझ से ख़ुश हुवे ?" फ़रमाया "हम राज़ी हैं, **अल्लाह** भी तुम से राज़ी हो।" हुर ने येह मुज़्दए जां फ़िज़ा सुन कर इमाम पर नक़्दे जां निसार किया और बिहिश्ते बरीं की राह ली।

आरज़ू येह है कि निकले दम तुम्हारे सामने
तुम हमारे सामने हो हम तुम्हारे सामने

सलाए क़िस्सा ख़्वां फ़ुरक़त की शब सो येह कहानी है
तेरे ज़ानू ही के तकये पे मुझ को नींद आनी है

हुर की शहादत के बा'द सख़्त लड़ाई शुरूअ़ हुई। दुश्मन कटते जाते और आगे बढ़ते जाते, कसरत की वज्ह से कुछ ख़याल में न लाते, यहां तक कि इमाम के क़रीब पहुंच गए और तिश्नाकामों पर तीरों का मींह बरसाना शुरूअ़ कर दिया, येह ह़ालत देख कर ह़ज़रते

www.dawateislami.net

ह़नफ़ी[1] ने इमाम को अपनी पीठ के पीछे ले लिया और अपने चेहरे और सीने को इमाम की सिपर बना कर खड़े हो गए। दुश्मन की त़रफ़ से तीर पर तीर आ रहे हैं और येह कामिल इत़मीनान और पूरी ख़ुशी के साथ ज़ख़्म पर ज़ख़्म खा रहे हैं। इस वक़्त इस शराबे महब्बत के मतवाले ने अपने मा'शूक़, अपने दिलरुबा **हुसैन** को पीठ के पीछे ले कर जंगे उहुद का समां याद दिलाया है, वहां भी एक आ़शिक़े जांबाज़ मुसलमानों की लड़ाई बिगड़ जाने पर सय्यिदुल महबूबीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने दुश्मनों के ह़म्लों की सिपर बन कर आ खड़ा हुवा था, येह ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास थे رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन्हीं के पीछे क़ियाम फ़रमा थे और दुश्मनों के दफ़्अ़ करने को तरकश से तीर अ़त़ा फ़रमाते जाते और हर तीर पर इरशाद होता "اِرْمِ سَعْدُ بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ" तीर मार ऐ सा'द ! तुझ पर मेरे मां बाप क़ुरबान। **अल्लाह** की शान, जंगे उहुद में ह़ज़रते सा'द (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) की जां निसारी की वोह कैफ़िय्यत कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सिपर बन गए और दुश्मनों को क़रीब न आने दिया और वाक़िअ़ए करबला में इब्ने सा'द की ज़ियांकारी की येह ह़ालत कि दुश्मनों को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बेटे के मुक़ाबले पर लाया है। बुज़ुर्गवार बाप के तीर इस्लाम के दुश्मनों पर चल रहे थे, ना हन्जार बेटे के तीर मुसलमानों के सरदार पर छूट रहे हैं।

ع ببیں[2] تفاوت رہ از کجاست تا بکجا

ग़रज़ ह़ज़रते ह़नफ़ी ने इमाम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) के सामने यहां तक तीर खाए कि शहीद हो कर गिर पड़े رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه, ह़ज़रते ज़हीर बिन क़ैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने इस त़ूफ़ाने बे तमीज़ी के रोकने में जानतोड़ कोशिश की और सख़्त लड़ाई लड़ कर शहीद हो गए।

---

1 ..... सईद बिन अ़ब्दुल्लाह ह़नफ़ी

2 ..... देख ! रस्तों का फ़र्क़ कहां से कहां तक है।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते नाफ़ेअ़ बिन हिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने तीरों पर अपना नाम कन्दा करा कर ज़ह्र में बुझाया था। इन से बारह शक़ी क़त्ल किये और बे शुमार ज़ख़्मी कर डाले। दुश्मन उन पर भी हुजूम कर आए, दोनों बाज़ूओं के टूट जाने के सबब से मजबूर हो कर गिरिफ़्तार हो गए। शिमर ख़बीस उन्हें इब्ने सा'द के पास ले गया। हिलाल के चांद का चेहरा ख़ून से भरा था और वोह बिफ़रा हुवा शेर कह रहा था : "मैं ने तुम में के 12 गिराए और बे गिनती घाइल किये, अगर मेरे हाथ न टूटते तो मैं गिरिफ़्तार न होता।" शिमर ने उन के क़त्ल पर तल्वार खींची, फ़रमाया : "तू मुसलमान होता, तो ख़ुदा की क़सम ! हमारा ख़ून कर के ख़ुदा से मिलना पसन्द न करता, उस ख़ुदा के लिये ता'रीफ़ है जिस ने हमारी मौत बदतराने ख़ल्क़ के हाथ पर रखी।" शिमर ने शहीद कर दिया फिर बाक़ी मुसलमानों पर ह़म्ला आवर हुवा। इमाम के साथियों ने देखा कि अब उन में इमाम की ह़िफ़ाज़त करने की त़ाक़त न रही, शहीद होने में जल्दी करने लगे कि कहीं ऐसा न हो की हमारे जीते जी इमामे अ़र्शे मक़ाम को कोई सदमा पहुंचे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह व अ़ब्दुर्रह़मान (पिसराने उ़र्वा ग़िफ़ारी) इजाज़त ले कर बढ़े और लड़ाई में मश्ग़ूल हो कर शहीद हो गए।

सैफ़ बिन ह़ारिस और मालिक बिन अ़ब्द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) कि दोनों एक मां के बेटे और बाप की त़रफ़ से चचाज़ाद थे, ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर रोने लगे। इमाम ने फ़रमाया : "क्यूं रोते हो ? कुछ ही देर बाक़ी है कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारी आंखें ठन्डी करता है।" अ़र्ज़ की : "वल्लाह ! हम अपने लिये नहीं रोते बल्कि हुज़ूर के वासिते रोते हैं कि अब हम में हुज़ूर की मुह़ाफ़ज़त की त़ाक़त न रही। फ़रमाया : "अल्लाह तुम को जज़ाए ख़ैर दे।" बिल आख़िर येह दोनों भी रुख़्सत हो कर बढ़े और शहीद हो गए।

www.dawateislami.net

ह़न्ज़ला बिन असअ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने इमाम के सामने कुरआने मजीद की कुछ आयतें पढ़ीं और कूफ़ियों को अ़ज़ाबे इलाही से डराया मगर वहां ऐसी कौन सुनता था, येह भी सलाम कर के गए और दादे शुजाअ़त दे कर शहीद हो गए । शौज़ब बिन शाकिर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) रुख़्सत पा कर बढ़े और शहादत पा कर दारुस्सलाम पहुंचे । ह़ज़रते आ़बिस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) इजाज़त ले कर चले और मुबारिज़ मांगा । इन की मश्हूर बहादुरी के ख़ौफ़ से कोई सामने न आया । इब्ने सा'द ने कहा : "इन्हें पथ्थरों से मारो ।" चारों त़रफ़ से पथ्थरों की बौछाड़ शुरूअ़ हो गई । जब इन्हों ने उन ना मर्दों की येह ह़रकत देखी, त़ैश में भर कर ज़िरह उतार, ख़ौद फैंक, ह़म्ला आवर हुवे, दम के दम में सब को भगा दिया । दुश्मन फिर ह़वास जम्अ़ कर के आए और इन्हें भी शहीद किया ।

यज़ीद बिन अबी ज़ियाद किन्दी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने जो कूफ़े के लश्कर में थे और नार से निकल कर नूर में आ गए थे, दुश्मनों पर तीर मारने शुरूअ़ किये, इन के हर तीर पर इमाम ने दुआ़ फ़रमाई : "इलाही इस का तीर ख़त़ा न हो और इसे जन्नत अ़त़ा फ़रमा ।" सो तीर मारे जिन में पांच भी ख़त़ा न गए, आख़िरे कार शहीद हुवे । इस वाक़िए़ में सब से पहले इन्हों ही ने शहादत पाई और शहीदाने करबला की तरतीब वार फ़ेहरिस्त, इन्हीं के नाम से शुरूअ़ हुई है, अ़म्र बिन ख़ालिद मअ़ सा'द मौला व जब्बार बिन ह़ारिस व मजमअ़ बिन उ़बैदुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) लड़ते लड़ते दुश्मनों में डूब गए । इस वक़्त अशक़िया ने सख़्त ह़म्ला किया, ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ह़म्ला फ़रमा कर छुड़ा लाए । ज़ख़्मों में चूर थे इसी ह़ाल में दुश्मनों पर टूट पड़े और लड़ते लड़ते शहीद हो गए ।

www.dawateislami.net

﴾चमने रिसालत के महक्ते फूलों की शहादत की इब्तिदा﴿

अब इमाम के वफ़ादार और जां निसार सिपाहियों में चन्द रिश्तेदारों के सिवा कोई बाक़ी न रहा, इन ह़ज़रात में सब से पहले जो दुश्मनों के मुक़ाबले पर तशरीफ़ लाए इमाम के साहिबज़ादे ह़ज़रते अ़ली अक्बर[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हैं। शेरों के ह़म्ले मश्हूर हैं, फिर येह शेर तो मुह़म्मदी कच्छार का शेर है। इस के झुन्झलाए हुवे ह़मले से ख़ुदा की पनाह, दुश्मनों को क़ह्रे इलाही का नमूना दिखा दिया, जिस ने सर उठाया नीचा दिखाया। सफ़ शिकन ह़म्लों से जिधर बढ़े, दुश्मन काई की त़रह़ फट गए, देर तक क़िताल करते और क़त्ल फ़रमाते रहे, प्यास और तरक़्क़ी पकड़ गई, वापस तशरीफ़ लाए और दम रास्त फ़रमा कर फिर ह़म्ला आवर हुवे और दुश्मनों की जान पर वोही क़ियामत बरपा कर दी। चन्द बार ऐसा ही हुवा, यहां तक कि मुर्रह बिन मुन्क़ज़ अ़बदी शक़ी का नेज़ा लगा और बदबख़्तों ने तल्वारों पर रख लिया। जन्नते आ़लिया में आराम फ़रमाया। नौ जवान बेटे की लाश पर इमाम ने फ़रमाया : "बेटे ! ख़ुदा तेरे शहीद करने वाले को क़त्ल करे, तेरे बा'द दुन्या पर ख़ाक है, येह क़ौम **अल्लाह** से कितनी बे बाक और रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बे हुरमती पर किस क़दर जरी है !" फिर ना'श मुबारक उठा कर ले गए और ख़ैमे के पास रख ली फिर अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम लड़ाई पर गए और शहीद हुवे। (الکامل فی التاریخ،وکان اول من قتل...الخ،ج۳،ص۴۲۸ملخصاً)

---

1 ....इन की वालिदए माजिदा ह़ज़रते लैला बिन्ते अबी मुर्रह हैं न ह़ज़रते शहरबानू[1] जैसा कि अ़वाम में मश्हूर है. 12 मिन्ह.

1... ईरान की फ़ुतूह़ात में शाहे यज़्दगर्द की दो लड़कियां बांदियां बन कर आईं तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन में से एक ख़ातून शहरबानू को ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मश्वरे से ह़ज़रते हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के निकाह़ में दे दिया जिन के बत़न से अ़ली बिन हुसैन (इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हुवे।

www.dawateislami.net

अब आ'दा ने चार त़रफ़ से नरग़ा किया। इस नरग़े में औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ज़रते जा'फ़र त़य्यार और अ़ब्दुर्रह़मान व जा'फ़र (पिसराने अ़क़ील) ने शहादतें पाईं। फिर ह़ज़रते क़ासिम (ह़ज़रते इमामे ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के साह़िबज़ादे) ह़म्ला आवर हुवे और अ़म्र बिन सा'द बिन नुफ़ैल मरदूद की तल्वार खा कर ज़मीन पर गिरे, इमाम को "चचा" कह कर आवाज़ दी, इमाम शेरे ग़ज़बनाक की त़रह़ पहुंचे, और अ़म्र मरदूद पर तल्वार छोड़ी, उस ने रोकी, हाथ कोहनी से उड़ गया। वोह चिल्लाया, कूफ़े के सुवार उस की मदद को दौड़े और गर्दो गुबार में उसी के नापाक सीने पर घोड़ों की टापें पड़ गईं।

जब गर्द छटी तो देखा, इमाम ह़ज़रते क़ासिम की लाश पर फ़रमा रहे हैं : "क़ासिम ! तेरे क़ातिल रह़मते इलाही से दूर हैं, ख़ुदा की क़सम ! तेरे चचा पर सख़्त शाक़ गुज़रा कि तू पुकारे और वोह तेरी फ़रयाद को न पहुंच सके।" फिर उन्हें भी अपने सीने पर उठा कर ले गए और ह़ज़रते अ़ली अक्बर के बराबर लिटा दिया। इसी त़रह़ यके बा'द दीगरे ह़ज़रते अ़ब्बास और इन के तीनों भाई और इमाम के दूसरे साह़िबज़ादे ह़ज़रते अबू बक्र और सब भाई भतीजे (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) शहीद हो गए।

अल्लाह इन्हें अपनी वसीअ़ रह़मतों के साए में जगह दे और हमें इन की बरकात से बहरा मन्द फ़रमाए।

अब इमामे मज़्लूम तन्हा रह गए, ख़ैमे में तशरीफ़ ला कर अपने छोटे साह़िबज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह को (जो अ़वाम में अ़ली असग़र मश्हूर हैं) गोद में उठा कर मैदान में लाए, एक शक़ी ने तीर मारा कि गोद ही में ज़ब्ह़ हो गए, इमाम ने इन का ख़ून ज़मीन पर गिराया और दुआ़ की : "इलाही अगर तू ने आस्मानी मदद हम से रोक ली है तो अन्जाम ब ख़ैर फ़रमा और इन ज़ालिमों से बदला ले।"

(الکامل فی التاریخ، وکان اول من قتل...الخ، ج۳، ص۴۲۹ ملخصاً)

www.dawateislami.net

फूल खिल खिल कर बहारें अपनी सब दिखला गए

ह़सरत उन गुन्चों पर है जो बे खिले मुरझा गए

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ

﴾इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद होते हैं﴿

हुस्नो इ़श्क़ के बाहमी तअ़ल्लुक़ात से जो आगाह हैं, जानते हैं कि वस्ले दोस्त जिसे चाहने वाले अपनी जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखते हैं, बिग़ैर मुसीबतें उठाए और बलाएं झेले ह़ासिल नहीं होता।

रुबाई

اے دل[1] بہوس برسرِ کارے نرسی

تاغم نہ خوری بغم گسارے نرسی

تاسودہ نہ گردی چوحنا در تہ سنگ

ہرگز بکفِ پائے نگارے نرسی

दिल में नश्तर चुभो कर तोड़ देते और कलेजे में छुरियां मार कर छोड़ देते हैं और फिर ताकीद होती है कि उफ़ की तो आ़शिक़ों के दफ़्तर से नाम काट दिया जाएगा। ग़रज़ पहले हर त़रह़ इत़मीनान कर लेते और इमतिह़ान फ़रमा लेते हैं, जब कहीं चिलमन से एक झलक दिखाने की नौबत आती है।

1....... ऐ दिल हवस से तू कामयाब न होगा जब तक तू ग़म न खाएगा ग़म गुसार तक तेरी रसाई न होगी, जब तक तू मेहंदी की त़रह़ पथ्थर के नीचे पिस न जाएगा मह़बूब के तलवे तक तेरी रसाई न हो सकेगी।

ع *रंग लाती है ह़िना, पथ्थर पे घिस जाने के बा'द*

www.dawateislami.net

रुबाई

خوباں[1] دل وجاں بینوا میخواہند　　زخمے کہ زنند مرحبا میخواہند

این[2] قوم ایں قوم چشم بددُور ایں قوم　　خون می ریزند وخوں بہا میخواہند

और येह इमतिहान कुछ ह़सीनाने ज़माना ही का दस्तूर नहीं, हुस्ने अज़ल की दिलकश तजल्लियों और दिलचस्प जल्वों का भी मा'मूल है कि फ़रमाया जाता है :

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ (3)

और ज़रूर हम तुम्हारा इमतिह़ान करेंगे कुछ ख़ौफ़ कुछ भूक से और माल घटा कर और जानों और फलों से । (4)

जब इन कड़ियों को झेल लिया जाता और इन तक्लीफ़ों को बरदाश्त कर लिया जाता है तो फिर क्या पूछना ? सरापर्दए जमाल तरसी हुई आंखों के सामने से उठा दिया जाता और मुद्दत के बे क़रार दिल को राह़त व आराम का पुतला बना दिया जाता है। इसी बुन्याद पर तो मैदाने करबला में इमामे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को वत़न से छुड़ा कर परदेसी बना कर लाए हैं और आज सुब्ह़ से हमराहियों, रफ़ीक़ों बल्कि गोद के पालों को एक एक कर के जुदा कर लिया गया है। कलेजे के टुकड़े ख़ून में नहाए आंखों के सामने पड़े हैं, हरी भरी

1..... मह़बूब उ़श्शाक़ से ऐसे दिलो जान चाहते हैं जो बे नवा हों। ज़ख़्म लगा कर इन्ही से मरह़बा के त़ालिब होते हैं।

2..... येह गुरौह चश्मे बद्दूर अ़जीब गुरौह है ख़ुद क़त्ल करते हैं और फिर ख़ून बहा त़लब करते हैं।

3..... (अल क़ुरआनुल ह़कीम, सूरतुल बक़रह, 155)

4..... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और ज़रूर हम तुम्हें आज़माएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से।* **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

फुलवाड़ी के सुहाने और नाज़ुक फूल पत्ती पत्ती हो कर ख़ाक में मिले हैं और कुछ परवाह नहीं, परवाह होती तो क्यूं होती ? कि राहे दोस्त में घर लुटाने वाले इसी दिन के लिये मदीने से चले थे, जब तो एक एक को भेज कर कुरबान करा दिया और जो अपने पाउं न जा सकते थे, उन को हाथों पर ले कर नज़्र कर आए। कहां हैं वोह मलाइका जो हज़रते इन्सान की पैदाइश पर चूनो चरा करते थे, अपनी जानमाज़ों और तस्बीहो तक़दीस के मुसल्लों से उठ कर आज करबला के मैदान की सैर करें और "إِنِّىٓ[1] أَعۡلَمُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ ۝[2]" की शानदार तफ़्सील हैरत की आंखों से मुलाहज़ा फ़रमाएं।

इस दिल दुखाने वाले मा'रिके में इमतिहान सभी का मन्ज़ूर था, मगर **हुसैने** मज़्लूम का अस्ली और औरों का तुफ़ैली, अगर ऐसा न होता तो मुमकिन था कि दुश्मनों के हाथ से जो सिर्फ़ इमाम ही के दुश्मन, इमाम ही के ख़ून के प्यासे थे, पहले इमाम को शहीद कर दिया जाता। اَللّٰهُ اَكْبَر ! इस वक़्त किस क़ियामत का दर्दनाक मन्ज़र आंखों के सामने है। इमामे मज़्लूम अपने घरवालों से रुख़्सत हो रहे हैं, बे कसी की हालत, तन्हाई की कैफ़िय्यत, तीन दिन के प्यासे मुक़द्दस जिगर पर सेंकड़ों तीर खाए, हज़ारों दुश्मनों के मुक़ाबले पर जाने का सामान फ़रमा रहे हैं, अहले बैत की सग़ीर सिन साहिबज़ादियां, दुन्या में जिन की नाज़बरदारी का आख़िरी फ़ैसला उन की शहादत के साथ होने वाला है, बेचैन हो हो कर रो रही हैं बेकस सय्यिदानियां,

---

1...फ़ाज़िल मुअल्लिफ़ का इशारा तख़्लीक़े आदम पर मलाइका के ए'तिराज़ के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला के इरशाद **"मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते"**(30/1) की जानिब है।

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते। (پ۱، البقرة:۳۰)

www.dawateislami.net

यहां जिन के ऐ़श, जिन के आराम का ख़ातिमा उन की रुख़्सत के साथ ख़ैरबाद कहने वाला है, सख़्त बेचैनी के साथ अश्कबार हैं। और बा'ज़ वोह मुक़द्दस सूरतें जिन को बे कसी की बोलती हुई तस्वीर कहना हर त़रीक़े से दुरुस्त हो सकता है..... जिन का सुहाग ख़ाक में मिलने वाला और जिन का हर आसरा इन के मुक़द्दस दम के साथ टूटने वाला है रोते रोते बेह़ाल हो गई हैं इन के उड़े हुवे रंग वाले चेहरे पर सुकूत और ख़ामोशी के साथ मुसलसल और लगातार आंसूओं की रवानी सूरते ह़ाल दिखा दिखा कर अ़र्ज़ कर रही है :

مَی[1] روی و گریہ می آید مرا
ساعتے بنشیں کہ باراں بگزرد

इस वक़्त ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के दिल से कोई पूछे कि हुज़ूर के नातुवां दिल ने आज कैसे कैसे सदमे उठाए और अब कैसी मुसीबत झेलने के सामान हो रहे हैं ! बीमारी, परदेस, बचपन के साथियों की जुदाई, साथ खेले हुओं का फ़िराक़, प्यारे भाइयों के दाग़ ने दिल का क्या ह़ाल कर रखा है ? अब ज़िदें पूरी करने वाले और नाज़ उठाने वाले मेहरबान बाप का साया भी सरे मुबारक से उठने वाला है इस पर त़ुर्रा येह कि इन मुसीबतों, इन ना क़ाबिले बरदाश्त तक्लीफ़ों में कोई बात पूछने वाला भी नहीं।

दर्दे दिल उठ उठ के किस का रास्ता तकता है तू
पूछने वाला मरीज़ बे कसी का कौन है ?

---

1 ..... तेरे रुख़्सत होने पर मुझे रोना आता है थोड़ी देर के लिये बैठ जाओ ताकि मुझे क़रार आ जाए और मेरे आंसू थम जाएं।

www.dawateislami.net

अब इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बच्चों को कलेजे से लगा कर, औ़रतों को सब्र की तल्क़ीन फ़रमा कर आख़िरी दीदार दिखा कर तशरीफ़ ले चले हैं।

از پیش من آں رشکِ چمن میگزرد[1]
چوں روح روانیکہ زتن میگزرد

حال عجبے روزِ وداعش دارم
من از سرو جاں از من میگزرد

हाए ! उस वक़्त कोई इतना भी नहीं कि रिकाब थाम कर सुवार कराए या मैदान तक साथ जाए। हां ! कुछ बे कस बच्चों की दर्दनाक आवाज़ें और बेबस औ़रतों की मायूसी भरी निगाहें हैं, जो हर क़दम पर इमाम के साथ साथ हैं, इमामे मज़्लूम का जो क़दम आगे पड़ता है, "यतीमी" बच्चों और "बे कसी" औ़रतों से क़रीब होती जाती है। इमाम के मुतअ़ल्लिक़ीन, इमाम की बहनें जिन्हें अभी सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई गई थी, अपने ज़ख़्मी कलेजों पर सब्र की भारी सिल रखे हुवे सुकूत के आ़लम में बैठी हैं, मगर इन के आंसूओं का ग़ैर मुन्क़ते़अ़ सिलसिला, इन के बे कसी छाए हुवे चेहरों का उड़ा हुवा रंग, जिगर गोशों की शहादत, इमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की रुख़्सत, अपनी बे बसी, घर भर की तबाही पर ज़बाने ह़ाल से कह रहा है :

मुझ को जंगल में अकेला छोड़ कर
क़ाफ़िला सारा रवाना हो गया

---

1 ..... वोह रश्के चमन मह़बूब मेरी नज़रों से यूं ओझल होता है जैसे रूह़ जिस्म से जुदा होती है। इस के बिछड़ने पर मेरा अ़जीब ह़ाल है गोया मैं सर से और जान मुझ से जुदा हो रहे हैं।

www.dawateislami.net

तारीख़ का पिछला हिस्सा और इमामे तिश्नाकाम की शहादत

बाग़ जन्नत के हैं बहरे मद्ह ख़्वाने अह्ले बैत
तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अह्ले बैत

किस ज़बां से हो बयान इज़्ज़ो शाने अह्ले बैत
मद्ह गोए मुस्तफ़ा है मद्ह ख़्वाने अह्ले बैत

उन की पाकी का ख़ुदाए पाक करता है बयां
आयए तत्हीर से ज़ाहिर है शाने अह्ले बैत

मुस्तफ़ा इज़्ज़त बढ़ाने के लिये ता'ज़ीम दें
है बुलन्द इक़्बाल तेरा दूदमाने अह्ले बैत

इन के घर में बे इजाज़त जिब्रईल आते नहीं
क़द्र वाले जानते हैं क़द्रो शाने अह्ले बैत

मुस्तफ़ा बाएअ़ [1] ख़रीदार इस का अल्लाहुश्तरा [2]
ख़ूब चांदी कर रहा है कारवाने अह्ले बैत

रज़्म का मैदां बना है जलवा गाहे हुस्नो इश्क़
करबला में हो रहा है इमतिहाने अह्ले बैत

फूल ज़ख़्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने
ख़ून से सींचा गया है गुलसिताने अह्ले बैत

---

1 .....बेचने वाले

2 .....इशारा ब आयए करीमा : ان الله اشترى من المؤمنين انفسهم و اموالهم بان لهم الجنة
बेशक **अल्लाह** ने मुसलमानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है।
(मुसन्निफ़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) के ना'तिया दीवान "ज़ौक़े ना'त" में اشترٰی के बजाए مشترٰی लिखा है। **इल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

हूरें करती हैं अ़रूसाने शहादत का सिंगार
ख़ूब रू दुल्हा बना है हर जवाने अह्ले बैत

हो गई तह्क़ीक़े ईद दीदे आबे तेग़ से
अपने रोज़े खोलते हैं साइमाने अह्ले बैत

जुमुआ़ का दिन है किताबें ज़ीस्त की तै़ कर के आज
खेलते हैं जान पर शहज़ादगाने अह्ले बैत

ऐ शबाबे फ़स्ले गुल ! येह चल गई कैसी हवा
कट रहा है लहलहाता बोस्ताने अह्ले बैत

किस शक़ी की है हुकूमत हाए क्या अंधेर है ?
दिन दहाड़े लुट रहा है कारवाने अह्ले बैत

ख़ुश्क हो जा ख़ाक हो कर ख़ाक में मिल जा फ़ुरात
ख़ाक तुझ पर देख तो सूखी ज़बाने अह्ले बैत

ख़ाक पर अ़ब्बास व उ़स्मान अ़लम बरदार हैं
बे कसी अब कौन उठाएगा निशाने अह्ले बैत

तेरी क़ुदरत जानवर तक आब से सैराब हों
प्यास की शिद्दत में तड़पे बे ज़बाने अह्ले बैत

क़ाफ़िला सालार मंज़िल को चले हैं सोंप कर
वारिसे बे वारिसान को कारवाने अह्ले बैत

फ़ातिमा के लाडले का आख़िरी दीदार है
ह़श्र का हंगामा बरपा है मियाने अह्ले बैत

www.dawateislami.net

वक़्ते रुख़्सत कह रहा है ख़ाक में मिलता सुहाग
लो सलामे आख़िरी ऐ बैवगाने अह्ले बैत

अब्रे फ़ौजे दुश्मनां में ऐ फ़लक यूं डूब जाए
फ़ातिमा का चांद महरे आस्माने अह्ले बैत

किस मज़े की लज़्ज़तें हैं आबे तेग़े यार में
ख़ाको ख़ून में लौटते हैं तिश्नगाने अह्ले बैत

बाग़े जन्नत छोड़ कर आए हैं मह़बूबे ख़ुदा
ऐ ज़हे क़िस्मत तुम्हारी कुश्तगाने अह्ले बैत

हूरें बे पर्दा निकल आई हैं सर खोले हुवे
आज कैसा ह़श्र है या रब[1] मियाने अह्ले बैत

कोई क्यूं पूछे किसी को क्या ग़रज़ ऐ बे कसी
आज कैसा है मरीज़े नीम जाने अह्ले बैत

घर लुटाना जान देना कोई तुझ से सीख जाए
जाने आ़लम हो फ़िदा ऐ ख़ानदाने अह्ले बैत

सर शहीदाने मह़ब्बत के हैं नेज़ों पर बुलन्द
और ऊंची की ख़ुदा ने क़द्रो शाने अह्ले बैत

दौलते दीदार पाई पाक जानें बेच कर
करबला में ख़ूब ही चमकी दुकाने अह्ले बैत

1..... मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के ना'तिया दीवान "ज़ौक़े ना'त" में यहां "या रब" के बजाए "बरपा" लिखा है। इल्मिय्या

www.dawateislami.net

ज़ख़्म खाने को तो आबे तेग़ पीने को दिया
ख़ूब दा'वत की बुला कर दुश्मनाने अह्ले बैत
अपना सौदा बेच कर बाज़ार सूना कर गए
कौन सी बस्ती बसाई ताजिराने अह्ले बैत
अह्ले बैते पाक से गुस्ताख़ियां बे बाकियां
दुश्मनाने अह्ले बैत لَعۡنَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡکُمۡ
बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्क़े को सुना दे ऐ **ह़सन**
यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अह्ले बैत

ऐ कौसर ! अपने ठन्डे और ख़ुश गवार पानी की सबील तय्यार रख कि तीन दिन के प्यासे तेरे किनारे जलवा फ़रमाएंगे। .....

ऐ त़ूबा ! अपने साए के दामन और दराज़ कर, करबला की धूप के लेटने वाले तेरे नीचे आराम लेंगे। .....

आज मैदाने करबला में जन्नतों से हूरें सिंगार किये, ठन्डे पानी के प्याले लिये ह़ाज़िर हैं..... आस्मान से मलाइका की लगातार आमद ने सत़्हे हवा को बिल्कुल भर दिया है और पाक रूहों ने बिहिश्त के मकानों को सूना कर दिया..... ख़ुद हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए त़य्यिबा से अपने बेटे लाडले **हुसैन** की क़त्लगाह में तशरीफ़ लाए हुवे हैं ..... रीशे मुबारक और सरे अत़्हर के बाल गर्द में अटे हुवे और आंखों से आंसूओं का तार बन्धा हुवा है..... दस्ते मुबारक में एक शीशा है, जिस में शहीदों का ख़ून जम्अ़ किया गया है..... और अब मुक़द्दस दिल के चैन प्यारे **हुसैन** के ख़ून भरने की बारी है।

www.dawateislami.net

بچہ[1] ناز رفتہ باشد زجہاں نیاز مندے
کہ بوقتِ جان سپردن بسرش رسیدہ باشی

ग़रज़ आज करबला में **हुसैनी** मेला लगा हुवा है ..... हूरों से कहो कि अपनी ख़ुश्बूदार चोटियां खोल कर करबला का मैदान साफ़ करें कि तुम्हारी शहज़ादी, तुम्हारी आक़ाए ने'मत फ़ातिमा ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के लाल के शहीद करने और ख़ाक पर लिटाए जाने का वक़्त क़रीब आ गया है..... रिज़वान को ख़बर दो कि जन्नतों को भीनी भीनी ख़ुश्बूओं से बसा कर दिलकश आराइशों से आरास्ता कर के दुल्हन बना रखे कि बज़मे शहादत का दुल्हा बहते ख़ून का सहरा बान्धे ज़ख़्मों के हार गले में डाले अ़न क़रीब तशरीफ़ लाने वाला है।

साअ़ते आहो बुका व बे क़रारी आ गई
सय्यिदे मज़्लूम की रन में सुवारी आ गई
साथ वाले भाई बेटे हो चुके हैं सब शहीद
अब इमामे बे कसो तन्हा की बारी आ गई

इमाम ने शिमर ख़बीस को ख़ैमए अत़हर की त़रफ़ बढ़ते हुवे देख कर फ़रमाया : "ख़राबी हो तुम्हारे लिये अगर दीन नहीं रखते और क़ियामत से नहीं डरते तो शराफ़त से तो न गुज़रो, मेरे अह्ले बैत से अपने जाहिल सरकशों को रोको। दुश्मन इधर से बाज़ रहे।" अब चार त़रफ़ से इमामे मज़्लूम, जिन्हें शौक़े शहादत हज़ारों दुश्मनों के मुक़ाबले में अकेला कर के लाया है, नरग़ा हुवा। इमाम दहनी त़रफ़ ह़म्ला फ़रमाते तो दूर तक सुवारों और पियादों का निशान न रहता, बाईं जानिब तशरीफ़ ले जाते तो दुश्मनों को मैदान छोड़ कर भागना पड़ता।

---

1 ..... तेरे नियाज़ मन्द ने जहान से किस नाज़ो अन्दाज़ से कूच किया होगा जब जां सिपारी के वक़्त तू इस के सिरहाने मौजूद होगा।

www.dawateislami.net

ख़ुदा की क़सम ! वोह फ़ौज इस त़रह़ इन के ह़म्लों से परेशान होती जैसे बकरियों के गले पर शेर आ पड़ता है, लड़ाई ने तूल खींचा है, दुश्मनों के छक्के छूटे हुवे हैं, नागाह इमाम का घोड़ा भी काम आ गया, पियादा ऐसा क़िताल फ़रमाया कि सुवारों से मुमकिन नहीं।

तीन दिन के प्यासे थे एक बदबख़्त ने फ़ुरात की त़रफ़ इशारा कर के कहा : "वोह देखिये कैसा चमक रहा है ! मगर तुम इस में से एक बूंद न पाओगे यहां तक कि प्यासे ही मारे जाओगे।" फ़रमाया : "**अल्लाह** ! तुझ को प्यासा क़त्ल करे।" फ़ौरन प्यास में मुब्तला हुवा, पानी पीता और प्यास न बुझती यहां तक कि प्यासा ही मर गया। ह़म्ला करते और फ़रमाते : "क्या मेरे क़त्ल पर जम्अ़ हुवे हो ? हां हां, ख़ुदा की क़सम ! मेरे बा'द किसी को क़त्ल न करोगे, जिस का क़त्ल मेरे क़त्ल से ज़ियादा ख़ुदा की ना ख़ुशी का सबब हो, ख़ुदा की क़सम ! मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी ज़िल्लत से मुझे इ़ज़्ज़त बख़्शे और तुम से वोह बदला ले जो तुम्हारे ख़्वाबो ख़याल में भी न हो, ख़ुदा की क़सम ! तुम मुझे क़त्ल करोगे तो **अल्लाह** तुम में फूट डालेगा और तुम्हारे ख़ून बहाएगा और इस पर राज़ी न होगा, यहां तक कि तुम्हारे लिये दुख देने वाला अ़ज़ाब चन्द दर चन्द बढ़ाएगा।" (الکامل فی التاریخ،المعرکۃ،ج۳،ص۴۳۱)

जब शिमर ख़बीस ने काम निकलता न देखा, लश्कर को ललकारा : तुम्हारी माएं तुम को पीटें क्या इन्तिज़ार कर रहे हो, **हुसैन** को क़त्ल करो। अब चार त़रफ़ से ज़ुल्मत के अब्र और तारीकी के बादल फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) के चांद पर छा गए। ज़रआ़ बिन शरीक तमीमी ने बाएं शाना मुबारक पर तल्वार मारी, इमाम थक गए हैं ..... ज़ख़्मों से चूर हैं.... 33 ज़ख़्म नेज़े के, 34 घाव तल्वारों के लगे हैं..... तीरों का शुमार नहीं.... उठना चाहते हैं और गिर पड़ते हैं.... इसी ह़ालत में सनान बिन अनस नख़ई शक़ी नारी जहन्नमी ने नेज़ा मारा कि वोह अ़र्श का तारा ज़मीन पर टूट कर गिरा.... सनान मरदूद ने

www.dawateislami.net

ख़ोली बिन यज़ीद से कहा : सर काट ले। उस का हाथ कांपा। सनान वलदुश्शैत़ान बोला : "तेरा हाथ बेकार हो" और ख़ुद घोड़े से उतर कर मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के जिगर पारे, तीन दिन के प्यासे को ज़ब्ह़ किया और सर मुबारक जुदा कर लिया। शहादत जो दुल्हन बनी हुई सुर्ख़ जोड़ा, जन्नती ख़ुश्बूओं से बसाए इसी वक़्त की मुन्तज़िर बैठी थी, घूंघट उठा कर बे ताबाना दौड़ी और अपने दुल्हा **हुसैन** शहीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गले में बाहें डाल कर लिपट गई.....

فَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

وَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلٰى اَعْدَائِهٖ وَاَعْدَائِهِمِ الظّٰلِمِيْنَ .

इस पर भी सब्र न आया, इमाम का लिबास मुबारक उतार कर आपस में बांट लिया। अ़दावत की आग अब भी न बुझी, अह्ले बैत के ख़ैमों को लूटा, तमाम माल अस्बाब और मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की साह़िबज़ादियों का ज़ेवर उतार लिया, किसी बीबी के कान में एक बाली भी न छोड़ी।

अल्लाह वाह़िदे क़ह्हार की हज़ार हज़ार ला'नतें इन बे दीनों की शक़ावत पर, ज़ेवर दर कनार अह्ले बैत के सरों से दूपट्टे तक ....., अब भी मरदूदों के चैन न पड़ा, एक शक़ी नारी जहन्नमी पुकारा : "कोई है कि **हुसैन** के जिस्म को घोड़ों से पामाल कर दे ?"..... दस मरदूद घोड़े कुदाते दौड़े और फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की गोद के पाले, मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सीने पर खेलने वाले के तने मुबारक को सुमों से रौंदा कि सीना व पुश्ते नाज़नीन की तमाम हड्डियां रेज़ा रेज़ा हो गईं.....

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ

وَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلٰى اَعْدَائِهٖ وَاَعْدَائِهِمِ الظّٰلِمِيْنَ۔

(الکامل فی التاریخ،المعرکۃ،ج۳،ص۴۳۲)

www.dawateislami.net

शहादत के बा'द के वाक़िआत

कबड़े कुत्ते शिमर ख़बीस ने चाहा कि इमाम ज़ैनुल आबिदीन سُبْحٰنَ اللّٰه رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को भी शहीद करे, हमीद बिन मुस्लिम बोला : "क्या बच्चे भी क़त्ल किये जाएंगे ?"..... ज़ालिम बाज़ रहा।

(الکامل فی التاریخ،المعرکة،ج۳،ص۴۳۳ وغیره)

फिर सरे मुबारक इमामे मज़्लूम व शुहदाए मर्हूम खोली बिन यज़ीद और हुमैद बिन मुस्लिम के साथ इब्ने ज़ियाद के पास भेजे गए। जब कूफ़े आए मकान बन्द पाया। खोली सर मुबारक ले कर घर आया और अपनी औरत नवार से कहा : "मैं तेरे लिये वोह चीज़ लाया हूं जो उम्र भर को ग़नी कर दे।" उस ने पूछा : "क्या है ?" कहा : "हुसैन का सर" बोली : "ख़राबी हो तेरे लिये, लोग चांदी सोना ले कर आते हैं और तू रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के बेटे का सर लाया। खुदा की क़सम ! मैं तेरे साथ कभी न रहूंगी।" येह बीबी कहती है : "मैं ने रात भर देखा कि एक नूरे अ़ज़ीम सरे मुबारक से आस्मान तक बुलन्द है और सपेद परन्दे सरे अक़्दस पर क़ुरबान हो रहे हैं।" (الکامل فی التاریخ،المعرکة،ج۳،ص۴۳۴ وغیره)

जब सरे मुबारक इब्ने ज़ियाद ख़बीस के पास लाया गया, उस के घर के दरो दीवार से ख़ून बहने लगा। वोह शक़ी छड़ी से दन्दाने मुबारक छू कर बोला : "मैं ने ऐसा ख़ूबसूरत न देखा, दांत कैसे अच्छे हैं।" ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तशरीफ़ रखते थे, फ़रमाया : "अपनी छड़ी हटा, मैं ने मुद्दतों रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इन होंटों को चूमते और प्यार करते देखा है।" येह कह कर रोने लगे। वोह ख़बीस बोला : "तुम्हें रोना नसीब हो, अगर सठ न गए होते तो गर्दन मार देता।" येह उठ खड़े हुवे और उस मरदूद के दरबारियों से फ़रमाया : "तुम ने फ़ातिमा के बेटे رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को

www.dawateislami.net

क़त्ल किया और मरजाना के जने को अमीर बनाया, आज से तुम गुलाम हो, खुदा की क़सम ! तुम्हारे अच्छे अच्छे क़त्ल किये जाएंगे और जो बच रहेंगे गुलाम बना लिये जाएंगे। दूर हों वोह जो ज़िल्लत व आ़र पर राज़ी हों।" फिर फ़रमाया : "ऐ इब्ने ज़ियाद ! मैं तुझ से वोह ह़दीस ज़रूर बयान करूंगा जो तुझे ग़ैज़ो ग़ज़ब की आग में फूंक दे। मैं ने हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा। दहनी रान मुबारक पर ह़सन को बिठाया और बाईं पर **हु़सैन** को और दस्ते अक़्दस इन के सरों पर रख कर दुआ़ फ़रमाई : "इलाही मैं इन दोनों को तुझे और नेक मुसलमानों को सोंपता हूं।" ऐ इब्ने ज़ियाद ! देख नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की अमानत के साथ तू ने क्या किया ?"

उधर ज़ालिमों ने आ़बिद बीमार के गले में तौक़, हाथों में हथकड़ियां डालीं और बीबियों को ऊंटों पर सुवार करा कर, दो रोज़ बा'द करबला से कूच किया।

सुवार घोड़ों पर आ'दा, पियादा शहज़ादा
इलाही कैसा ज़माने ने इन्क़िलाब किया

जब येह मज़्लूमों का लुटा हुवा क़ाफ़िला शहीदों की लाशों पर गुज़रा कि बे गोरो कफ़न मैदान में पड़े हैं, ह़ज़रते ज़ैनब (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) बे ताबाना चिल्ला उठीं : "या रसूलुल्लाह ! हु़ज़ूर पर मलाइकए आस्मान की दुरूदें, हु़ज़ूर येह हैं **हु़सैन** ..... मैदान में लेटे.... सर से पाउं तक ख़ून में लिपटे...... तमाम बदन के जोड़ कटे और हु़ज़ूर की बेटियां क़ैदी हुईं और हु़ज़ूर के बच्चे मक़्तूल पड़े हैं जिन पर हवा ख़ाक उड़ा कर डालती है ....।"

(الکامل فی التاریخ،المعرکۃ،ج٣،ص٤٣٤)

www.dawateislami.net

जब येह मज़्लूम क़ाफ़िला इब्ने ज़ियादे बद निहाद के पास पहुंचा, उस ने आ़बिदे मज़्लूम से बहूस की, मुसकित (مُس۔کِت) जवाब पाने पर हैरान हो कर बोला : "ख़ुदा की क़सम ! तुम उन्हीं में से हो।" फिर एक शख़्स से कहा : "देख तो येह बालिग़ हैं" इस पर मुरी बिन मुआ़ज़ अह़मरी शक़ी ने सय्यिदे मज़्लूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बे सित्र कर के देखा, कहा : "हां जवान हैं।" ख़बीस बोला : "इन्हें भी क़त्ल कर।" ह़ज़रते ज़ैनब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) बे ताब हो कर मज़्लूम भतीजे के गले से लिपट गईं और फ़रमाया : "इब्ने ज़ियाद ! बस कर ! अभी हमारे ख़ून से तू सैराब न हुवा ? हम में तू ने किसे बाक़ी छोड़ा है ? मैं तुझे ख़ुदा का वासित़ा देती हूं कि ..... इस बच्चे को क़त्ल करे तो इस के साथ मुझे भी मार डाल।"

आ़बिद मज़्लूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने फ़रमाया : "ऐ इब्ने ज़ियाद ! इन बेकस औ़रतों का कौन निगहबान रहेगा ? दीनो दियानत व हुक़ूक़े रिसालत तो बरबाद गए, आख़िर तुझे इन से कुछ क़राबत भी है, इसी का ख़याल कर के इन के साथ कोई ख़ुदातरस बन्दा कर देना, जो इस्लामी पास के साथ इन्हें मदीना पहुंचा आए।" ह़ज़रते ज़ैनब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की येह ह़ालत देख कर ख़बीस बोला : "ख़ून की शिर्कत भी क्या चीज़ है मैं यक़ीन करता हूं कि येह बीबी येही चाहती है कि इस लड़के को क़त्ल करूं तो इन्हें भी क़त्ल कर दूं, ख़ैर लड़के को छोड़ दो कि अपने नामूस के साथ रहे।"

(الکامل فی التاریخ،المعرکۃ،ج۳،ص۴۳۵)

सरे अन्वर की करामात

अब येह क़ाफ़िला और शहीदों के सर शाम को रवाना किये गए। सरे मुबारक नेज़े पर था, राह में एक शख़्स कुरआने मजीद की तिलावत कर रहा था। जब इस आयत पर पहुंचा :

www.dawateislami.net

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝۹

क्या तू ने जाना कि कह्फ़ व रक़ीम वाले हमारी निशानियों से अचम्बा थे । (1)

सरे मुबारक ने फ़रमाया : "يَاتَالِي الْقُرْاٰنِ اَعْجَبُ مِنْ قِصَّةِ اَصْحَابِ الْكَهْفِ قَتْلِيْ وَحَمْلِيْ" ऐ कुरआन पढ़ने वाले ! अस्हाबे कह्फ़ के क़िस्से से ज़ियादा अ़जीब है मेरा क़त्ल करना और सर नेज़े पर लिये फिरना । ज़ालिम जहां ठहरते सरे मुबारक को नेज़े पर रख कर पहरा देते ।

(شرح الصدور، باب زيارة القبورو علم الموتىٰ...الخ،ص ۲۱۲)

एक राहिब नस्रानी ने देखा तो पूछा, बताया, कहा : "तुम बुरे लोग हो, क्या दस हज़ार अशरफ़ियां ले कर इस पर राज़ी हो सकते हो कि एक रात येह सर मेरे पास रहे ।" दुन्या के कुत्तों ने क़बूल कर लिया । राहिब ने सरे मुबारक ले कर धोया, ख़ुश्बू लगाई, रात भर अपनी रान पर रखे देखता रहा एक नूर बुलन्द होता पाया । राहिब ने वोह रात रो कर काटी । सुब्ह़ इस्लाम लाया और गिरजा और उस का माल मताअ़ छोड़ कर अह्ले बैत की ख़िदमत में उ़म्र गुज़ार दी । सुब्ह़ उन ख़बीसों ने अशरफ़ियां के तोड़े आपस में हि़स्से करने को खोले, सब अशरफ़ियां ठीकरियां हो गई थीं, उन के एक त़रफ़ लिखा था :

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ

*हरगिज़ **अल्लाह** को ग़ाफ़िल न जानियो ज़ालिमों के कामों से* (2)

और दूसरी त़रफ़ लिखा था :

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝۲۲۷

अब जाने जाते हैं ज़ुल्म करने वाले किस पलटे पर पलटा खाते हैं । (3)

---

1. ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह में और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे ।* (پ۱۵،الكهف:۹)
2. ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और हरगिज़ **अल्लाह** को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के कामों से ।* (پ۱۳،ابراهيم:۴۲)
3. ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे ।* (پ۱۹،الشعرآء:۲۲۷)

www.dawateislami.net

मज़ीद वाक़िआत

जब सरे मुबारक इमामे मज़्लूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का, उस ज़ालिमे अज़्लम यज़ीदे पलीद के पास पहुंचा, बैद से छूने लगा, नस्रानी बादशाहे रूम का सफ़ीर मौजूद था, हैरान हो कर बोला कि "हमारे यहां एक जज़ीरे के गिरजा में ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के गधे का सुम है, हम हर साल दूर दूर से उस की त़रफ़ ह़ज की त़रह़ जाते और मन्नतें मानते हैं और उस की ऐसी ता'ज़ीम करते हैं जैसे तुम अपने का'बे की, तुम ने अपने नबी के बेटे के साथ येह सुलूक किया, मैं गवाही देता हूं कि तुम लोग बात़िल पर हो।"

एक यहूदी ने कहा : "मुझ में और दावूद عَلَیْہِ السَّلَام में सत्तर पुश्त का फ़ासिला है यहूद मेरी ता'ज़ीम करते हैं और तुम ने ख़ुद अपने नबी के बेटे को क़त्ल किया ?"

फिर शाम से येह क़ाफ़िला मदीनए त़य्यिबा को रवाना किया गया, मदीना में पहुंचने की तारीख़ क़ियामत का सामान अपने साथ लाई। घर घर में कोहराम था, दरोदीवार से दिल दुखाने और कलेजे में घाव डालने वाली मुसीबत टपकी पड़ती थी।

बा'द के वाक़िआत

बा'दे शहादत आस्मान से ख़ून बरसा। नसरा अज़्दिय्या कहती हैं : "हम सुब्ह़ को उठे तो तमाम बरतन ख़ून से भरे पाए..... आस्मान इस क़दर तारीक हुवा कि दिन को सितारे नज़र आए..... मुल्के शाम में जो पथ्थर उठाते, उस के नीचे ताज़ा ख़ून पाते।"

एक रिवायत में है सात दिन आस्मान इस क़दर तारीक हुवा कि दीवारें शहाब की रंगी हुई चादरें मा'लूम होतीं..... सितारों में तलातुम नज़र आता..... एक सितारा दूसरे से टकराता।

www.dawateislami.net

अबू सईद फ़रमाते हैं : "दुन्या भर में जो पथ्थर उठाया उस के नीचे ताज़ा ख़ून पाया ..... आस्मान से ख़ून बरसा.... कपड़े फटते फट गए, मगर इस का असर न जाना था न गया ..... ख़ुरासान व शाम व कूफ़ा में घरों और दीवारों पर ख़ून ही ख़ून था।"

उ़लमा फ़रमाते हैं : "येह तेज़ सुर्ख़ी जो शफ़क़ के साथ देखी जाती है, शहादते मुबारक से पहले न थी, छे महीने तक आस्मान के किनारे सुर्ख़ रहे फिर येह सुर्ख़ी नुमूदार हुई।"

﴾क़त्ले इमामे हुसैन में शरीक बदबख़्तों का इ़ब्रत नाक अन्जाम﴿

अबुश्शैख़ ने रिवायत की : "कुछ लोग बैठे ज़िक्र कर रहे थे कि जिस ने इमामे मज़्लूम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के क़त्ल में कुछ इआ़नत की किसी न किसी बला में ज़रूर मुब्तला हुवा।" एक बूढ़े ने अपने नफ़्से नापाक की निस्बत कहा कि "इसे तो कुछ न हुवा।" चराग़ की बत्ती संभाली, आग ने उस शक़ी को लिया, आग आग चिल्लाता फ़ुरात में कूद पड़ा, मगर वोह आग ही न बुझी, यहां तक कि "आग" में पहुंचा।

मन्सूर बिन अ़म्मार ने रिवायत की : "इमाम के क़ातिल ऐसी प्यास में मुब्तला हुवे कि एक एक मशक चढ़ा जाते और प्यास कम न होती।"

सदमी कहते हैं कि "एक शख़्स ने करबला में मेरी दा'वत की, लोगों ने आपस में ज़िक्र किया कि "जिस जिस ने **हुसैन** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के ख़ून में शिर्कत की बुरी मौत मरा।" मेज़बान ने इसे झुटलाया और कहा : "वोह शख़्स भी उसी लश्कर में था।" पिछली रात चराग़ दुरुस्त करने उठा, आग ने जस्त कर के उस के बदन को लिया, ख़ुदा की क़सम ! मैं ने देखा कि उस का बदन कोइला हो गया था।

इमाम ज़ोहरी फ़रमाते हैं : "इन में कोई मारा गया, कोई अन्धा हो कर मरा, किसी का मुंह काला हो गया।"

www.dawateislami.net

इमाम वाक़िदी फ़रमाते हैं : "एक बूढ़ा वक़्ते शहादते इमाम मौजूद था शरीक न हुवा था, अन्धा हो गया। सबब पूछा, कहा : उस ने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा, आस्तीने चढ़ाए, दस्ते अक़्दस में नंगी तल्वार लिये, सामने **हुसैन** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) के दस क़ातिल ज़ब्ह किये हुवे पड़े हैं।" हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) ने उस बूढ़े पर ग़ज़ब फ़रमाया कि "तू ने मौजूद हो कर उस गुरौह को बढ़ाया?" और ख़ूने इमाम की एक सलाई आंखों में लगा दी, उठा तो अन्धा था।

सबत़ इब्नुल जौज़ी रिवायत करते हैं : जिस शख़्स ने सरे मुबारके इमामे मज़्लूम अपने घोड़े पर लटकाया था, चन्द रोज़ बा'द उस का मुंह कोइले से ज़ियादा काला हो गया। लोगों ने कहा : "तेरा चेहरा तो अ़रब भर में तरोताज़ा था येह क्या माजरा है?" कहा : "जब से वोह सर उठाया है, हर रात दो शख़्स आते और बाज़ू पकड़ कर भड़कती आग पर ले जा कर धक्का देते हैं। सर झुकता है, आग चेहरे को मारती है।" फिर निहायत बुरे ह़ालों मर गया।

एक बूढ़े ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा कि सामने एक त़श्त में ख़ून रखा है और लोग पेश किये जाते हैं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस ख़ून का धब्बा लगा देते हैं, जब उस की बारी आई, उस ने अ़र्ज़ की : "मैं तो मौजूद न था।" फ़रमाया : "दिल से तो चाहा था।" फिर अंगुश्ते मुबारक से उस की त़रफ़ इशारा किया सुब्ह़ को अन्धा उठा।

ह़ाकिम ने रिवायत की, कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से जिब्रील ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : मैं ने यह्या बिन ज़करिय्या के बदले सत्तर हज़ार क़त्ल किये और **हुसैन** के इ़वज़ में सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार क़त्ल फ़रमाऊंगा।"

(المستدرك، كتاب تواريخ المتقدمين...الخ، قصة قتل يحيٰى عليه السلام، الحديث ٤٢٠٨، ج٣، ص٤٨٥)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰه **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इब्ने ज़ियाद ख़बीस से इमाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बदला ले लिया। जब वोह मरदूद मारा गया, उस का सर मअ़ उस के साथियों के सरों के ला कर रखा गया। लोगों का हुजूम था। गुल पड़ गया : "आया-आया !" रावी कहते हैं : "मैं ने देखा कि एक सांप आ रहा है, सब सरों के बीच में होता हुवा इब्ने ज़ियाद के सरे नापाक तक पहुंचा। एक नथने में से घुस कर दूसरे नथने में से निकला और चला गया। फिर गुल पड़ा : "आया-आया !" फिर वोही सांप आया और यूं ही किया, कई बार ऐसा ही हुवा।"

मन्सूर कहते हैं : "मैं ने शाम में एक शख़्स देखा, उस का मुंह सुवर का मुंह था, सबब पूछा, कहा : वोह मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم और उन की पाक औलाद पर ला'नत किया करता।" एक रात हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा, इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस ख़बीस की शिकायत की, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस पर ला'नत फ़रमाई और मुंह पर थूक दिया, चेहरा सुवर का हो गया। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن

फ़क़त

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ *से मरवी है,* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब* صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :*

"مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اِسْمُهٗ عَلٰى بَابِ النَّارِ فِيْمَنْ يَدْخُلُهَا"

या'नी जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा।

(حلیۃ الاولیاء، الحدیث ۱۵۹۰ ج۷، ص۲۹۹، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

www.dawateislami.net

आ़शूरा के फ़ज़ाइल

(शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** *دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की माया नाज़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल से माख़ूज़)*

"या शहीदे करबला हो दूर हर रंजो बला"

के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरा की ख़ुसूसियात

﴾1﴿ 10 मुह़र्रमुल ह़राम आ़शूरा के रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तौबा क़बूल की गई । ﴾2﴿ इसी दिन इन्हें पैदा किया गया । ﴾3﴿ इसी दिन इन्हें जन्नत में दाख़िल किया गया । ﴾4﴿ इसी दिन अ़र्श ﴾5﴿ कुरसी ﴾6﴿ आस्मान ﴾7﴿ ज़मीन ﴾8﴿ सूरज ﴾9﴿ चांद ﴾10﴿ सितारे और ﴾11﴿ जन्नत पैदा किये गए । ﴾12﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुवे ﴾13﴿ इसी दिन इन्हें आग से नजात मिली । ﴾14﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और आप की उम्मत को नजात मिली और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम समेत ग़र्क़ हुवा ﴾15﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा किये गए ﴾16﴿ इसी दिन इन्हें आस्मानों की त़रफ़ उठाया गया ﴾17﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की किश्ती कोहे जूदी पर ठहरी ﴾18﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मुल्के अ़ज़ीम अ़त़ा किया गया ﴾19﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए ﴾20﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीनाई का ज़ौ'फ़ दूर हुवा ﴾21﴿ इसी दिन

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام गहरे कुंवें से निकाले गए ﴿22﴾ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तक्लीफ़ रफ़्अ़ की गई ﴿23﴾ आस्मान से ज़मीन पर सब से पहली बारिश इसी दिन नाज़िल हुई और ﴿24﴾ इसी दिन का रोज़ा उम्मतों में मश्हूर था यहां तक कि येह भी कहा गया कि इस दिन का रोज़ा माहे रमज़ानुल मुबारक से पहले फ़र्ज़ था फिर मन्सूख़ कर दिया गया (मुकाशफ़तुल कुलूब, स. 311) ﴿25﴾ इमामुल हुमाम, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे तिश्ना काम सय्यिदुना इमामे **हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ब मअ़ शहज़ादगान व रुफ़क़ा तीन दिन भूका रखने के बा'द इसी **आशूरा** के रोज़ दश्ते करबला में इन्तिहाई सफ़्फ़ाकी के साथ शहीद किया गया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"या हुसैन" के छे हुरूफ़ की निस्बत से मुह़र्रमुल ह़राम और आ़शूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल

मदीना 1 : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रमज़ान के बा'द मुह़र्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ सलातुल लैल (या'नी रात के नवाफ़िल) है।" (صحیح مسلم،ص۸۹۱،حدیث۱۱۶۳)

मदीना 2 : त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "मुह़र्रम के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है।"

(طَبرانی فی الصغیر،ج۲،ص۸۷،حدیث۱۵۸۰)

www.dawateislami.net

यौमे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام

मदीना 3 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का इरशादे गिरामी है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब मदीनतुल मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में तशरीफ़ लाए, यहूद को आ़शूरा के दिन रोज़ादार पाया तो इरशाद फ़रमाया : "येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ?" अ़र्ज़ की, येह अ़ज़मत वाला दिन है कि इस में मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को अल्लाह तआ़ला ने नजात दी और फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को डबो दिया। लिहाज़ा मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बत़ौरे शुक्राना इस दिन का रोज़ा रखा, तो हम भी रोज़ा रखते हैं। इरशाद फ़रमाया : "मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुवाफ़क़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़ियादा ह़क़दार और ज़ियादा क़रीब हैं।" तो सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया। (صحیح البخاری،ج۱،ص٦٥٦،حدیث٢٠٠٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि जिस रोज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई ख़ास ने'मत अ़त़ा फ़रमाए उस की यादगार क़ाइम करना दुरुस्त व मह़बूब है कि इस त़रह़ उस ने'मते उ़ज़्मा की याद ताज़ा होगी और उस का शुक्र अदा करने का सबब भी होगा। ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम में इरशाद फ़रमाया :

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ (پ۱۳،ابراہیم:۵)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें अल्लाह के दिन याद दिला।*

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं कि اَيّٰمِ اللّٰه से वोह दिन मुराद हैं जिन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर इन्आ़म किये जैसे कि बनी इसराईल के लिये मन्न व सलवा उतारने का दिन, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये दरया में रास्ता बनाने का दिन। इन अय्याम में सब से बड़ी ने'मत के दिन सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत व मे'राज के दिन हैं इन की याद क़ाइम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है। (مُلَخَّصاً خزائن العرفان، ص۴۰۹)

ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और दा'वते इस्लामी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम मुसलमानों के लिये सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरा, शहनशाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के यौमे विलादत से बढ़ कर कौन सा दिन "यौमे इन्आ़म" होगा ? तमाम ने'मतें इन्हीं के तुफ़ैल तो हैं और येह दिन ईद से भी बेहतर कि इन्हीं के सदक़े में ईद भी ईद हुई। इसी वज्ह से पीर शरीफ़ के दिन रोज़ा रखने का सबब इरशाद फ़रमाया : "فِيْهِ وُلِدْتُّ" या'नी इस दिन मेरी विलादत हुई।

(صحیح مسلم، ص۵۹۱، حدیث۱۱۶۲)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से दुन्या के बे शुमार मुमालिक के ला ता'दाद मक़ामात पर हर साल ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم शानदार त़रीक़े पर मनाई जाती है। रबीउ़न्नूर शरीफ़ की 12 वीं शब को अ़ज़ीमुश्शान इजतिमाए़ मीलाद का इनइ़क़ाद होता है और बिल ख़ुसूस मेरे हुस्ने ज़न के मुत़ाबिक़ इस रात दुन्या का सब से बड़ा इजतिमाए़ मीलाद बाबुल मदीना कराची में मुन्अ़क़िद

www.dawateislami.net

होता है। और ईद के रोज़ मरहबा या मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की धूमें मचाते हुवे बे शुमार जुलूसे मीलाद निकाले जाते हैं जिन में लाखों आ़शिक़ाने रसूल शरीक होते हैं।

ईदे मिलादुन्नबी तो ईदों की भी ईद है
बिल यक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

आ़शूरे का रोज़ा

मदीना 4 : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने सुल्त़ाने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी दिन के रोज़े को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्तजू फ़रमाते न देखा मगर येह कि आ़शूरे का दिन और येह कि रमज़ान का महीना।"

(صحیح البخاری، ج۱، ص۶۵۷، حدیث۲۰۰۶)

यहूदियों की मुख़ालफ़त करो

मदीना 5 : नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहनशाहे नबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुख़ालफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो।"

(مسند امام احمد، ج۱، ص۵۱۸، حدیث۲۱۵۴)

आ़शूरे का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं या ग्यारहवीं मुह़र्रमुल ह़राम का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

मदीना 6 : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मुझे **अल्लाह** पर गुमान है कि आ़शूरा का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है।"

(صحیح مسلم، ص۵۹۰، حدیث۱۱۶۲)

www.dawateislami.net

सारा साल आंखें दुखें न बीमार हो

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "मुह़र्रम की नवीं और दसवीं को रोज़ा रखे तो बहुत सवाब पाएगा। बाल बच्चों के लिये दसवीं मुह़र्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में बरकत रहेगी। बेहतर है कि खिचड़ा पका कर ह़ज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना इमामे **हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की फ़ातिह़ा करे बहुत मुजर्रब (या'नी मुअस्सिर व आज़्मूदा) है। इसी तारीख़ या'नी 10 मुह़र्रमुल ह़राम को ग़ुस्ल करे तो तमाम साल اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बीमारियों से अम्न में रहेगा क्यूंकि इस दिन आबे ज़म ज़म तमाम पानियों में पहुंचता है।" (تفسیر روح البیان،ج٤،ص١٤٢،کوئٹہ۔اسلامی زندگی،ص٩٣)

सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स यौमे आ़शूरा इस्मिद सुर्मा आंखों में लगाए तो उस की आंखें कभी भी न दुखेंगी।

(شعب الایمان،الحدیث٣٧٩٧،ج٣،ص٣٦٧۔فیضان سنت،ص١٣٤٧تا١٣٥٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यकुम मुह़र्रमुल ह़राम को بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ 130 बार लिख कर (या लिखवा कर) जो कोई अपने पास रखे (या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े, रेगज़ीन या चमड़े में सिलवा कर पहन ले) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उ़म्र भर उस को या उस के घर में किसी को कोई बुराई न पहुंचे। (شمس المعارف مترجم،ص٧٣۔فیضان سنت،ص١٣٦)

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

نمبر شمار	کتاب کا نام	مطبوعہ
1	تفسیر خزائن العرفان	ضیاء القرآن باب المدینہ
2	صحیح البخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
3	سنن الترمذی	دار الفکر بیروت
4	المعجم الکبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت
5	مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت
6	حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیۃ بیروت
7	الترغیب و الترھیب	دارالفکر بیروت
8	منبھات ابن حجر عسقلانی	نوری کتب خانہ مرکز الاولیاء
9	مراۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح	ضیاء القرآن باب المدینہ
10	ملفوظات اعلی حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
11	الفتاوٰی المصطفویۃ	شبیر برادرز لاھور
12	تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیۃ بیروت
13	الکامل فی التاریخ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
14	الطبقات الکبریٰ	دارالکتب العلمیۃبیروت
15	مکاشفۃ القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
16	شرح الصدور	برکات رضا ھند
17	کشف المحجوب(فارسی)	مرکز الاولیاء (لاھور)
18	مطالع المسرات	نوریہ رضویہ سردار آباد(فیصل آباد)
19	الرسالۃ القشیریۃ	دارالکتب العلمیۃبیروت
20	گلستانِ سعدی	

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुबो रसाइल शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत उर्दू कुतुब

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهُ ذَيْلُ الْمُدَّعَاءِ لِاَحْسَنِ الْوِعَاء) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ ब मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِشَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْإِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....औलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْإِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

17....ह़दाइक़े बख़्शिश (कुल सफ़ह़ात : 446)

18....बयाज़े पाक हुज्जतुल इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 37)

19....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान (जिल्द अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 524)

www.dawateislami.net

20....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान (जिल्द दुवुम) (कुल सफ़्हात : 495)

अ़रबी कुतुब

21.....جَدُّ الْمُمْتَار عَلٰى رَدِّالْمُحْتَار (सात जिल्दें) (कुल सफ़्हात : 4000)

22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِى عَلٰى صَحِيْحِ الْبُخَارِى (कुल सफ़्हात : 458)

23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़्हात : 74)

24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़्हात : 62)

25... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़्हात : 93)

26..... اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِى (कुल सफ़्हात : 46)

27..... تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़्हात : 77)

28..... اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़्हात : 70)

29..... اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़्हात : 60)

शो'बए तराजिमे कुतुब 《अ़रबी से उर्दू तराजुम》

01.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़्हात : 896)

02.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) दूसरी जिल्द (कुल सफ़्हात : 625)

03.....मदनी आक़ा के रौशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرِفِىْ حُكْمِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاهِر) (कुल सफ़्हात : 112)

04.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِى الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़्हात : 28)

05.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़्हात : 142)

06.....नसीहतों के मदनी फूल ब वसीलए अहादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِى الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़्हात : 54)

07.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِىْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़्हात : 743)

08.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَا اِمَامِ اَعْظَمعَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़्हात : 46)

09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 853)

10....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْىُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़्हात : 98)

www.dawateislami.net

11.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّورعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़्हात : 144)

12.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़्हात : 85)

13.....राहे इल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़्हात : 102)

14....हिकायतें और नसीहतें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़्हात : 649)

15.....इह्याउल उ़लूम का खुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़्हात : 641)

16....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़्हात : 122)

17....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़्हात : 122)

18....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़्हात : 102)

19....आंसूओं का दरया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़्हात : 300)

20....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِى الدِّيْن) (कुल सफ़्हात : 63)

21....शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن) (कुल सफ़्हात : 36)

22....बेटे को नसीहत (اَيُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़्हात : 64)

23.....इस्लाहे आ'माल जिल्द अव्वल (اَلْحَدِيْقَةُالنَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة) (कुल सफ़्हात : 866)

24.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر)
(कुल सफ़्हात : 1012)

25....आशिक़ाने हदीस की हिकायात (اَلرِّحْلَة فِى طَلَبِ الْحَدِيْث) (कुल सफ़्हात : 105)

26....इह्याउल उ़लूम जिल्द (अव्वल) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1124)

27....इह्याउल उ़लूम जिल्द (दुवुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1400)

28....इह्याउल उ़लूम जिल्द (सिवुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 1286)

28....इह्याउल उ़लूम जिल्द (चहारुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 912)

28....इह्याउल उ़लूम जिल्द (पंजुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़्हात : 818)

29.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम हिस्साए अव्वल) (कुल सफ़्हात : 412)

www.dawateislami.net

30.....उ़यूनुल हिकायात (मुतर्जम, हिस्सए दुवुम)(कुल सफ़हात : 413)

31.... दा'वते फ़िक्र (اَلدَّعْوَۃ اِلَی الْفِکْر) (कुल सफ़हात : 148)

32..... क़ूतुल क़ुलूब (कुल सफ़हात : 826)

शो'बए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشیةضیاء الاصباح (कुल सफ़हात : 241)

02....الاربعین النوویة فی الأحادیث النبویة (कुल सफ़हात : 155)

03....اتقان الفراسة شرح دیوان الحماسه (कुल सफ़हात : 325)

04....اصول الشاشی مع احسن الحواشی (कुल सफ़हात : 299)

05....نورالایضاح مع حاشیةالنوروالضیاء (कुल सफ़हात : 392)

06....شرح العقائدمع حاشیةجمع الفرائد (कुल सफ़हात : 384)

07....الفرح الکامل علی شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 158)

08....عنایة النحو فی شرح هدایة النحو (कुल सफ़हात : 280)

09....صرف بهائی مع حاشیة صرف بنائی (कुल सफ़हात : 55)

10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़हात : 241)

11....مقدمةالشیخ مع التحفةالمرضیة (कुल सफ़हात : 119)

12....نزهة النظر شرح نخبة الفکر (कुल सफ़हात : 175)

13....نحو میرمع حاشیة نحو منیر (कुल सफ़हात : 203)

14....تلخیص اصول الشاشی (कुल सफ़हात : 144)

15....نصاب النحو (कुल सफ़हात : 288)

16....نصاب اصولِ حدیث (कुल सफ़हात : 95)

17....نصاب التجوید (कुल सफ़हात : 79)

18....المحادثة العربیة (कुल सफ़हात : 101)

www.dawateislami.net

19....تعریفاتِ نحویة (कुल सफ़हात : 45)

20....خاصیات ابواب (कुल सफ़हात : 141)

21....شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 44)

22....نصاب الصرف (कुल सफ़हात : 343)

23....نصاب المنطق (कुल सफ़हात : 168)

24....انوار الحدیث (कुल सफ़हात : 466)

25....نصاب الادب (कुल सफ़हात : 184)

26....ख़ुलफ़ाए राशिदीन (कुल सफ़हात : 341)

27....قصیدہ بردہ مع شرح خرپوتی (कुल सफ़हात : 317)

28.... کافیہ مع شرح ناجیہ (कुल सफ़हात : 252)

29....अल हक़्क़ुल मुबीन (कुल सफ़हात : 128)

30....تفسیر الجلالین مع حاشیۃانوار الحرمین (कुल सफ़हात : 364)

31.... فیض الادب (कुल सफ़हात : 228)

32.... منتخب الابواب من احیاء علوم الدین (अ़रबी) (कुल सफ़हात : 173)

शो'बए तख़्रीज

01....सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का इ़श्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 ता 6) (कुल सफ़हात : 1360)

03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़हात : 1304)

04....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़हात : 1332)

05....बहारे शरीअ़त जिल्द (सोलहवां हिस्सा) (कुल सफ़हात : 312)

06....उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ (कुल सफ़हात : 59)

07....अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422)

www.dawateislami.net

08....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़ह़ात : 470)

09....फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़ह़ात : 20)

10....अच्छे माह़ोल की बरकतें (कुल सफ़ह़ात : 56)

11....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 244)

12....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

13....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

14....इल्मुल कुरआन (कुल सफ़ह़ात : 244)

15....सवानह़े करबला (कुल सफ़ह़ात : 192)

16....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़ह़ात : 112)

17....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

18....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़ह़ात : 246)

19....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

20....आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

21 ता 27....फ़तावा अह्ले सुन्नत (सात ह़िस्से)

28.... ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

29....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़ह़ात : 249)

30....जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़ह़ात : 207)

31....करामाते सह़ाबा (कुल सफ़ह़ात : 346)

32....अख़्लाकुस्सालिह़ीन (कुल सफ़ह़ात : 78)

33....सीरते मुस्त़फ़ा (कुल सफ़ह़ात : 875)

34....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़ह़ात : 133)

35....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़ह़ात : 49)

36....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़ह़ात : 16)

www.dawateislami.net

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा﴿

01....ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 56)

02....ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 72)

03....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 89)

04....ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 60)

05....ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 132)

06....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़ह़ात : 720)

07....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिल्द अव्वल (कुल सफ़ह़ात : 864)

08....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिल्द दुवुम (कुल सफ़ह़ात : 855)

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात﴿

01....शाने ख़ातूने जन्नत (कुल सफ़ह़ात : 501)

02....फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा (कुल सफ़ह़ात : 608)

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

01....ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात : 106)

02....तकब्बुर (कुल सफ़ह़ात : 97)

03....फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 87)

04....बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

05....क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़ह़ात : 115)

06....नूर का खिलोना (कुल सफ़ह़ात : 32)

07....आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 49)

08.... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

09....इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

www.dawateislami.net

10....रियाकारी (कुल सफ़हात : 170)

11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 262)

12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़हात : 48)

13....तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़हात : 124)

14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150)

15....अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)

16....तर्बिय्यते औलाद (कुल सफ़हात : 187)

17....कामयाब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़हात : 63)

18....टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)

19....त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)

20....मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)

21....फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़हात : 120)

22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़हात : 215)

23....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)

24....ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़हात : 160)

25....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)

26....इनफ़िरादी कोशिश(कुल सफ़हात : 200)

27....आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)

28....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े (कुल सफ़हात : 696)

29....फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)

30....ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़हात : 408)

www.dawateislami.net

31....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)

32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)

33....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)

34....ह़ज व उ़मरह का मुख़्तसर त़रीक़ा (कुल सफ़हात : 48)

35....जल्दबाज़ी के नुक़्सानात (कुल सफ़हात : 168)

36....क़सीदा बुर्दा से रूह़ानी इ़लाज (कुल सफ़हात : 22)

37....तज़्किरए सदरुल अफ़ाज़िल (कुल सफ़हात : 25)

38....सुन्नतें और आदाब (कुल सफ़हात : 125)

39....बुग़्ज़ो कीना (कुल सफ़हात : 83)

40....मज़ाराते औलिया की ह़िकायात (कुल सफ़हात : 48)

41....फ़ैज़ाने इस्लाम कोर्स ह़िस्सए अव्वल (कुल सफ़हात : 79)

42....फ़ैज़ाने इस्लाम कोर्स ह़िस्सए दुवुम (कुल सफ़हात : 102)

43....मह़बूबे अ़त्तार की 122 ह़िकायात (कुल सफ़हात : 208)

44....बद शुगूनी (कुल सफ़हात : 128)

45....फ़ैज़ाने दाता गंज बख़्श (कुल सफ़हात : 20)

46....फ़ैज़ाने पीर मह़र अ़ली शाह (कुल सफ़हात : 33)

47....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात (कुल सफ़हात : 590)

48....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 1 (साबेक़ा नाम : मदनी निसाब बराए मदनी क़ाइ़दा) (कुल सफ़हात : 60)

49....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 2 (साबेक़ा नाम : मदनी निसाब बराए नाज़िरा) (कुल सफ़हात : 104)

50....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 3 (कुल सफ़हात : 352)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

مکتبۃ المدینہ

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabaahmedabad@gmail.com